रावायण

लीला ऑफ रावण

सिद्धार्थ अरोड़ा 'सहर' - मनीष खण्डेलवाल

RAVAAYAN / रावायण (LEELA OF RAAVAN) –

सिद्धार्थ अरोड़ा ‘सहर’

मनीष खण्डेलवाल

Copyright © 2018 Siddharth Arora ‘Sahar’, Manish Khandelwal
All Rights reserved.

INDEX

1. अध्याय एक – अफेयर काण्ड
2. अध्याय दो – बियर काण्ड
3. अध्याय तीन – छिछोर काण्ड
4. अध्याय चार – घुसपैठ
5. अध्याय पांच – मिलन काण्ड
6. अध्याय छः – स्यूसाइड काण्ड
7. अध्याय सात – किडनैप काण्ड
8. अध्याय आठ – तुड़ाई काण्ड
9. अध्याय नौ – रेस्क्यू काण्ड
10. अध्याय दस – फ़ाइनल काण्ड
11. ये कहानी कैसे बनी!

"हम शुक्रगुज़ार हैं"

इस लैटर में एक लम्बी फेरहिस्त होनी चाहिए, पर वो मुमकिन नहीं क्योंकि आपको ‘रावायण’ भी पढ़नी है हमें सबके नाम याद भी नहीं!

हम शुक्रगुज़ार हैं शुभम श्रीवास्तव के, जिनकी रॉक पिजन पब्लिकेशन ने ‘रावायण’ को कागज़ पर लाने का साहस किया।

हम शुक्रगुज़ार हैं सनी भानुशाली और उनकी टीम alientatoo.com के जिनकी बेहद रेलेवेंट फोटो टैटू फ़ोटो आज इस किताब का कवर पेज है| इनकी वेबसाइट पर विचरकर इनके कला का नमूना ज़रूर देखें|

हम शुक्रगुज़ार हैं बॉबी सिंग के जिन्होंने इस टैटू की फ़ोटो को बेहतरीन कवर पेज में तब्दील किया|

हम शुक्रगुज़ार है सुरेन्द्र मोहन पाठक साहब के, क्यों हैं ये कहानी के अंत के बाद पता चलेगा|

हम शुक्रगुज़ार हैं हर उस शख्स के जिसने E-book पढ़ने के बाद पेपर बैक में भी रावायण पढ़ने की इच्छा जताई व हमें हौसला दिया। (हालाँकि ये Ebook ही है पर पेपर बैक भी उपलब्ध है)

हम शुक्रगुज़ार है..... अच्छा ज़्यादा हो रहा है? ठीक है हम हर उस शख्स के शुक्रगुज़ार हैं जिसकी वजह से ‘आज’ रावायण आपके हाथों में आ पहुँची है!

इस हम के ‘हम’ कौन हैं ये आपको पूरी कहानी पढ़ने के बाद, लेखक परिचय पढ़ने पर पता चलेगा।

हम ये किताब समर्पित करते हैं –

डायरेक्ट लंकापति रावण को, देशभर में फैली रामलीला कमेटियों को और हर उस शख्स को
जिसे अपने नाम की वजह से अपने कर्मों को जस्टिफाई करना पड़ा।

अब मैं जो कहानी सुनाने जा रहा हूँ, उसे सुनने और समझने के लिए आपको चुप रहना है, बीच में टोकना नही है और कहीं आना-जाना तो बिलकुल भी नहीं है। बस फोकस रखना है मेरे शब्दों पर क्योंकि, आपको बहुत मज़ा आने वाला है।

बात बहुत पुरानी है, मैं उस वक़्त मैं छोटा था, इतना छोटा था कि कतई नहीं समझ पा रहा था कि उस घर से जो चिल्लाने की आवाज़े आ रहीं हैं वो क्यों आ रही हैं। “चुपचाप बैठ जा, कहीं जाने की ज़रुरत नहीं है” कोई आदमी था जो बहुत ज़ोर से बोल रहा था।
“मुझे तुम जैसे के साथ एक पल नहीं रहना, इस घर में मेरा दम घुटता है, हटो सामने से” कोई औरत थी बेतहाशा गुस्से से चिल्ला रही थी।

“मैंने कहा न कोई कहीं नहीं जा रहा.... प्रिया का हाथ छोड़, छोड़ उसका हाथ” कुछ बर्तन गिरने की आवाज़ आई! वो बर्तन गिर नहीं रहे थे, शायद फेंके जा रहे थे! तभी एक तमाचे की आवाज़ आई, फिर वो बच्ची रोने लगी!

फिर एक और तमाचे की आवाज़ आई और भयंकर रोना धोना शुरू हो गया! मैं घबरा गया| मैं इतना डर गया कि दौड़ता हुआ आपने घर आया और माँ के सीने से लिपट के रोने लगा। उस दिन सारा मोहल्ला तमाशा देख रहा था| पर इससे आगे मुझसे न देखा गया....

खैर... कहानी आज से, मेरे घर से शुरू करते है.....!

अध्याय 1 – अफेयर काण्ड

मेरा घर कुछ मामलों में बहुत रोचक था। कब कौन किस दिन आ धमके कुछ पता नहीं चलता था, अमूमन जब किसी घर की डोरबैल बजती होगी तो हर किसी के दिमाग में यही विचार आता होगा कि दरवाजे पर कौन होगा? पर मेरे घर में सभी के दिमाग में ये विचार आता है कि दरवाज़ा कौन खोलेगा? एक दिन अचानक ऐसे ही बैल बजी, मैंने मन-मसोसकर दरवाज़ा खोला तो सामने मेरी मासी और उनके बच्चे पूरी तैयारी के साथ आ धमके थे। मैं बचपन से सोचता आ रहा हूँ कि हमारे घर को धर्मशाला क्यों नहीं कहते थे?

खैर,

इस धर्मशाला में मेरे सिवा मेरे पापा, मेरी छोटी बहन और मेरे तीन और भाई भी रहते थे। इसके बाद घर की डॉन मेरी माँ, उसके बाद रेगुलर बेसिस पर आने वाले मेहमान! कभी भी किसी के भी आ जाने से हमारा परिवार किसी छोटे-मोटे गाँव का रूप ले लेता था। हर तरफ चटर- पटर...

मासी और उनके बच्चे रामलीला देखने आए थे, उनके लिए दिल्ली रामलीला देखने के लिए सबसे अच्छा शहर था, क्योंकि एक ही खर्चे में दो-दो रामलीला देखने को मिल जाती थी।
एक दिल्ली के रामलीला मैदान वाली और दूसरी हमारे घर की। ऊपर से यहां उनकी बहन की कृपा से खाना-पीना, रहना; सब फ्री में हो जाता था।

“अरे मेरा बच्चा, कितना पतला हो गया है रे तू?” मेरी मासी ने तीन सौ साल से चलता आ रहा घिसा-पिटा डायलॉग मारा।

“हाँ मासी बहुत पतला हो गया हूँ, वैसे आप क्या लाये हो खाने को?”

“खाने को!?” मासी उलझीं, फिर सकपकाई।

“अरे आप ही बोल रही हो मैं पतला हो रहा हूँ न, कुछ खाने पीने के लिए ले आते तो मेरी सेहत बनती।”

“अरे! वो तो मैं... क्यों तेरी माँ तुझे खाने को नही दे रही?” मासी अजीब-सा चेहरा बनाकर झुंझलाते हुए बोली।

“माँ का खाना पूरा नहीं पड़ता न, फिर माँ को पतला भी नहीं लगता मैं”

“अरे कुक्कू! इतना पतला भी नहीं है अपना जीतू। ठीक ही लग रहा है, तुम्हें तो बस बोलने का बहाना चाहिए।” मौसा बनावटी गुस्सा दिखाने लगे।

मेरा उनसे भी नोक-झोंक का मन था पर वहां माँ आ गयी “आ कुक्कू, कैसी है तू?”

सवाल पूछने की देर थी कि उनकी नज़र मुझपर भी पड़ी, नज़र पड़ने की देर थी कि उन्होंने मुझे टोक दिया “अरे जीतू, तू क्या खड़ा-खड़ा मुंह ताक रहा है? जा हिमानी की मदद कर जाकर, नाश्ता वगैरह लाने में।”

हिमानी मेरे लिए तो मेरी छोटी बहन सही पर मैं उसके लिए हेल्पर बटलर और न जानें क्या-क्या...

“छुटकू क्यों नही है उसके साथ?” मैंने माँ से धीरे से पूछा।

“तुझसे जितना कहा जा रहा है तू उतना कर” मां ने फुल वॉल्यूम में जवाब दिया। मासी के बच्चे हंसने लगे।

मैं मुंह लटकाता रसोई पहुंचा।

“कहाँ था रे तू, तुझे पता नहीं चला कि राक्षसों की सेना आने वाली है? चल कोल्ड ड्रिंक निकाल गिलास में”

“मैंने ही दरवाज़ा खोला है यार” मैंने गिलास निकालते हुए फिर पूछा “छुटकू क्यों नहीं मदद कराता? अजय और रामू भैया क्यों नहीं मदद कराते? क्योंकि माँ के लाडले है और पढ़ाई में अच्छे हैं बस इसलिए?”

“गलत, पढ़ाई में अच्छे हैं इसलिए माँ के लाडले हैं, पर तू न अपना काम कर।” मुझे हिमानी से तीखा-सा जवाब मिला

अगले ही पल मैं मुंह बनाकर ट्रे लिए ‘मेहमानों’ की सेवा में लग गया। जब फ्री हुआ तो पता चला रामलीला के साथ-साथ रामू भैया की शादी की भी बात चल रही थी।

उनकी उम्र 27 थी। इसके बाद अजय कमीना 25 का, मैं 23 का अभी हुआ-हुआ था और मेरी मालकिन सी बहन हिमानी 21 साल की हुई है। हिमानी मुझसे छोटी है पर क्योंकि वो ही अकेली है घर में जिसे मैं गंदा जवाब नहीं देता इसलिए वो मेरी बॉस बनी रहती है। हम भाई-बहनों में सबसे छोटा मेरा ‘छूटकू’ है जो ग्यारह साल का होते हुए भी मेरा बाप बनने की कोशिश करता रहता है, पर सारे घर की आँखों का तारा है। वो तारा है जो मेरी आँखों में मोतियाबिंद करने पर तुला है। बाकि मेरी इस घर में भले ही कोई कद्र न हो, मैंने भी आज तक किसी की ‘हाँ में हाँ’ मिलाई हो, ऐसा मुझे याद नहीं। इसलिए मुझे किसी भी तरह की बेइज़्ज़ति का अफ़सोस नही होता।

रामू भैया भले ही घमंडी हैं लेकिन वो मोहल्ले भर के टॉप रोल मॉडल हैं, उस कम्पनी में जॉब करते है जिसके लिए लौंडे ‘काश!’ कहते मिलते हैं; लेकिन इंसान बुरे नहीं हैं। मुझसे कम ही बात करते है, पर जितनी भी करते हैं, ठीक से करते हैं।

मैं उनकी शादी की बात सुनकर अच्छा महसूस कर ही रहा था कि.. “अरे जीतू, तू यहाँ क्यों खड़ा है” मासी की ‘बुरी’ नज़र मुझ पर पड़ी।

मैं तुरंत खिसक के एक फीट आगे खड़ा हो गया।

“अब आगे क्यों आ गया?”

“आप ही ने तो कहा कि ‘वहाँ’ क्यों खड़ा है तो मैं ‘यहाँ’ आकर खड़ा हो गया।”

“अरे इसका मतलब है कि तू इस कमरे में क्या कर रहा है?” अबकी बार मौसा बोले।

“मैं इस कमरे में पेप्सी सर्व कर रहा हूँ, अरे मौसा जी ये कमरा भी मेरे पापा की प्रॉपर्टी का ही हिस्सा है, मैं इसमें खड़ा हूँ तो कौन-सी आफत है?”

“देख रही है सुमी, ये लड़का कितनी बहस करता है। बदतमीजी से जवाब दे रहा है” मासी ने हमेशा की तरह आग लगाई।

“अरे इसको आदत है ऐसे ही बात करने की” माँ ने लगाईं तीली पर फूंक मार दी।

“मासी जी, छोड़िए न” रामू भैया बीच में बोल पड़े “आ जीतू तू इधर आकर बैठ जा” उन्होंने मुझे अपने पास के सोफे की तरफ इशारा करके बुलाया।

“जा जीतू तू बाहर जाकर बैठ, हम अभी कुछ सीरियस बात कर रहें है।” माँ ने रामू भैया की बात को इग्नोर कर दिया।

मेरा मन था आगे बहस करने का पर जब हिमानी इशारा समझकर बाहर जाने लगी तो मैं भी उसके पीछे लग गया। इतने में आ गया अज्जे यानी मुझसे बड़ा और रामू भैया से छोटा ‘अजय’।

“माँ जब मुझे अंदर आने की परमिशन नहीं है तो इस अजय को अंदर आने की आज्ञा क्यों?” मैंने भौवें सिकोड़कर कहा।

“तुझे कितनी बार बोला है इसे अजय नही भैया बोला कर” माँ ने फिर आवाज़ ऊँची कर ली।

मेरी हट गयी, मैं सब कुछ बर्दाश्त कर सकता था पर अजय से खुद को कमतर कभी नहीं “मेरा पायजामा बोले इसको भैया, ये है ही कितना बड़ा मुझसे?”

“उतना ही जितना रामू इससे बड़ा है, पर फिर भी ये उसे रामू भैया ही बोलता है कि नहीं?”

“माँ अगर यही लॉजिक है तो हिमानी मुझे भैया क्यों नही बोलती? और हिमानी को छोड़ो, छुटकू तक मुझे नाम से बुलाता है, क्यों?”

“अपनी-अपनी इज्ज़त होती है बच्चे, किसी की कम किसी की ज्यादा, कुछ की नहीं भी होती” अजय धीरे से बोला। पर मैंने सुन लिया। वो मंद-मंद मुस्कुराया।

“बिल्कुल सही अज्जे बेटा, इसी तरह तेरी इज्ज़त नहीं है और इसलिए मैं तुझे तू ही बोलूँगा” मेरी चिढ़ बाहर निकली।

“अरे जीतू चल न क्यों बहस कर रहा है?” हिमानी ने मुझे टोका।

मैंने तबियत से उसे घूरा और धीरे-धीरे दरवाज़े की तरफ बढ़ने लगा कि मौसी बोल पड़ी “अरे सुमी तूने इस लड़के को ज़रा-सी तमीज़ तो सिखाई होती”

मुझे मौसी से इसी कमेंट की उम्मीद थी।

पर देखना ये था कि माँ क्या जवाब देती है। मैं कमरे से बाहर निकला पर दीवार के पास ठिठक गया।

माँ की धीमी आवाज़ आई “अरे कुक्कू, इसकी परवरिश ही ददिहाल के हाथों कराकर पछता रहीं हूँ, गंदे लोगों के बीच रहा है न इसलिए जुबान गंदी हो गयी है।”

“सुन लिया? मिल गयी ख़ुशी? अब चलें?” हिमानी ने मेरा चेहरा पढ़ लिया।

शाम के वक़्त तक मेरा मन उदासी से भर गया। प्लूटो के भौंकने से लगा कि पापा आज घर जल्दी आ गयें है। वो खांटी बिजनेस मैन हैं। कितनी भी आफत आ जाये कभी अपना काम नहीं छोड़ते। बस उस आफत का नाम कुक्कू मासी न हो। इनके आने पर ही पापा वक्त से पहले बरस पड़तें हैं। मेरा दिल चाहा कि मैं पापा को बता दूं कि मम्मी हमारे ददिहाल के बारे में क्या कमेंट करके हटीं हैं। पर लगता था जैसे सारा घर सो रहा हो।

मैं हिमानी के कमरे में गया – वो नॉवल पढ़ रही थी।

“हिम्मी, क्या पढ़ रही है?”

“जीतू यार, दरवाज़ा बंद कर दे”

मैं खुश हुआ कि ये शायद मुझसे बात करना चाहती है। दरवाज़ा बंद करने के लिए मुड़ा ही था कि वो बोली “बाहर से, बाहर से बंद कर दे और फूट जा यहाँ से।”

“यार हिमानी तेरी दिक्कत क्या है? मैं हमेशा तुझसे ठीक से बात करता हूँ और तू मुझे प्लूटो से भी....”

उसने मुझे घूरकर देखा। मेरे शब्द मेरे मुंह में ही रह गये। प्लूटो हमारा दुम हिलाऊ पशु है, एक ये ही है तो मुझे आता देखकर खुश, और जाता देखकर दुखी होता है।

“दरवाज़ा बंद कर और जा मेरे भाई, पका मत” हिमानी बोली।

“अच्छा पापा कहाँ है ये तो बता दे?”

“अपने कमरे में होंगे” अनमना-सा जवाब मिला।

“नहीं है वहां”

“तो उनका मोबाइल बजा, मेरे कान मत बजा, अब दफा हो यहाँ से।”

मैंने आहत नज़र से उसको देखा और पिटा मुंह लिए दफा हो गया। मेरा फ़ोन मेरे कमरे में पड़ा था, अब कौन वापस तीसरे माले पर जाता... मैंने सोचा क्यों न मासी से ही मजे लिए जाएँ, मैं पहुँच गया गेस्ट रूम में।

दरवाज़ा अंदर से बंद था।

मुझे खुराफात सूझी।

दरवाज़े के साथ ही एक गमला पड़ा हुआ था। मैंने उसपर पैर रखा और दरवाजे का सहारा लेकर उसकी कुण्डी पर चढ़ गया। रौशनदान खुला था।

मैंने भीतर झाँका तो, मौसी रोमांटिक गाना चलाकर मटक रहीं थी। मुझे हंसी आ गयी।

इतनी मोटी औरत रोड रोलर-सी ठुमक रही है, लेकिन अगले ही पल वो हंसी गायब भी हो गयी। ...क्योंकि

पापा भी गाउन पहने साथ-साथ मटक रहे थे।

ये सब देखकर मैं सकपका गया।

देखते ही देखते पापा मासी एक-दूसरे में निम्बू पानी की तरह घुल-मिल गये। मैंने नीचे उतरने की कोशिश की, पर मेरा पैर गमले पर तिरछा पड़ा और गमला लुढ़क गया। मैं गिर पड़ा। अंदर से दौड़ते क़दमों की आवाज़ आई। मासी ने भड़ाक से दरवाज़ा खोला।

“अरे तू यहाँ क्या कर रहा है?”

“गमले में पानी डालना चाह रहा था, गिर पड़ा।”

“गमले में पानी? तो गिर कैसे गया?”

“गमला उठाकर बाथरूम तक ले जा रहा था, पानी डालने के लिए... गमला भारी था इसलिए मैं गमले समेत गिर पड़ा” मैंने घटिया-सा बहाना परोसा।

“तू झूठ बोल रहा है न?” मासी की तीखी आवाज़ निकली।

“हाँ जी, बोल तो रहा हूँ।”

मासी सकपकाई “क्यों बोल रहा है झूठ?” राज़दराना लहजे में बोलीं।

“क्योंकि सच इतना घटिया और भद्दा है कि मेरे मुंह से निकल नहीं रहा।”

“ऐसा क्या है?” मासी की आवाज़ और धीमी हुई।

“ऐसा गया तैसी में, पापा कहाँ है ये बताओ आप?” मेरी तीखी आवाज़ निकली।

“मुझे.....मुझे क्या पता कहाँ है तेरे पापा...” मासी हकलाई।

“अच्छा! खुद अंदर लिए बैठी हो और मुझसे कहती हो कहाँ है मुझे क्या पता।” मैं बुरी तरह चिढ़ गया।

वो कुछ देर मुझे घूरती रहीं.... फिर अचानक इतनी तेज़ चिल्लाईं कि मैं घबरा गया “सूमी... सूमी! सूमी कहाँ है तू? देख तेरा लाडला क्या बक रहा है मेरे लिए” और कोई मूड होता तो मैं लाडला सुनकर लोट-पोट हो गया होता। पर मैं घबरा गया।

“मासी चिल्लाओ मत, आप ही की भलाई है।” मैंने उन्हें समझाना चाहा पर उन्होंने मेरी बाजू पकड़कर मुझे अपने साथ घसीटना शुरू कर दिया और ‘सूमी-सूमी’ चिल्लाने लगी। वो माँ के पास - जिनका कमरा ग्राउंड फ्लोर पर ही है – मुझे ले जाने लगी। मैं समझ गया वो मुझे अपने कमरे के सामने से हटाने के लिए ये सारा ड्रामा रच रहीं है। मैं भी पक्का ढीट बनकर पीछे मुड़कर देखने लगा। कोई फ़ायदा न हुआ। कमरे से कोई न निकला।

पूरा घर उठ गया। मतलब जो ‘नॉवल’ में खोये थे वो भी ग्राउंड फ्लोर पर, आँगन में आ

धमके।

“देख सूमी ये लड़का क्या बक रहा है मेरे बारे में।” माँ मेरे सामने खड़ीं थी। बाकि सारे आजू-बाजू घेरकर खड़े हो गये। सिर्फ पापा और रामू भैया ही गायब थे।

“क्या कह दिया अब तूने जीतू?” माँ उतनी ही शान्ति से बोलीं।

मैंने मुंह खोला ही था कि मासी बोल पड़ी “अरे ये क्या बोलेगा, मैं बताती हूँ.., मेरे कमरे के बाहर खड़ा हो कर कहता है कि मैं इसके बाप के साथ अंदर गुलछर्रे उड़ा रहीं हूँ।”

“जीतू……” माँ चिल्लाई।

“मासी” मैं चिल्लाया “मैंने कभी ऐसा वर्ड यूज़ नही किया.. बकवास न करो” मैं भड़क उठा। मुझे एहसास हुआ कि आज गलती पकड़कर गलती कर दी मैंने।

“देख रही है सूमी कैसे बात करता है ये मुझसे और एक मैं हूँ कि इसकी फ़िक्र में मरी रहती हूँ” मासी की आँखों की टंकी का नल खुल गया।

“जीतू तमीज से बोल पहली बात, दूसरी, क्या कह रहीं हैं मासी, ऐसी घटिया बात की तूने?”

“नहीं माँ, मैंने सच में पापा और मासी को डांस करते देखा इन्हीं के कमरे में...” मैं इतना गिड़गिड़ा के बोला कि एक मिनट को सब मासी को घूरने लगे।

तभी घर के ‘अमजद खान’ ने भी हाज़िरी लगाई।

“क्यों हल्ला गुल्ला कर रखा है सबने? क्या हो गया ऐसा?” पापा ने रौबदार आवाज में कहा। अब वो गाउन की बजाए उस सूट में थे, जिसमें वो सुबह ऑफिस गए थे! मज़े की बात वो मेन गेट से एंट्री कर रहे थे।

“पापा ये कह रहा है कि....” छुटकू बोलने को था कि माँ ने उसे घुड़क दिया।

“चुप रह छुटकू... जा हिमानी इसको लेकर जा अपने कमरे में” हिमानी कुछ बोलने के लिए मुंह खोल ही रही थी कि माँ की आँखे देख चुप हो गयी।

“आप सब लोग भी अन्दर चलिए....” माँ ने आर्डर दिया।

‘अजय’ समेत सब अन्दर माँ के कमरे में आ बैठे।

“बात क्या हो गयी है सुमी बताओ तो” पापा साफ़ नौटंकी करते लगे।

“मैं बताती हूँ जीजू, ये हरामजादा कहता है कि आप और मैं रंगरलियाँ....”

“कुक्कू मासी, ढंग में बोलो, हरामजादे वो होते हैं जिन्हें अपने बाप का पता नहीं होता, और मुझे ठीक पता है मेरा बाप कौन है और कहाँ है” मैं बुरी तरह से बिफरा।

इतने में माँ ने आगे आकर मेरे मुंह पर तमाचा जड़ दिया।

पर मासी ने और ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। पापा कभी माँ को देखते तो कभी मासी को।

अजय मुस्कुरा रहा था। उससे उम्मीद भी यही थी। उधर मौसा सिर पकड़कर बैठे थे।

मेरी भी आँखों में आंसू आ गये।

“सुमी हम जा रहें है, मुझपर ऐसे लांछन लगेंगे तो मैं इस घर में अब कभी कदम नहीं रखूंगी।” मासी की नौटंकी अब अपने चरम पर जा पहुंची थी।

“अरे पागल हो गयी हो क्या कुक्कू?” पापा बीच में कूदे।

“बेटा जीतू मैं तो अभी आया हूँ घर, तेरे सामने ही तो आया हूँ अभी।” वो मुझे भरमाने लगे।

मैं रोते हुए सोचने लगा अगर पापा अब ऑफिस से आए हैं तो इनकी टाई कहाँ गयी? सुबह तो पहन कर गए थे? ज़ाहिर था जल्दी-जल्दी में टाई बांधने का मौका नहीं मिला था। लेकिन मेन गेट से अंदर कैसे आए?

“अरे तुम क्यों इसको सीरियस लेती हो कुक्कू” पापा बोले “इसकी शरारतें कुछ ज्यादा ही बढ़ रही है, इसकी बातों को दिल से मत लगाया करो, चलो जाओ तुम आराम करो।”

“नहीं जीजू अब मैं इस घर में एक पल भी नही रुकने वाली... ए जी उठो...”

मौसा हड़बड़ा गये, शायद रात का खाना खाए बगैर वो हिलना भी नहीं चाहते थे।

“जब तक मैं इस लड़के की शक्ल देखती रहूंगी मेरा बीपी हाई होता रहेगा... नहीं देखेंगे हमारे बच्चे रामलीला इस बार... कोई आफत नही आ जाएगी।”

“अरे कुक्कू चुप कर तू... जीतू की तरफ से मैं माफ़ी मांगती हूँ।” माँ हाथ जोड़ने लगीं।

“माँ आप क्यों...”

“चुप रह नालायक” माँ फिर मुझपर ही चिल्लाईं “दफा हो जा यहाँ से।”

“नहीं.., सुमी, जब तक ये लड़का इस घर में है, मैं नहीं रहूंगी।”

लगता था मासी मुझे घर से निकलवाकर ही मानेंगी।

बहस खिंचती चली गयी। पापा ने कोई दुहाई नहीं दी। वो चुप रहे। माँ को उनपर शायद अंधा भरोसा था, या शायद माँ जानती थीं कि दाल में काले की परसेंटेज क्या है लेकिन मासी रोती रहीं, मुझे कोसती रहीं.. और मैं खुद की सफाई देता रहा, टाई वाली बात भी बताई पर किसी ने कान नहीं दिए।

आखिर मैंने ही अपनी गलती मानी और कहकर जान छुड़ानी चाही कि मैंने कुछ नहीं देखा था। पर मुझे सजा मिली।

अगले पूरे हफ्ते तक मैं अपने कमरे में ही बंद रहूँगा और खाने के वक़्त सब्जियाँ काटूँगा। हिमानी मुझे खाना दे जाएगी। पर मेरे लिए ये सज़ा कम मौज ज़्यादा थी। सजा हिमानी के लिए थी, अब सारा काम उसे अकेले जो करना था।

अध्याय 2 – बियर काण्ड

अगले दो दिन मैंने शांति से बिताए, न कोई शरारत करने की कोशिश न कोई खुराफ़ात का इरादा। तीसरे दिन भी मैं अपने कमरे में बंद ही रहा, पर अब हौसला जवाब दे रहा था। रात के करीब 1 बजने को थे। मैं अपनी खिड़की के रास्ते कमरे से बाहर निकला। मेरा कमरा तीसरे माले पर होने की वजह से मुझे कमरे में बंद होना कभी सजा नहीं लगी, हमारे सारे कमरों की खिड़की ज़रुरत से ज्यादा बड़ी थीं। उसी खिड़की के रास्ते बाहर निकल, मैं कूद-फांदकर आराम से छत पर पहुँच जाता था।

ठीक 1 बजे उर्मिला मेरा इंतज़ार करती थी। उर्मिला मेरी पड़ोसन और मेरी दोस्त। वो अपनी माँ और बड़ी बहन के साथ रहती थी। पापा आर्मी ऑफिसर थे इसलिए अमूमन घर पर नहीं होते थे, जिसका फायदा उठा वो तकरीबन रोज़ मुझसे मिलने आ जाती थी। उसके आने से ज्यादा ख़ुशी मुझे इस बात की होती थी कि मेरे लिए बियर लेकर आती थी। बियर के रसिया उसके घर में सब थे। स्पेशली आंटी, यानी उसकी माँ, उनके लिए इम्पोर्टेड बियर आती थी।

“क्या बात है स्वीटहार्ट, आज चेहरे पर पौने बारह क्यों बजे हैं?” उसकी मोटी मर्दों-सी आवाज़ ने मेरा मूड बदलने की कोशिश की।

“अब मासी आईं है तो चेहरे पर दस बजकर दस मिनट तो हो नहीं सकते।” मैंने बियर का एक सिप लिया और कहा “तू नहीं पी रही आज, एक ही बची थी क्या?”

“नहीं रे, नवरात्रे चल रहे हैं न, इसलिए मैं अवॉयड कर रहीं हूँ।”

मुझे हंसी आ गयी।

“तू बता हुआ क्या था?”

मैं क्या बताता? अपने पिताजी के गुणगान करने का मन नहीं था। मासी के बारे में वो पहले से जानती थी। मैंने टालना चाहा “उर्मी कोई और बात करें तो कैसा रहे?”

“मतलब? बात नहीं करना चाहता?” वो उठने को हुई।

मैं चाँद ढूँढने लगा, जो ज़ाहिर सी बात थी कि तीसरे नवरात्रे की रात एक बजे कहाँ मिलता? फिर भी ढूँढने लगा। मानों चाँद से गुहार लगवानी थी कि उर्मी कुछ न बोले पर कहीं न जाए। फिर मैं यूँही असमान ताकते हुए बोला
“बात ऐसी छेड़ कि बात ख़त्म न हो
यूँ ही सुलगती रहे पर रात ख़त्म न हो”

“ओह तेरी” उसने ताली पीटी, “ये क्या फेंका अभी तूने?” उसके चेहरा हज़ार वाट के

बल्ब सा चमक गया।

“ये शे’र था, कहने को तो”

“शेर!” वो हँसी “जंगली था?”

“शायद, पर तूने ताली पीट के सर्कस का बना दिया”

“और सुना कुछ ऐसा ही, मज़ेदार था ये, समझ नहीं आया पर...”

“पर क्या?” मैंने उसकी तरफ देखा।

“...पर अच्छा लगा। वन्स मोर, वंस मोर” वो चीयर अप करने लगी।

मुझे हँसी आ गयी। फिर मैं आसमान को ताकता हुआ कहने लगा “तू बात ऐसी छेड़ कि बात ख़त्म न हो, यूँ ही सुलगती रहे पर रात ख़त्म न हो, ख़त्म हो जाएं तू-मैं या बर्बाद हो जाये कायनात, मगर मुहब्बत के दिल से जज़्बात ख़त्म न हों”

“ओह wow, ये तूने बनाया है?” उसने आँखें बड़ी कर लीं।

“नहीं, कोई ‘सहर’ करके लेखक है, उसका लिखा है ये।”

कभी सुना नहीं....” बोलते-बोलते वो रुक गयी। उसकी नज़रें मेरे पीछे छत की सीढ़ियों की तरफ थीं। अचानक वो बोली “जीतू मैं चली, अजय ऊपर आ रहा है” वो जितनी फुर्ती से बोली, उतनी ही तेज़ी से कदम दौड़ाती अपनी छत से गायब हो गयी।

मैं बियर से ध्यान हटा भी न पाया कि अजय मेरे ठीक सामने आ खड़ा हुआ।

“क्या कर रहा है तू?” वो रौब से बोला।

“जौ का रस पी रहा हूँ” मैं ढीटपने से बोला।

अजय ने मेरा कॉलर पकड़ा और मुझे बाउंड्री पर से उठाने लगा, मुझे उसके हाथों से सिगरेट की सी महक आयी, मैंने बोतल साइड में रखी और पूरी ताकत से एक घूसा उसके ‘बिटवीन दी टू लेग्स’ जड़ा। वो बिलबिला उठा।

मैं उठा, मेरे उठते ही उसने मुझे बैल की तरह टक्कर मारी, मैं गिरा, उसने फिर मुझे गिरेहबान पकड़कर उठाने की कोशिश की। मैं फिर उसके दोनों पैरों के बीच में निशाना बनाने लगा कि उसने उठाने का प्लान कैंसिल कर मुझे धक्का देकर फिर गिरा दिया। फिर मैं जबतक संभलता, मेरी पसलियों पर तीन-चार लातें उसने जड़ दीं। अब मैं बिलबिला उठा।

वो खिसियाकर बोला “यही सिखाया है माँ ने तुझे, चल नीचे अभी बताता हूँ सबको। तेरा कमरा किसने खोला? तुझे तो सज़ा मिली थी न?”

मैं फिर उठा तो मेरे कदम लड़खड़ा गये। मैंने उसकी नाक को निशाना बनाकर मुक्का चलाया पर वो बच गया। उसने मुझे धक्का दिया, मैं फिर गिरा, पर इस बार मेरे साथ-साथ मेरी बियर गिरी... और मैंने अपना आपा खो दिया।

पूरे दिन में पहली चीज़ थी, जो मुझे पसंद आई थी, इसने वो भी मुझसे छीन ली।

मैंने उसके पेट पे टक्कर मारी, इससे पहले कि वो संभलता, मैंने अड़ंगी लगाकर उसे गिराया और उसपर कूदकर उसे बजाना शुरू कर दिया। लेफ्ट, राईट, जहाँ मौका लगा वहाँ मुक्के बरसाने शुरु कर दिये। मैं गुस्से और नशे में इतना चूर हो चुका था कि कई हाथ उसके मुँह की जगह जमीन पर पड़ गये लेकिन मुझे फर्क न पड़ा।

वो ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगा – पर माँ के लिए नहीं, पापा के लिए भी नहीं, सिर्फ मासी के लिए! 'कुक्कू मासी' 'कूक्कू मासी' का नारा सारे घर में गूंजने लगा। तीन-चार मिनट ही बीते होंगे की मासी, मम्मी और छुटकू समेत सारा परिवार छत पर था। मेरे 'तांडव' से पापा ने अजय को बचाया। उन्होंने मुझे पकड़कर बाकायदा अजय से अलग फेंक दिया। मैंने उखड़ी सांस काबू में की।

"पापा मैंने इसको 'शराब' पीते देखा तो मैंने मना किया, 'भाई' मत पी, तो ये मुझ पर झपट पड़ा" अजय ने बिना किसी के पूछे ही रोना शुरू कर दिया। मैं चुप रहा। वो रोता रहा।

"हे भगवान, ऐसे घर में रहने से मेरे अपने बच्चे भी बिगड़ जायेगे, मैं न रुकूंगी अब एक दिन भी यहाँ..." मासी के विलाप का पॉज बटन फिर से प्ले हो गया।

"बताओ शराब पी रहा था वो भी नवरात्रों में!" मौसा ने फिर सबको याद दिलाया।

मैं चुप था, छत पर फैली बियर अपने आप मेरा कसूर बता रही थी।

"इसको शराब मिली कहाँ से?" मौसा फिर बोले।

"अरे ये बियर है।" पापा ने करेक्शन किया।

मौसा सकपका गए "मतलब?"

"मतलब बियर-बियर है, शराब नहीं" पापा धीरे से बोले।

माँ ने उनकी तरफ घूरकर देखा। फिर पापा की आवाज़ नहीं निकली।

"ज़रूर हिमानी ने लाकर दी होगी इसको" मासी ने अपने दूसरे फेवरेट टारगेट को भी लपेटना चाहा पर मैं बीच में बोल पड़ा "नहीं, हिमानी नहीं, मैं खुद लेकर आया था।"

"तो तुझे कमरे से बाहर किसने निकलने दिया? तू तो कमरे में बंद था न?" मौसा ने सवाल किया।

"मैं निकल गया किसी तरह से।" मैं नज़रे न मिला सका।

"किस तरह से?"

"किसी भी तरह से, आपको क्या करना"

"लो सुनो...," मासी फिर कोई तबाही बकने वालीं थीं कि माँ ने मेरे बाल पकड़े और मुझे खींचती-घसीटती हुई ग्राउंड फ्लोर तक लें गयी। हिमानी हैरान थी जबकि वो खुद कहती थी कि एक न एक दिन तू पकड़ा जायेगा। फिर भी उल्लू-सा मुंह बनाये तांकती रही।

माँ ने बाकायदा मेरी इज्ज़त उतारकर मुझे से बाहर खड़ा कर दिया।

“तेरी यही सजा है जीतू कि जबतक रामलीला ख़त्म नहीं होती, तब तक तू घर से बाहर ही रहेगा”

घर का दरवाज़ा भड़ाक से बंद हो गया।

मुझे शाहरुख़ खान याद आ गया – ‘पल में पराया कर दिया माँ’

रात डेढ़ बजे मैं अपने ही घर के बाहर खड़ा अपनी गली को ऐसे देख रहा था, मानो कोई जंगल हो।

अध्याय 3 – छिछोर काण्ड

रात में मुंह लटकाए चार कदम चला ही था कि एक घर के सामने से निकलते वक़्त मेरा हाथ किसी ने झटके से खींचा।

ऐसा लगा मानो चुड़ैल चिपट गयी हो।

“क्या है? डरा दिया तूने” मैं बिफरा

उर्मी हंसी। खनकते कंगन सी हंसी।

“सुना है तुझे घर से निकाल दिया?” फिर उसने चुटकी ली।

“अरे! कहाँ सुना? रेडियो में भी आ गया क्या? या तेरे पापा ने फ़ोन करके बताया है?” मैं बुरी तरह कलपा गया।

“वो सब छोड़, रात कहाँ गुजारेगा ये बता?”

“अरे अभी बुला लेंगे यार, इन्हें भी पता है मेरा कोई ठिकाना नहीं, फिर हिमानी है ना, तो फ़िक्र नॉट”

“पर तूने मारा सही उसको।” उर्मी के चेहरे पर मुस्कान आ गई। ज़ाहिर था कि वो छुप के मुझे पिटते-पीटते देख रही थी।

“अरे उसे पीटने के बाद मुझे रोज़ दो घंटे के लिए घर से बाहर रहना पड़े तो भी मंज़ूर।” मैंने खिसियाकर जवाब दिया।

“हाहाहा, चल अब बकवास न कर और घर चल।” उसने फिर मेरा हाथ पकड़ लिया।

“अभी घर से ही तो निकला हूँ, इतनी जल्दी थोड़ी न बुलाएँगे।”

“अरे हमारे घर चल, मम्मा अभी सो रहीं है, बहन भी। चल।”

मैं दबे पांव उसके घर पहुंचा। उर्मी का और हमारा घर मिला हुआ हैं, ख़ास उसके कमरे की खिड़की से मेरे घर का मेन गेट दिखता था। क्योंकि वो रहती भी पहली मंजिल पर थी इसलिए गेट साफ़ दिख रहा था! उर्मी ने मुझे इशारे से बुलाया, मैंने झाँक कर देखा। गेट हौले-हौले खुल रहा था। मुझे हिमानी या माँ के बाहर मुझे ढूँढने की ही उम्मीद ही थी, पर गेट छुटकू ने खोला था। कोई शौल ओढ़े अन्दर आ रहा या रही थी।

मेरी कुछ समझ न आया।

“ये रामनारायण किसको अन्दर बुला रहा है?”

“वो रामेन्द्र भैया है... पहली बात, दूसरी बात, मुझे ये अजय लग रहा है रामू नहीं, रामू

भैया झुककर नहीं चलते”

उर्मी ने खिड़की बंद की।

मैंने मन ही मन सोचा, अजय तो अभी पिट के सीधा भी नहीं हुआ था, फिर बाहर क्या करने गया।

फिर उसी ने रात का बचा खाना लगा दिया।

“हाहाहा, तेरी फैमिली भी पूरी महाभारत की कहानी है।” वो सामने बैठकर मुझे खाता देखने लगी।

“वो रामायण है यार, तू कहाँ थी जब स्कूल लगता था?”

“अच्छा-अच्छा वो राम जी वाली न, वो रामलीला ही सही”

“ना, सब रावण है यहाँ, ये रावणलीला है। यहाँ, सबके अन्दर चोर है, पाप है, वासना है, लालच है और मौकापरस्ती भी।”

“कह तो ऐसे रहा है जैसे तुझमें नहीं है।” वो मेरा बिस्तर ज़मीन पर लगाते हुए बोली।

“है मुझमें भी... इसलिए सबको बोला, पर मुझे पता है कि मेरी कमी क्या है, बाकि इसी मुगालते में जी रहें है कि उनमें कोई कमी ही नहीं।”

“वाओ, मुगालता। कहाँ सीखा ये वर्ड?” उर्मी अब मेरे पास आकर खड़ी हो गयी।

“तू छोड़, कल का सोचना है किधर काटूँगा दिन-रात” मैं जितना खा सकता था खा के, उर्मी को प्लेट थमाने लगा।

“अरे अभी तो आराम कर न, कल की कल देखी जाएगी” उर्मि ने तसल्ली दी और किचन में थाली रखकर पानी ले आई।

“ये भी ठीक है, वैसे एक शख्स है मेरी नज़र में, शमशेर को जानती है? वो जो रावण बनता है?”

“अरे वो कमीना जिसको उसकी बीवी छोड़कर चली गई थी?”

“हाँ वही कमीना जिसकी बीवी छोड़कर, उसका बच्चा साथ लेकर गयी थी। उसका घर अच्छा ख़ासा बड़ा है, दिन वहां आराम से गुज़र जायेगा।”

“हे भगवान, तो अब तू घर से निकलने के बाद जेल भी जाना चाहता है?” उर्मी ने लाइट बंद कर दी और अपने पलंग पर लेट गयी।

“अरे टेंशन कोई नहीं है यार, वो दिन में घर रहता ही कहाँ है? कई बार क्रिकेट खेलते वक़्त उसके घर में बॉल चली जाती थी तो हम उसके घर में घुसकर, बाकायदा सुस्ता कर, फिर बॉल लेकर आराम से आधे घंटे में आते थे। कल भी मैं चुपके से अंदर चला जाऊंगा, इतना बड़ा घर है.. अकेली जान है वो.. क्या पता लगेगा? परसों तक ये लोग मुझे वापस बुला ही लेंगे, नहीं भी बुलाया, पूरे नवरात्रे का वनवास ही दिया तो दिन वहां गुज़ारूंगा और रात तेरे पास।”

उर्मी कुछ देर सोचने के बाद बोली “खैर छोड़, अब सो जा” मैं ज़मीन से उठकर उसके पास आकर लेटा, पर उसे पता न चला “सुबह सुबह निकल लियो, माँ ने देख लिया तुझे यहाँ तो उन्हें उर्मिला का लक्ष्मण दिखने लग जाएगा तुझमें”

“इसमें बुरा क्या होगा?” मैं उसके कान के पास मुंह ले जाकर बोला।

“पागल है क्या?” वो चौंक गयी “अब तो जायदाद भी नहीं रही तेरे पास, अब करनी होगी शादी तो रामेन्द्र से करुँगी” उसने मुझे कोहनी मारी “चल उतर नीचे” मैं न उतरा, बल्कि उसके ऊपर अपना हाथ रखकर बोला “ओहो, सपने देख सपने, उनका रिश्ता लग गया है कल।”

“ओह नो, खैर.., कोई बात नहीं” वो जरा ठहर कर बोली “मैं अजय से कर लूंगी।” उसने फिर कुटिल मुस्कान बिखेरी। अँधेरे में सिर्फ दांत चमके।

“गुड नाईट” मुझे फुकाने के लिए इतना काफी था। मैं पलंग से उतरकर ज़मीन पर बिछे अपने बिस्तर पर लेट गया।

उसकी हल्की-सी खी करके हंसी सुनाई दी, फिर वो चुप हो गयी।

या शायद सो गयी।

बाल्टी-लोटे से पानी उछाल-उछालकर नहाने की आवाज़ आई। फिर उसने ‘हरी ॐ’ कहा और शायद अंदर कहीं चला गया। कुछ ही देर बाद घंटी बजने की आवाज़ आने लगी। फिर उसने कोई भजन गाना शुरू किया। धीमी लेकिन भारी आवाज़ मेरे कानों में पड़ी

श्री राम चंद्र कृपालु भजमन हरण भव भय दारुणम्।

नवकंज लोचन कंज मुखकर, कंज पद कन्जारुणम्।।

कंदर्प अगणित अमित छवी नव नील नीरज सुन्दरम्।

पट्पीत मानहु तडित रूचि सुचि नौमी जनक सुतावरम्।।

भजु दीन बंधु दिनेश दानव दैत्य वंश निकंदनम्।

रघुनंद आनंद कंद कौशल चंद दशरथ नन्दनम्।।

सिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदारू अंग विभूषणं।

आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खर-धूषणं।।

.....

मैं तसल्ली से सुनता रहा.... कुछ देर बाद पूजा-पाठ बंद हो गया और उसके स्कूटर स्टार्ट करने की आवाज़ आई। मैं पिछली गली से उसकी दीवार फांदकर अंदर घुसा। अंदर कई

सारे कमरे थे, तकरीबन सारे ही खुले थे, लेकिन मैं दीवार के पास वाले कमरे में ही पंखा चलाकर दरियों पर पसर गया!

सारा दिन मैंने उसके घर में भूखे पेट ही गुज़ारा। गनीमत थी कि किसी को खबर न हुई।

मैं शाम साढ़े आठ बजे उर्मी के घर के आगे खड़ा था। वो मुझे बुलाकर ऊपर ले गयी।

“इतनी देर क्यों की तूने आने में? अभी कोई देख लेता तो?” मैं कलपकर बोला

“यार मम्मी ने बोला मुझे की उन्हें कुछ देर डिस्टर्ब न करूँ, न उनके कमरे में जाऊं न उन्हें आवाज़ दूँ, खाना-पानी कुछ नहीं” वो थोड़ी उदास लगी।

“अरे ऐसा क्यों?” मैंने हैरानी जताई।

“पापा की याद आ रही होती है उन्हें, तो कई बार ऐसा कह चुकी हैं। तू चल...” उसने बेपरवाही से कहा।

“मेरे घर की कोई खबर, किसी ने मुझे ढूंढा हो?”

“तुझे क्या लगता है?”

“ढूंढा होगा! आखिर उनका फुल टाइम नौकर जो गायब है, दिक्कत तो होती ही होगी।“

“आज किसी काम वाली को ले आये हैं....”

“ओह...” मेरे मुंह से लम्बी ‘ओह’ निकली। तभी उर्मी मेरे लिए खाना ले आई, मैंने बिना किसी परवाह के अगले ही पल खाना शुरू कर दिया।

“....और शायद हिमानी को खबर है कि तू रात यहाँ रुका था, मुझसे पूछ रही थी तो मैंने मना कर दिया।”

मैंने उसकी बात अनसुनी की।

“बीयर पीना इतना बड़ा गुनाह हो गया अब।” मैं मन ही मन बुदबुदाया।

“यार नवरात्रों में पी न, इसलिए गुनाह हो गया।” उसने मन की बात भी सुन ली।

तभी कुछ गिरने की आवाज़ आई।

मैं और उर्मी उसकी माँ के दरवाज़े तक भागे।

आवाज़ शायद उसकी माँ के कमरे से ही आई थी। फिर से सब शांत हो गया था। मैंने इशारे से कहा की पूछ सब ठीक है?

उसने इशारे से ही मना कर दिया, बोला मम्मी नाराज़ हो जाती है।

पर दरवाज़े के पास कुछ ऐसा दिखा की मैं ठिठक गया।

एक बहुत खूबसूरत सा पैन पड़ा था, मैंने नीचे झुक कर उठाया, उसके साथ ही एक काले रंग का बटन भी। बटन के बारे में मुझे कोई आइडिया नहीं था पर पेन मैं निश्चित तौर पर कह सकता था कि ये वो पेन था जो हिमानी ने अजय को गिफ्ट किया था।

अध्याय 4 – घुसपैठ काण्ड

“क्या देख रहा है इस पैन में?” उर्मी फुसफुसाई।

“जाना पहचाना सा लगता है” मैंने भी फुसफुसा के जवाब दिया।

“अच्छा, तूने कभी जिंदगी में ऐसा पैन हाथ में भी लिया है?” उसने ताना मारा। पैन शक्ल से कीमती लगता था।

“तूने मुझे बेइज्ज़ती कराने के लिए घर बुलाया है?” मैं गुस्से में बड़बड़ाया

“सॉरी, पर पैन का किस्सा क्या है?”

मैं चुप रहा.. पर अन्दर से फिर आवाज़े आने लगी।

मैंने इशारे से उर्मी का ध्यान दरवाज़े की तरफ किया। हमे कुछ सुनाई नहीं दिया। मेरे दिमाग की बत्ती जली, मैं किचन में भागते-दौड़ते पहुंचा, तुरंत दो कांच के गिलास लिए और वापस आया।

“ये क्या है?” ये सवाल एक्सपेक्टेड था।

“ये कांच के गिलास है” मैंने मासूमियत से जवाब दिया।

उर्मी ने खुर मारा। मैं बिलबिला उठा, पर चीखा नहीं। फिर एक गिलास उसको पकड़ाया और दूसरा खुद लेकर, दरवाज़े पर लगा दिया, गिलास में अपना कान लगा दिया। उम्मीद थी अन्दर की आवाज़ें सुनने को मिलेंगी।

बहुत हल्की लेकिन साफ आवाज़ आई “जानू बस करो अब” – जनाना आवाज़ थी।

“बस कुछ ही दिन की तो बात है, फिर मैं कहाँ और तुम कहाँ होगी” ये आवाज़ मुझे जानी-पहचानी लगी, अजय?

मेरा दिल हिल गया।

ये हो क्या रहा है मेरे घर में? सब एक से बढ़कर एक। कोई अपनी साली से लगा है तो कोई शादीशुदा पड़ोसन से। मैं खुद पड़ोसन की बेटी के साथ छत पर बैठा रात 1 बजे बियर पी रहा हूँ। ये हो क्या रहा है?

वो आवाज़े उर्मी ने भी सुनी, वो धम्म से फर्श पर बैठ गयी। खाली आँखों से कुछ देर मुझे देखती रही। फिर अपनी आवाज़ में – बिना फुसफुसाए बोली “तू कमरे में जा।” एक बार को मैं घबरा गया।

फिर हिम्मत करके बोला “क्यों.. क्या हो गया?”

“जितना कह रहीं हूँ उतना सुन, मैं नहीं चाहती कि आगे जो होने वाला है वो तू देखे, या तुझे देखता हुआ कोई देखे। इसलिए निकल यहाँ से।”

मुझे रात भर गलियों में भटकना मंजूर नहीं था। मैं चुपचाप कमरे में खिसक लिया और कान लगाए सुनने की कोशिश करने लगा कि आखिर ये करती क्या है।

दरवाज़ा पीटने की आवाज़ आई।

“बाहर निकलो” उर्मी चिल्लाई।

मैंने हौले से झाँका, घर का नक्शा ऐसा था कि उसकी माँ का कमरा नहीं दिखा।

“क्या हुआ उर्मी” उसकी माँ की ऐसी आवाज़ आई जैसे कब्र से उठी हो।

“क्या हुआ?” उसने आवाज़ की नकल की “आप हटो यहाँ से, मैं देखूं कौन है अन्दर”

“क्या हो गया है तुझे, कोई भी तो नहीं है अन्दर” माँ की आवाज़ बोलते वक़्त कांप रही थी, पर मान कैसे सकती थी।

“कहाँ गया?” उर्मी की हताश आवाज़ आई।

“अरे कौन कहाँ गया”

“मम्मी ड्रामे मत करों, अन्दर कोई था मुझे साफ़ आवाज़ आई है”

“मेरी बेटी मेरी जासूसी कर...” मां ने निरूपा राय बनने की कोशिश की।

“शटअप मम्मी, डोंट क्रिएट ए सीन.....”

बाकी चोंचला सुनने से बेहतर मुझे उर्मी के कमरे की खिड़की देखना लगा। हमारे अयोध्या महल का साफ़ नजारा दिख रहा था, लेकिन गेट बंद था। मैंने उर्मी का मोबाइल ढूंढा, उर्मी का मोबाइल लिए मैं खिड़की पर पहुँचा ही था कि हौले-हौले गेट खुलना शुरू हुआ, ‘आज ये वीडियो मेरा घर में घुसने का वीजा होगा और अज्जे के लिए गेटपास’ मेरे चेहरे पर कमीनगी वाली हंसी आई।

गेट पूरा खुल गया, एक साया शॉल लपेटे गेट के करीब आने लगा। पर मैं मोबाइल में उलझ गया, मोबाइल में पैटर्न लॉक लगा हुआ था. ऐ-बी-सी-डी सब बना लिया पर लॉक नहीं खुला। मेरे देखते ही देखते अपने में सिकुड़ता अजय रिफ्यूजी बना बॉर्डर पार कर गया। मैं इतना बड़ा धुरंधर, अपनी बंदूक का लॉक ही न खोल पाया।

खिसियाकर मैंने खिड़की बंद कर दी। तुरंत मेरे दिमाग में एक बात कौंधी, मैंने खिड़की फिर खोली। नीचे देखा तो कोई चार फुट की दूरी पर एक स्लैब लगी हुई थी। शायद ग्राउंड फ्लोर के रौशनदान के प्रोटेक्शन के लिए लगी होगी. मैंने सेम स्लैब अपने घर में भी लगी देखी। उर्मी के कमरे के बराबर ही गेस्ट रूम भी है बस फर्क इतना था कि मेरे घर के गेस्ट रूम की स्लैब के नीचे एक गाड़ी भी खड़ी थी जबकि यहाँ से फैसिलिटी नहीं थीं। मतलब मैं उर्मी के घर से नीचे नहीं कूद सकता पर अपने घर की पहली मंजिल की खिड़की से आराम से लटककर गाड़ी पर चढ़कर नीचे उतर सकता हूँ और सूट के बटन बंद करता हुआ मेन डोर से एंट्री करते हुए डायलॉग मार सकता हूँ कि “क्यों हल्ला

गुल्ला कर रखा है सबने?” सारा मंज़र मेरे दिमाग में घूम गया।मुझे अपनी ये थ्योरी अच्छी लगी। तभी कमरे के बाहर से फिर हल्ले की आवाज़ आई, अब माँ की आवाज़ तेज़ थी, उर्मिला मिमिया रही थी। फिर एक स्पष्ट और तेज़ आवाज़ उर्मी की आई “ऐसा है तो देख लो मेरा कमरा, आ जाओ”

मेरी हवा खराब, सिट्टी-पिट्टी गुम।

दरवाज़ा हौले-हौले खुलने लगा, मैं दबे पाँव दरवाज़े के पास पहुँच गया। दरवाज़ा पूरा खुला, मैं झट से दरवाज़े के पीछे हो गया। दरवाज़ा पूरा खुला और मेरी नाक से टकराया, मेरी चींख गले में ही फंस गयी। आँखों से पानी आ गया।

“लो देख लो कमरा, मुझ पर शक करती हो मम्मी, शर्म नहीं आती आपको?” उर्मी की रुआंसी आवाज़ आई।

“तू जो मेरी जासूसी कर रही थी वो क्या था फिर?” माँ ने खुद को बेटी के बराबर कर लिया।

पलंग के खोलने की भी आवाज़ आई, अलमारी के अन्दर भी झांका गया। थक हार जब कोई नहीं मिला तो उसकी माँ बोली “तेरे पर बहुत निकल आयें है, कुतरने पड़ेंगे।”

“मैं कल पापा को फ़ोन करुँगी और आज रात का सारा किस्सा बयां करुँगी।” ऐसा लगा जैसे उर्मी रोते-रोते बोली हो।

“खबरदार जो तूने अपने बाप को कुछ बोला, मेरा मरा मुंह देखेंगी उस दिन” माँ की आवाज़ में धमकी कम दहशत ज्यादा थी, पर इतना कहकर वो चली गयीं।

उर्मी कुछ देर गेट पर ही खड़ी रही फिर तुरंत दौड़कर खिड़की खोल कर देखने लगी।

मैं दबे पाँव उसके करीब गया और उसे पीछे से अपने अंक में भर लिया, उसकी सिसकी निकली।

“कमीने, कहाँ था तू? मुझे लगा कूद गया नीचे।” वो फुसफुसाई भी ऐसे जैसे डांट रही हो।

“कूदा मैं नहीं, कूदा तो कोई और था” मैं नाम छुपाते हुए बोला।

“क्या मतलब!” उर्मी थोड़ा चौंकी।

“अरे तेरी माँ के कमरे की खिड़की से कूदकर गया जो भी गया”

“पागल है तू? कुछ भी बोल रहा है। एक मंजिल कौन कूद जायेगा, वो शायद टीवी देख रहीं थी!” उर्मी ने खुद को तसल्ली दी

“न न, क्या जरूरत थी.., तेरी माँ की खिड़की जिस तरफ खुलती है उस तरफ एक सिंगल स्टोरी हाउस भी है।”

वो कुछ देर सोचती रही फिर बोली “तुझे कैसे पता? तू तो मम्मी के कमरे में गया ही नहीं?”

“पर रहता मैं भी इसी मोहल्ले में हूँ” मैं फिर मुस्कुराया। “बाकि जब मैंने किसी को

अपने घर में घुसते देखा है तो ज़ाहिर है कि तेरे घर से कोई निकला भी होगा।”

“तूने किसे घुसते देखा?” उसने आँखे बड़ी कर ली।

“सच कहूँ तो अजय को, वो पैन भी उसी का है, मैंने पहचान लिया था”

“तूने घुसते देखा तो हल्ला क्यों न मचाया?”

“फिर तेरी माँ जो इतना हल्ला मचा रही थीं वो सही साबित हो जाता, इसलिए मैंने सोचा तेरे मोबाइल से विडियो बना लूँ पर....”

“अरे दिखा-दिखा फिर मैं बताऊंगी मम्मी को।”

“...पर तेरे फोन का पैटर्न लॉक नहीं खुला।”

उसने मुझे घूरा, और फिर हँस दी। मैंने भी हँसी में उसका साथ दिया।

“पर एक बात समझ नहीं आई जीतू, मम्मी ने मुझ पर शक क्यों किया? काउंटर अटैक वाला फार्मूला?” उसने शर्लाक होल्म्स जैसा मुंह बनाया।

“काउंटर अटैक के लिए भी कोई बेस होना चाहिए, एक तो कोई कमरे में मिला नहीं, इसीलिए तो उन्होंने इतनी देर से गेट खोला, दूसरा गेट के बाहर उन्हें दो गिलास पड़े दिख गये होंगे, फिर तू गुस्से में चिल्लाई भी तो थी, सिंपल।”

“हाँ” उसकी बड़ी-सी हाँ निकली।

बाकी रात हम दोनों ने सोते-जागते गुज़ारी।

वो रात भर कभी रोने लग जाती, कभी कुछ यादकर हँस देती, तो कभी गाने लगती.. पर मैं सारी रात सोचता रहा, बस एक ही बात, माँ को अगर पता चल जाए कि अजय इतना बड़ा ठरकी है तो... क्या हाल हो उसका। सोचकर मुझे सुकून मिलने लगा। सुकून मिलते ही मुझे नींद आ गयी।

सुबह उर्मी भी मेरे साथ ही जाने के लिए हड़ गयी। बोली “अब इस घर में दम सा घुट रहा है।” मुझे दुःख तो हुआ पर साथ-साथ ख़ुशी भी हुई की चलो एक कंपनी मिली।

उसने झट-पट अपनी माँ के लिए एक चिट्ठी लिखी। एक लिखी अपनी बहन के लिए। हालाँकि, मैं हैरान था कि रात इतना हंगामा हुआ फिर उसकी छोटी बहन बाहर नहीं निकली, न जाने उसका क्या सीन था।

फिर उसने अपने जोड़े हुए ‘कुछ’ पैसे निकाले। वो कुछ भी बहुत थे।

हम दोनों सुबह मुंह अँधेरे उस घर से भी बाहर हो गये।

अब कोई पांच घंटे गुजारने थे, क्योंकि ‘रावण’ करीब 10 बजे ही दफ्तर के लिए निकलता था।

ये वक़्त हमने खाते पीते गुज़ारा, पर लगातार चलते-चलते हमारे पैर दर्द होने लगे।

ठीक दस बजे हम रावण के घर के बाहर थे, मैंने आज ध्यान दिया कि उसके गेट पर भी ‘लंका’ लिखा हुआ था। देख के ही लग रहा था कि किसी बच्चे की शरारत थी। गली

अपने कामों में व्यस्त जान पड़ती थी।

उर्मी ने सवाल किया “घुसना कैसे है?”

फिर मैं उसे उसके घर के पिछवाड़े की तरफ गया। उस तरफ संकरी गली थी, घर का छोटा सा आंगन भी बैक साइड ही था, मैं पहले खुद बाउंड्री पर चढ़ा, फिर मैंने उर्मी को भी खींच तानकर चढ़ा लिया। उसकी आवाज़ के साथ-साथ उसका वजन भी मर्दों जैसा निकला।

अंत-पंत हम लोग, घर के अंदर दाखिल हो गये। आंगन के साथ ही एक कमरा था जिसके दो दरवाजे थे, एक वो जो खुला था और दूसरे पर बाहर की तरफ से शायद ताला पड़ा था। इसी कमरे में कल मैं भी रुका था। इन्हीं दारियो पर सोया था

उर्मी हंसने लगी।

“क्या हुआ तुझे, कभी रोती है कभी हंसती है? पागल तो नहीं हो गई है?”

“ये सोच के हंसी आ रही है कि कहाँ सीता-माता को राम जी ने लंका से निकालने के लिए क्या कुछ कोशिशें नहीं की थी, और एक तू है कि मुझे खुद लंका में लेकर आया है, वो भी बिना रावण की परमिशन के”

सोच के मुझे भी हंसी आ गयी।

हमे पता ही नहीं लगा की कब हम एक दूसरे में उलझकर सो गये।

खट-पट की आवाज़ से मेरी नींद खुली। मेरा दायां हाथ सुन्न हो गया था, वजह उर्मी थी, जो उस पर लदी हुई थी।

मैंने उसी के हाथ की घड़ी देखी, दो बजने को थे, इस वक़्त रावण तो आ नहीं सकता... फिर कौन?

मेरे सोचने समझने से पहले ही, हम जिस कमरे में थे, कोई उसका दरवाजा खोलने लगा।

अध्याय 5 – मिलन काण्ड

दरवाज़े पर लगी कुण्डी सरकी।

मेरा दिन भर रावण की लंका में शांति से पड़े रहने का अरमान डगमगाने लगा।

उर्मी ने डर के मारे मुझे जकड़ लिया और कान में फुसफुसा कर कहा "अब क्या होगा?"

“पता नहीं" मेरे मुंह से बस कंपकपाते दो शब्द निकले। चाहते तो हम खुले दरवाजे से भाग सकते थे, पर हम चाहते भी नहीं थे क्योंकि भागते तो कहाँ भागते?

भूतिया फिल्मों जैसे दरवाज़े से चर्र की आवाज हुई और एक लम्बी सी परछाई कमरे में प्रवेश करती दिखी।

वही हुआ जिसकी सबसे कम अपेक्षा थी। शमशेर दी ‘रावण’ आँखों के सामने और मैं बेचारा एक ‘अपनी माँ की सताई हुई’ अबला लड़की के साथ उसके सामने। 6 फ़ीट से भी ज्यादा निकलता लंबा कद, गठीला डौल, बड़ी-बड़ी आँखे और गहरी दाढ़ी मूंछों से भरा उसका चेहरा किसी के भी दिल में खौफ़ पैदा करने के लिए काफी लगा।

अपनी रौबदार चाल चलता ‘रावण’ हमारी ओर बढ़ा।

मैंने उसे कई बार रामलीला में रावण का किरदार निभाते देखा है, उसके मंच पर प्रवेश करते ही पूरे रामलीला मैदान में सन्नाटा छा जाता है पर ऐसा क्यों होता है ये मुझे आज पता चला।

शमशेर का हर बढ़ता क़दम मुझे रावण का सीता की कुटियाँ की और बढ़ता कदम लगने लगा। ऐसा लग रहा मानो साक्षात राक्षस हमारे सामने प्रकट हो गया हो। ‘कहीं वो उर्मी के साथ कुछ गलत न करने की कोशिश करे’

मेरे मन में सौ सवाल आए। आज ये पहली बार है जब मुझे रावण से इतना डर लग रहा था।

"कौन हो तुम दोनों" उसकी आवाज़ कमरे में गूंजी।

मैं हमेशा उर्मी को उसकी मर्दाना आवाज़ के लिए छेड़ता था पर आज रावण की आवाज़ के आगे उर्मी की आवाज़ चिड़िया की चू-चू से ज्यादा नहीं थी।

मेरी घिग्घी बंध गई, मुँह से एक शब्द न फूटा।

"कुछ पूछा है मैंने, सुना नहीं तुम दोनों ने" वो फिर दहाड़ा।

"मैं... मैं जीतू" मेरे मुँह से लड़खड़ाते शब्द निकले।

“और ये?"

उर्मी अब अपना सिर मेरे कंधे पर झुकाए बैठी थी। उसने चिड़ियाँ के बच्चे की तरह घोंसले से सिर निकाला और धीमें से बोली "उर्मी"

“हो कौन तुम दोनों? यहाँ क्या कर रहे हो? अंदर कैसे आए?"

मैंने बहाना बनाने में पीएचडी की है, किस दिन काम आती।

"वो... वो कुछ गुंडे पीछे पड़े थे तो भागते-भागते यहाँ आ गए" उर्मी बत्तख जैसा सिर निकालकर पहले ही बोल पड़ी।

मैंने हैरानी से उसे देखा। ये मेरी संगत का असर है या मुसीबत है कारण? क्या फ़िल्मी बहाना मारा है।

‘शाबाश उर्मी’ मैंने मन ही मन उर्मी को शाबाशी दी।

अब मैंने मोर्चा संभाला - "वो हम दो गली आगे सड़क पर बातें कर रहे थे कि तभी कुछ लड़के आकर उर्मी को छेड़ने लगे, मैंने रोकने की कोशिश की तो मुझे मारने लगे। बड़ी मुश्किल से वहाँ से भागे, सामने ये ही घर दिखाई दिया, यहाँ दीवार छोटी थी तो..... कूदकर यहाँ आ गए। डर के मारे यहाँ दरियों के ढेर पर बैठ गए। सोचा था कुछ देर में चले जाएंगे पर आँख लग गयी और फिर आप... आ गए।"

मैंने गहरी साँस ली।

अब उर्मी की कातिलाना नज़रे मुझे शाबाशी देने लगी।

रावण ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और वो बिना कुछ बोले पास वाले कमरे में चला गया।

"ये कुछ बोला क्यों नहीं?" मैंने धीरे से उर्मी से पूछा।

"कही हम दोनो को मारने के लिए तलवार लाने तो नहीं गया है?" मेरे सवाल के जवाब में उर्मी ने खौफ़नाक सवाल किया।

“कमाल करती है, वो जोर से छींक मार दे तो हम गली में पड़ें होंगे। उसे तलवार की क्या ज़रुरत?”

“तो फिर पुलिस?”

हम दोनों एक दूसरे को देखने लगे, उसकी आँखों में भी डर साफ झलकने लगा।

रावण के बारे में इतना कुछ सुन चुके थे कि डर लगना लाज़मी भी था।

जाने कौन सी मनहूस घड़ी में मुझे रावण की लंका सबसे सेफ लगी थी। मैं मन ही मन अपने आप को कोसने लगा।

हम दोनों दरियों के उस ढेर पर यूँ ही जड़ हुए बैठे रहे। मन में ऊल-जलूल ख्याल उछाले मारने लगे। कभी मैं उर्मी को देखता तो कभी उर्मी मुझे पर दोनों में से किसी की हिम्मत न हुई कि वहाँ से हिल भी सके।

करीब पंद्रह मिनट बाद रावण अपने कमरे से बाहर आया। अब वो पेंट शर्ट के बजाए

पायजामा टी शर्ट में आ गया। उसके कदम फिर से हमारी और बढ़ रहे थे।

"कब से हो यहाँ" आवाज़ गूंजी।

"दस बजे से" मैं मिमियाया।

"ढाई बजने को हैं, कुछ खाया की नहीं दोनों ने?" इस बार आवाज़ में नरमी थी।

मुझे इस सवाल की तो कतई उम्मीद नहीं थी, जिसे उसकी माँ ने आधी रात को बेइज्जत करके घर से बाहर निकाला हो वो भला रावण से उसी की लंका में खाने की उम्मीद कैसे कर सकता था?

मैंने ना का इशारा करते हुए गरदन हिलाई, उर्मी ने भी साथ दिया।

"आओ मेरे साथ।"

हम दोनों रावण के पीछे चल दिए।

रावण ने बाहर हॉल में लगी डाइनिंग टेबल की और इशारा करते हुए बैठने को कहा। टेबल पर आते ही मेरी भूख की आग सातवें आसमान को छूने लगी।

"यार ये हो क्या रहा है हमारे साथ, अगर हम किसी को बोले की हम रावण की लंका में खाना खाकर आए तो लोग हमें पागल ही मान लेंगे" उर्मी ने फुसफुसा कर चुप्पी तोड़ी।

"हाँ सही है, जंगल में मोर नाचा किसने देखा"

"अब ये मोर कहाँ से आ गया?" उर्मी ने हँसते हुए पूछा।

जवाब में मैं भी बस हँस दिया। बहुत देर के बाद दोनों के चेहरों पर थोड़ी सी हँसी आई।

रावण खाना लेकर आया और प्लेट्स सामने रख दी।

खाने में चपाती और मटर पनीर की सब्जी देखकर मन उछाले मारने लगा।

पनीर का एक पूरा पीस निवाले में लगाये मैं पहला निवाला मुँह में रखने ही वाला था कि तभी...

"झूठ अच्छा बोल लेते हो तुम दोनों" रावण ने कहा और तुरंत उठकर अपने कमरे में चल दिया।

"इसे हमारे झूठ का पता है, फिर भी हमे खाना खिला रहा है?" मैंने उलझन भरी नजरों से उर्मी से कहा।

"कहीं खाने में ज़हर तो नहीं मिला है?" उर्मी का एक और खौफ़नाक सवाल आया।

"इसका कुछ भरोसा भी नहीं किया जा सकता" मैंने कहा।

दोनों के निवाले मुँह के पास जाकर भी रुक गए थे।

कुछ देर सोचने के बाद मैंने कहा "देख उर्मी, मेरे घर के लौकी और टिंडे खाने से तो अच्छा है .मैं ये ज़हर मिले मटर पनीर खाकर मर जाऊं।"

"और वैसे भी मेरी तो यही इच्छा है कि मैं जब भी मरुँ मटर पनीर खाकर ही मरुँ"

कपकपाँते हाथों से मैंने निवाला मुँह में रख लिया।

खाना 'चावला' से मंगाया था शायद, डिलीशियस लगा। उर्मी भी चटकारे लेकर खाने लगी।

जब खत्म किया तब 'रावण' फिर आया "खाना कैसा लगा?" अबकी डाइनिंग रूम गूंज उठा, ये आदमी है कि मंदिर का स्पीकर।

"जी, जी अच्छा था..," उर्मी सकुचा के बोली।

"मैं अमूमन खुद के लिए चावल वगैरह उबाल लेता हूँ, या कभी बाहर से ही खाकर आता हूँ। तुम लोगों के बहाने मैंने भी आज प्रॉपर खाना खा लिया। खैर, अब तुम लोग चाहो तो बता सकते हो मुझे कि क्यों घर में घुसे थे? बाकि शक्ल से भले घर के लगते हो।"

मैं चौड़ा हुआ "देखिए सर, किन्हीं वजह से हम आपको नहीं बता सकते, किसी को नहीं बता सकते कि क्या बात है, पर आप कहें तो अभी यहाँ से जा सकते है।"

मैं समझने लगा था कि इसका हमें बाहर करने का कोई इरादा न था।

"नहीं.., नहीं.., मैंने ऐसा कब कहा। तुम दोनों आराम करो, घर से भागे हुए लगते हो, जब तक चाहो रुको, मुझे कोई हर्ज़ नहीं। बस..... पुलिस का चक्कर न हो"

वो आखिरी लाइन जैसे वो खुद से बोला "हो भी तो क्या है, मैं देख लूँगा! तुम दोनों आराम करो"

"जी नहीं... हम घर से..." उर्मी जवाब देना चाहती थी पर रावण मुड़ा और अपने कमरे की तरफ जाने लगा।

मैंने टोका "सर, एक बात बता कर जाइए"

वो ठिठका "पूछो" उसने आँखें तरेरी

मैं धीरे से बोला "आपको कैसे आभास हुआ कि हम उस कमरे में हैं? आप तो 5 बजे से पहले घर नहीं आते थे?"

"शाबाश, मुझे इस सवाल की उम्मीद थी" लाउडस्पीकर सी आवाज़ फिर गूंजी "कल शाम जब मैं घर आया तो मुझे लगा जैसे कोई यहाँ आया था, बाउंड्री पर सीमेंट के छिले के निशान मुझे अनजाने में दिखे, पर दरियों पर सिलवटे दिखी, फिर तुम नहीं जानते कि जिस कमरे में तुम लोग अभी थे, उस कमरे का पंखा बहुत पुराना है, बीसियों साल हुए उसे। वो बंद करने के बाद भी काफी देर तक रेंगता रहता है, कोई आधा घंटा लगता है उसे पूरी तरह रुकने में, जब मैं घर आया तो इत्तेफाकन मैं उस कमरे में गया, रामलीला वालों ने कुछ दरियां मंगाई थी मुझसे, तब मुझे वो पंखा बहुत कम लेकिन मोशन में दिखा। घर से कोई भी कीमती सामान गायब नहीं था, इसलिए जिज्ञासा हुई कि किसने इस घर को धर्मशाला समझकर अड्डा बनाया होगा। मुझे डर था कि कहीं यहाँ दारुबाजो ने महफ़िल न जमा ली हो। इसीलिए मैं आज बेटाइम आया हूँ" वो कुछ देर रुका, मैं अवाक उसे देखता रहा, उर्मी मुझे घूरती रही। एक लम्बे पॉज के बाद वो फिर बोला "बाकी जब किसी के कमरे में चोरी छुपे घुसो तो कम से कम चप्पल तो

बाहर न उतारो” इतना कहते हुए वो अपने कमरे में चला गया

अब हम दोनों एक दूसरे को देखने लगे। “ये तो समझदार बंदा लगता है यार” उर्मी बोली

“पर तू एक नंबर की बेवक़ूफ़ लगती है, चप्पल ही बाहर छोड़ आई” मैं फुसफुसाता हुआ भड़का

“अब क्या करूँ जब बचपन से ही ये आदत लगी है तो, और तू तो बड़ा सयाना है, पंखा घूमता छोड़ आया, डंडे से रोक देता” उसने भी मेरी फुसफुसाहट की नकल की

मुझे उसको जवाब देने से बेहतर लगा कि मैं देखकर आऊ उस कमरे के पंखे को, मैं जितनी तेज़ी से गया था, उतनी ही तेज़ी वापस आया और उर्मी की कलाई घड़ी देखने लगा।

‘क्या हुआ’ उसकी आँखों ने सवाल किया

“तीन बजने में पांच मिनट हैं, हम उस कमरे से दो बीस के करीब उठे थे।“ मेरे मुंह ने जवाब दिया

“तो?”

“तो ये कि पंखा तो अभी भी धीरे-धीरे रोटेट कर रहा है, ये कैसा पंखा है?” मैंने उसका हाथ छोड़ दिया

“वो छोड़, लेकिन इसको कैसे पता कि हम भागे हुए हैं?” उर्मी फिर बोली तो मैंने टोक दिया “छोड़ न, इतना मुश्किल भी नहीं, कोई बड़ी बात नहीं मुझे पहचान भी लिया हो।”

“अब क्या करें?”

“रात भर आँखे जलाई है हमने, चल अपने सपनों से बुझाते है।” मैं मुस्कुराया। वो भी मुस्कुराई।

“साले राइटर बन जा, बहुत ऊंचा जायेगा।” उसकी गाली में भी लाड़ लगा।

“काम वाली बाई बना हुआ हूँ, ऊंचा जाने का मतलब होता है छत के जाले निकालना”

वो मुस्कुरा दी।

हम फिर दरी पर ढेर हो गये।

मैं उसके सिर पर हाथ फेरने लगा। उसने आँखें बंद कर लीं और धीरे से बोली “आज का दिन खत्म न हो तो कैसा हो? यूँ ही दरियों पर पड़े रहें हम”

मुझे जाने क्या सूझा कि मैं धीरे से गुनगुनाने लगा “ओ साथी रे, दिन डूबे न... आ चल दिन को रोकें, धूप के पीछे दौड़ें, छाँव छूए न”

“वाह! तू गाने भी बनाने लगा अब?” उसने मेरी तरफ मुंह कर लिया।

“नहीं ये गुलज़ार साहब ने लिखा है”

“अच्छा जी” वो इतराई “और क्या लिखते हैं तेरे गुलज़ार साहब?”

“और मैं लिखता हूँ, कि -काश ऐसा हो, मेरे लब हों तेरे माथे पर, और चाँद को चूम लेने की मुराद पूरी हो”

वो मेरे और करीब आई और उसने अपनी आँखें बंद कर ली, होंठ ज़रा से खुल गए, मैंने उन होठों पर अपने होंठ रख दिए! मैं कुछ पल के लिए जन्नत तक चला गया!

शाम को रावण ने हमें झिंझोड़कर जगाया।

“क्या हुआ?” मैं अलसाया बोला।

“तुम दोनों को कुछ खाना-पीना नहीं है? मैं रामलीला मैदान जा रहा हूँ, मन हो तो साथ चलो, वहीं खा लेना।”

मैंने देखा मुझ पर और उर्मी पर एक शॉल ओढ़ाया गया था।

हम भी चलेंगे, मैं यहाँ रात में नहीं रुक सकती”

उर्मी ऐसे छोटी बच्ची बनके कहा कि रावण और मेरी दोनों की हंसी छूट गयी।

उर्मी और मैं स्टेज के ठीक सामने रामलीला का मंचन देख रहे थे, रावण की एंट्री होने में दस मिनट बचे थे।

तभी मेरी नज़रों में एक जानी-पहचानी सूरत आई, उसको देखते ही मेरी ख़ुशी का ठिकाना न रहा।

हिमानी स्टेज से काफी दूर खड़ी दिखी, उससे ज्यादा ख़ुशी इस बात से हुई कि वो अकेली आई थी, कोई घर का लगेज साथ न लाई।

मैं इतना खुश हुआ कि उर्मी को बताना तक भूल गया और उसकी तरफ लपका।

मैं अभी उसके पास पहुंचा भी नहीं कि एक लड़का उससे हाथ मिलाने लगा। मैं चौंका।

लड़का लम्बा-तगड़ा था, फिर देखते ही देखते दोनों गले मिले, मेरे तन बदन में आग लग गयी।

लड़का मेरी तरफ पीठ किए था, मैं उनकी तरफ बढ़ा। मन में सौ सवाल आये ‘अब ये कौन?’

‘हिमानी भी ऐसी ही निकली!’

‘हम बाकी क्या कम कमीने थे?’

बातों में मग्न उन्हें पता भी नहीं लगा कि मैं उनके पीछे आ खड़ा हुआ, मैंने उस लड़के के कंधे पर हाथ रखा।

वो पलटा।

उसका चेहरा देख मैं चौंका।

अध्याय 6 – स्यूसाइड काण्ड

देखने में वो शुरू से दानव लगता था। फर्क इतना था कि पहले इसकी दाढ़ी नहीं थी, अब जंगल उग आया है।

“कपि तू?” मैंने अपने से डेढ़ फीट ऊचे कंधे पर धौल जमाई।

“भाई कपि नहीं, कपिल। हमेशा मेरा नाम गलत लेता है।” उसने बचपने सी शिकायत की। कपि और मैं एक ही क्लास में पढ़ते थे, पढ़ता वो था मैं उसे कॉपी करता था। मेरे हर भले-बुरे काम में उसने मेरा हमेशा साथ दिया और मैंने भी हमेशा उसके हर टेढ़े-मेढ़े कर्मों में उसकी बाहें थामी थी। पर आज वो मेरी ही बहन को पटाने में लगा था या फिर पटा चुका था।

मेरे और कुछ बोल पाने से पहले ही, हिमानी कपि को साइड करके मेरे सामने आ खड़ी हुई।

“बहन” मैं तीन दिन बाद उसकी शक्ल देख रहा था, मुझे उम्मीद थी कि वो मुझसे गले लग के रोएगी... पर

“कहाँ था तू? पागल समझा है हमें?” इतना कहते ही एक थप्पड़ मेरे सूखे हुए गाल पर जड़ दिया।

“क्या.., क्या मतलब..” मैं हड़बड़ाया।

“कितनी फिक्र कर रहीं हूँ मैं तेरी, माँ भी परेशान है तेरे चक्कर में, एक तो तू गलती करे फिर तुझे कोई सज़ा दो तो तू....”

“बस बहुत बोल चुकी तू” मेरा पारा हाई होने लगा

“अब सुन, कौन-सी माँ काहे की माँ? बेटा कितना समझा उन्होंने मुझे? मासी ने जो कहा मान लिया, अज्जे ने जितना समझाया समझ लिया...अजय ने जानती है कितनी ज़लील हरकत की है?” मेरा चेहरा लाल होने लगा।

“जलील मतलब?” उसने भवें सिकोड़कर मासूमियत से पूछा।

“भाड़ में गया मतलब। और तू क्या बहन होने की दुहाई देती है मुझे? तू क्यों नहीं बोली तब जब मुझे रात 1 बजे घर से निकाला जा रहा था? क्यों नहीं रोका तूने मुझे जब मैं छत पर बीयर पी रहा होता था? बड़े हक से थप्पड़ मारा न तूने मुझे? कभी सोचा तूने कि एक अकेली तू है जिसने मेरे मुंह से उलटी नहीं सुनी तो क्यों नहीं सुनी?” मैंने फिर से फेफड़ों में सांस भरी “आज भी तू मुझे नहीं ढूंढ रही थी, तुझे अपने यार से मिलना था इसलिए तू यहाँ विचरने.....”

“शटअप जीतेंद्र” वो चिल्लाई।

“अबे क्या बोल रहा है यार जीतू” कपि अपनी फेमस मरमरी आवाज़ में बोला।

“ये और मैं, कपि और मैं सिर्फ और सिर्फ दोस्त है बस... आज गले भी इसलिए मिले की कोई चार साल बाद मिल रहें है समझा तू”

मैं चुप रहा।

“यार कैसी सोच रखता है तू भाई” कपि ने अपनी हांकी “जब तू मेरा भाई है तो हिमानी भी मेरी बहन जैसी ही हुई न यार”

मैं लाजवाब हो गया।

“कितनी गंदी सोच है तेरी जीतू... घिन्न आ रही है तुझसे” हिमानी ने जमीन पर थूका।

“बस कर....” मैंने बात बदलनी चाही- “छुटकू कैसा है?”

“तुझे क्या मतलब किसी से?” हिमानी इतनी ज्यादा भड़क गयी कि मुड़ी और चल दी। ये भी भूल गयी की वो कपिल से मिलने आई थी।

“किस्सा क्या है भाई?” कपि की मासूम सी आँखों ने सवाल किया।

“छोड़, तुझे क्या?” मेरे बदतमीज़ से मुंह ने जवाब दिया “यहाँ कैसे? कब आया?”

“बस यार कुछ दिन की छुट्टियाँ थीं, तो सोचा घर आ जाऊं और तुम सबसे मिल लूँ, तेरी उर्मी कैसी है?”

“मेरी उर्मी...” मुझे अपने साथ आए लगेज का ध्यान आया!

“क्या हुआ?” उसने फिर पूछा।

“यार चल उर्मी से मिलवाता हूँ” मैं कहते ही मुड़ा और दौड़ते हुए वहां पहुंचा जहाँ उसे छोड़कर आया था।

स्टेज पर रावण ‘हुहाहाहा’ करने में लगा था। मैं बैक स्टेज गया, उर्मी वहाँ भी नहीं मिली। मैं रावण के वापस आने का इंतज़ार करने लगा।

“ये वो ही आदमी है न जिसने अपने ही बीवी बच्चों को मार-मार के घर से निकाल दिया था?” कपि ने पूछा।

मैं हैरान रह गया “तुझे कैसे पता? तू तो बोर्डिंग स्कूलिंग क लिए शहर से बाहर था न?”

“तो क्या? मेरे घर वाले यहीं हैं, उनसे खबर मिलती रहती थी।”

बड़े खाली थे उसके घरवाले, खैर, मैंने जवाब दिया “हाँ ये है तो वही, पर लगता नहीं.....।”

“उर्मी कहाँ गयी?” उसने फिर पूछा।

“यार..... मैं भी उसे ही ढूंढ रहा हूँ।” मैं हताश हुआ।

“घर तो नहीं चली गयी?”

“घर जाती तो भी.... बता के तो जाती” और मैं क्या कहता।

“अरे क्या पता तुझे न पाकर वो चली गयी हो।”

(अब मैं उसे क्या बताता) “हो सकता है, खैर... तू बता कितने दिन है यहाँ?” मैंने बेमन से बात बदली।

“अभी तो हूँ दो हफ्तें..”

“यहाँ आता रहियो यार.. इसी बहाने मिलता रहेगा।”

“क्यों तू घर पर नहीं मिलेगा?”

“नहीं, कुछ दिन तो नहीं.....”

“क्या हो गया ऐसा? डिटेल में बता”

“हिमानी से पूछ”

“अबे हां यार, वो तो घर पहुँचने वाली होगी”

“तो जल्दी जा भाग कर और कोशिश करियो कि वो साथ आ जाए कल, मुझे माफ़ी मांगनी है।”

“ठीक है भाई, अभी तो निकलता हूँ। तू भी उर्मी को बुला लियो”

मैंने धक्का मार के उसे विदा किया।

रावण स्टेज से उतर गया। उसका किरदार पौज़ हुआ। सीन चेंज होने लगा। मैं फिर से बैक स्टेज गया।

‘घर तो नहीं हो सकती थी। नहीं जा सकती। फिर कहाँ गई होगी?’ मैं उर्मी के बारे में सोचने लगा।

तो कहाँ गयी।

“क्या हुआ?” तीखी आवाज से मेरा ध्यान टूटा और मैंने आवाज़ की दिशा में देखा।

रावण खड़ा था।

“उर्मी... उर्मी नहीं मिल रही।” मैं रुआंसा होकर बोला।

“क्यों तुम तो उसी के साथ में थे न?”

“हाँ... पर मेरी बहन मुझे दिखी तो मैं दो मिनट....”

“दो मिनट? पिछले पंद्रह मिनट से तो मैंने नहीं देखा तुम्हें, क्या बोल के गये थे तुम उर्मी को?”

“मैं बोलकर तो....कुछ भी नहीं... गया” मैं अटका।

“तो ऐसे ही वो भी बोल कर नहीं गयी।” रावण शांति से बोला।

“अरे, पर गयी कहाँ?”

“कहीं नहीं गयी, स्टेज पर देखो” रावण ने इशारा किया।

मैंने ध्यान से देखा, मुझे स्टेज के आसपास भी वो दिखाई न दी।

“कहाँ है सर?”

“वो पेड़ देख रहे हो कार्ड बोर्ड का?”

“हाँ”

“वो उर्मी है!”

“उर्मी कार्ड बोर्ड बन गयी?” मैंने चौंककर पूछा

“उर्मी पेड़ बन गयी” रावण ने तसल्ली से जवाब दिया “फ़िल्में कम देखा करो”

“क्या?” मेरी जान में जान आई “पर वो वहां क्यों गयी?”

“उसी से पूछना। जब मैं दुबारा स्टेज पर जाऊंगा तो उसे भेज दूंगा।”

“ठीक है”

मैं इंतज़ार करने लगा। जाने कितनी तरह के ख्याल मेरे मन में आ गये थे, लगा था जैसे अब कभी न मिलेगी। तब तक देखा सामने से एलईडी दांत चमकाती आ रही थी।

“कहाँ थी तू? किसने कहा था पेड़ की जड़ों में घुसने को?” मैं फिक्रमंद होकर बोला

“तेरी वजह से घुसी हूँ, क्या जरूरत थी तुझे कपिल से मिलने की?” वो वैसे ही खिलखिलाते हुए बोली

“तो तूने उसे देखा था?”

“तो और क्या, मैं पेड़ बनी थी, गांधारी नहीं।”

“वैसे तो पेड़ के भी आँखे कहाँ होती है पर, तुझे छुपने की क्या ज़रुरत थी?”

“बेवक़ूफ़ लड़के, मेरी माँ तक ये बात पहुँच जाती कि मैं रामलीला में डोल रहीं हूँ, फिर तू वाकई सूरदास है, तुझे ग्राउंड के बैकग्राउंड में तेरी मासी और उनके बच्चे नहीं दिखे बैठे हुए?”

मैं घबरा गया फिर बात बदलने के लिए बोला “तेरी माँ तक तो खबर अब भी....” मेरे आगे बोल पाने से पहले ही रावण आ गया।

“चलो दोनों जन, घर चलो” वो इतने अधिकार से बोला जितने अधिकार से कभी मेरे फूफा ने भी नहीं बोला था।

रास्ते में उसने खाना लिया।

खाने के बाद हमने अपनी कहानी बतानी शुरू करी, मैंने साफ़-सुच्चा किस्सा बयां कर दिया। पर उर्मी ने सिर्फ इतना बताया कि उसका मम्मी से इतने बड़े मैटर पर झगड़ा हो गया है कि सुलह होनी मुश्किल है।

फिर हम पूछने बैठ गये कि क्या वजह थी जो उसकी फैमिली छोड़ गयी।

“दुनिया सोचती है कि मैं जल्लाद था, अपनी बीवी को मारता था। तुम दोनों भी यही सोचते होगे” उसने हम दोनों को घूरते हुए कहा।

“नहीं....नहीं तो...हम ऐसा बिलकुल नहीं सोचते” उर्मी ने जवाब दिया। मैं चुप रहा क्योंकि इतनी सफाई से झूठ बोलना मेरे बस के बाहर था।

“सोचते भी हो तो कोई नई बात नहीं”

“पर हुआ क्या था सर?” हम दोनों ने एक साथ पूछा।

“दो बातों का झगड़ा था बस, आज उर्मी तुमसे बीस मिनट को दूर हो गयी तो तुम तिलमिलाए न? तुम उर्मी को बताकर नहीं गये तो उर्मी को बुरा लगा न?”

“हां, लगा तो” हम दोनों आगे पीछे बोले।

“बस ऐसे ही एक रात, मैं घर लेट आया पर वो घर पर न मिली। पूरे तीन घंटे तक मैं और मेरी बेटी उसका इंतज़ार करते रहे”

वो कुछ ठहरा, अपनी दाई आँख पोंछी, एक सुबकी ली और बोला “पर जब लौटी तब आते ही झगड़ पड़ी, मेरे पूछने की देर थी कि कहाँ से आ रही हो, उसका हल्ला चालू हो गया। काफी समझाया तब जा कर सोई। पर वो एक सवाल मेरे मन में बैठ गया। फिर तो मैंने जब भी पूछा कि उस रात तुम कहाँ थी? तब-तब ‘क्लेश’ में जवाब मिला। एक रात इन्तेहा हो गयी। उसने मेरी बेटी, प्रिया पर हाथ उठा दिया। खफ़ा मुझसे थी, गुस्सा उस मासूम पर उतारने लगी, मुझसे रहा न गया। मेरा भी हाथ उठ गया और.....”

वो बोलते-बोलते चुप हो गया। पर आँखे बहने लगीं।

“आखिरी रात थी जो हम साथ थे, फिर उसने अलग रहने की ठान ली। कुछ एक अच्छे रिश्तेदार भी थे, जिन्होंने तलाक कराने में अच्छा साथ दिया। बस तबसे बुरा बना बैठा हूँ।”

हम दोनों अवाक उसे देखते रहे।

क्या सोचा था क्या निकला।

“आज तुम दोनों को देखते ही समझ गया था मैं कि घर से भागे हो, बस तब लगा था कि प्यार का चक्कर है पर... और तुम्हें तो मैं पहचान गया था जीतू, तुमने कई बार मेरे घर के कांच तोड़े है, उनके पैसे अभी तक बकाया है” वो जरा-सा मुस्कुराया।

मैं भी मुस्कुरा दिया।

“ये मैंने तुम्हें इसलिए बताया कि कभी अपने रिश्ते में पर्दादारी मत रखो। ये जख्म बना लेती है। दूसरा, अपनी फ़िक्र भले न करों, पर दूसरे की फ़िक्र की कद्र ज़रूर करों। सिर्फ इसलिए बता कर जाओ कि अगला फ़िक्र करता होगा। ...और तीसरा, माँ बाप से अलग होने से पहले ये सोच लो कि तुम उनसे अलग होने की ठान रहे हो जो अपनी सुबह की शुरुआत तुम्हारा चेहरा देखकर करते हैं” उसने ठंडी आह भरी “कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे कारण उनकी रात की कभी सुबह न हो।”

मैं और उर्मी काफी देर तक सोचते रहे। मैं तो ये सोचकर हैरान था कि किसी ने इतनी लम्बी स्पीच दी पर फिर भी मैं बीच में न बोला, बीच तो छोड़ो आखिर में भी न बोला। रावण ने एक कमरा और खोल दिया, कोई आधे घंटे की सफाई के बाद वो सोने लायक हो गया।

'अपनी फ़िक्र भले ही न करों, पर दूसरे की फ़िक्र की कद्र जरूर करो' ये बात मेरे दिल-दिमाग में बजने लगी।

"यार ये कितनी सही बात कह गये न आज" उर्मी मेरे हाथ पर लेटती हुई बोली।

"हाँ.., दिल को छू गयी।"

"यार, सुन, कल मम्मी से मिलने जाना है मुझे"

मैं क्या बात समझा था और इसने क्या दिल से लगा ली।

"तू अकेली ही जाईयों, मुझे नहीं जाना अपने घर।" उसने कोई जवाब नहीं दिया। रात सुलगती गुज़र गयी।

सुबह उर्मी ने जो पहली आवाज़ की वो थी 'मम्मी'

"चली जा न मम्मी पास, किसने रोका है?" मैं चिढ़कर बोला, मानों वो मायके जा रही हो।

"तू भी चल..."

"मतलब ही नहीं होता कोई....."

"क्यों..."

"तुझे पता है क्यों?" मैं ढीठ बना रहा "पर एक बात सोची तूने? तेरी माँ ने तुझे ढूँढने की भी कोई कोशिश नहीं की, क्यों करती? आखिर उनको तो आराम...."

"जीतू बकवास न कर" वो चिल्लाई

फिर हम दोनों में कोई बात न हुई।

उसके घर के नीचे तक मैं भी उसके साथ आया, रावण सुनकर खुश हुआ, उसके मन की हो गयी।

उर्मी ने मुझे एक बार पीछे मुड़कर देखा, फिर ऊपर चली गयी।

बोलकर गयी थी कि शाम को मिलेगी रामलीला मैदान में, पर जाने क्यों मुझसे रहा न गया। अजीब सा डर सताया कि कहीं ये पहुँचे और अजय घर पर ही हो। दस मिनट बाद मैं भी हौले-हौले ऊपर चला गया।

दाएं-बाएं देखा तो उर्मी अपनी माँ के कमरे के पास पड़ी हुई थी।

मैं दौड़ता हुआ उस तक पहुंचा।

उसके सर को अपनी गोद में रखा।

“क्या हुआ उर्मी....” इतना कहते-कहते मैं रुक गया। वजह मेरी समझ आ गयी। बल्कि वजह दिख गयी। पंखे पर झूलती हुई।

अध्याय 7 – किडनैप काण्ड

“शिल्पी... शिल्पी!” मैं जोर जोर से चीखा। उसकी बहन आज भी नहीं दिख रही थी।

जिस कुर्सी पर चढ़कर उर्मी की मां ने फांसी लगाईं थी, मैं उसी पर चढ़ा और गले पर लगी गांठ खोलने लगा तभी किसी के दौड़ते क़दमों की आवाज़ सुनाई दी।

“कौन है?” शिल्पी चिल्लाई।

मैंने मुड़कर देखा। मुझे देखकर उसके चेहरे पर कई रंग चढ़ने लगे।

“शिल्पी, इधर आओ और माँ को उतारने में मदद करो”

वो अन्दर तो आ गयी पर हैरानी उसके चेहरे से न हटी, वो कभी दहलीज पर बेहोश पड़ी उर्मिला को देखती तो कभी पंखे पर लटकी माँ को, फिर बोली “तुम यहाँ कैसे आ गए?”

मैंने सवाल को इग्नोर किया “इनके पाँव पकड़कर थोड़ा-सा उचकाओ”

उसने ऐसा ही किया। गाँठ फिर भी न खुली।

“मैं कैंची दूँ?” शिल्पी ने सुझाया।

“हां मगर जल्दी”

वो दौड़ती हुई किचन की तरफ भागी, अगले ही पल कैंची लिए वापस आई।

उसने फिर माँ को उचकाया।

'संभालना' मैं बोला और चुन्नी काटा दी।

सारा वजन शिल्पी पर आया लेकिन मैंने बीच में संभाल लिया। सँभालने में हल्की-सी कैंची माँ के हाथ पर चुभ गयी। मुझे धीमी सी ‘सिसकी’ सुनाई दी। मैं चौका! मेरे चेहरे पर हैरानी के भाव पल भर को आए और तुरंत ही गायब हुए।

“शिल्पी ये जिंदा हैं अभी, डॉक्टर को बुलाओ” मैं उन्हें पलंग पर लिटाने लगा।

“मैं डॉक्टर को बुलाने ही गयी हुई थी जब.... आप पीछे से आ गये” वो गले में बंधी चुन्नी खोलने लगी।

“मतलब?” मैं हैरान हुए बिना न रह सका “कब लगाई थी फांसी?”

“ये तो पता नहीं पर... कोई दस मिनट पहले मैंने देखा आकर ...तो मम्मी पंखे से....” उसने बात बीच में ही छोड़ दी और ऐसा मुँह बनाया मानों अभी रो देगी।

“एक मिनट एक मिनट... उस वक़्त उर्मी कहाँ थी?”

“उर्मी और मैं झगड़ रहे थे, मम्मी दरवाज़ा बंद किये हुए थीं. जब खोला तो देखा....” बोलते-बोलते वो रुक गयी।

“तुम मुझे उतरती क्यों नहीं दिखाई दी?”

“आपकी नज़र खराब होगी”

“वो तो नहीं है, खैर छोड़ो.., जब दरवाज़ा बंद था तो खोला कैसे?”

“अंदर से कुण्डी नहीं लगी थी।”

“डॉक्टर कितनी देर में आयेंगे?” मेरे सवाल रैपिड फायर थे।

“दस मिनट के लिए कहा था” उसने माँ के पैर सहलाने शुरू कर दिए। मैं उर्मी के पास पहुंचा। जग में से पानी हाथ में लेकर दो चार छींटे मारे।

उर्मी ने आँखे मिचमिचाई।

“मम्मी... मम्मी…” फिर चिल्लाने लगी।

“शांत रह...अब” मैं बोला “मम्मी ठीक है। डॉक्टर बुला लिया है तो आता होगा।”

उसकी नज़र अपनी माँ पर पड़ी। वो जाकर मां के सीने से लिपट गयी। तुरंत रोने लगी। डॉक्टर तो बाद में आता, पहले मुझे अजय आता दिखा।

मैं हैरान रह गया। इतनी दीदादिलेरी।

पर उनके पीछे-पीछे डॉक्टर भी आता दिखा।

“तू यहाँ क्या कर रहा है?” उन्होंने बिना मुझ पर नज़र डाले पूछा। मैं कमरे से बाहर आ गया।

“तेरा ही इंतज़ार कर रहा था। फिर माँ ने मुझे सिर्फ घर से निकाला है, मोहल्ले से नहीं, पर तू यहाँ क्या कर रहा है?”

“तेरी इन्हीं बदतमीजी की वजह से तुझे निकाला है, तुझसे मतलब? मैं कुछ भी करूँ यहाँ?” वो मेरी तरफ नफरत से देखने लगा।

“सही कहा, मैं बदतमीज हूँ इसलिए बाहर हूँ। बदचलन होता तो घर के अंदर होता” उसने मुझे घूरा। मैंने भी आँख में आँख जमा ली।

“मुझे शिल्पी ने बुलाया है” उसने जैसे सफाई सी दी।

“शिल्पी ने तुझे क्यों बुलाया है? जबकि वो तो डॉक्टर बुला रही थी?”

“उसने मुझे बुलाया है ताकि मैं डॉक्टर बुला सकूँ? और जैसे उर्मी तेरी दोस्त है वैसे शिल्पी मेरी दोस्त है! हर बात पर तुझे शक़ होता है, जबकि तू खुद भरोसे के काबिल आदमी नहीं। हुह!” उसने औरतों सी हुंह भरी

“लगता है पिछली मार भूल गया है तू” मैंने मुस्कुराते हुए बाहें मोड़नी शुरू की।

वो दांत पीसता डॉक्टर के पास चला गया।

मुझे कुछ न सूझी तो शिल्पी को ही आवाज़ लगा दी “शिल्पी इधर आ”

वो पास आई “बोलो”

“जब तूने दरवाज़ा खोला था, तब कुर्सी लुढ़की पड़ी थी या सीधी थी?”

“क्यों?” उसने ‘बेतुका सवाल’ पूछा।

“कुर्सी को भी हॉस्पिटल भेजना है, तू बता न”

“पहले वजह सही-सही बताओ” वो भी अपनी बहन-सी ढीट निकली।

“ओफ्फो, वजह इतनी ही है कि अगर कोई फांसी लगाए और कुर्सी गिर जाए तो आने वाले सात दिनों में उसके घर में एक और मौत हो जाती है, ऐसा तांत्रिक तुबाका कहते है” मैंने फिर बकवास परोसी।

“वो कौन है?” उसने भवें उचकाई।

“देख तूने एक सवाल पूछा, मैंने एक जवाब दिया। अब मेरे सवाल का जवाब दे फिर दूसरा पूछियो।”

“सच कहूँ तो मुझे याद नहीं, कुर्सी खड़ी थी या लेटी।”

मैंने सोचने की एक्टिंग की, फिर बोला “अच्छा ये तो याद होगा कि कुर्सी उठाई थी कि नहीं?”

“नहीं..... उठाई तो नहीं थी।”

“गुड, मैंने भी नहीं”

“पर वो तांत्रिक कौन...” मैंने उसको अनदेखा किया और कमरे में पहुँचा। उसकी माँ की आँखे खुल गयी। ‘कितना मुस्तैद’ डॉक्टर है। वाह’ मैंने मन ही मन सोचा।

मैं फिर बाहर आया। “शिल्पी?”

“क्या है?” वो रुखाई से बोली

“अजय यहाँ कैसे आ गया?”

“जब मैं... दौड़ती हुई नीचे उतरी तो वो दरवाज़े के बाहर ही खड़ा था... इसलिए वो बोला मैं खुद ही डॉक्टर को बुला लाता हूँ”

“तूने उसको बताया कि तेरी माँ ने फांसी लगाई थी?”

“नहीं.., मैंने बस ये बोला कि उन्हें डॉक्टर चाहिए”

“गुड, तुझे ये न सूझा की पहले खुद उन्हें उतारू बाद में डॉक्टर-पुलिस-पड़ोसी को खबर करूँ?”

“कैसे करती? आपने भी तो उतारने की कोशिश की न? अकेले कैसे करती? बहन तो देखते ही चक्कर खा गयी।”

मैं कुछ ठिठका, मेरी नज़र अजय पर जम गयी, मैं शिल्पी से आगे बोला “शिल्पी अमूमन आत्महत्या के बाद लोग ये मानकर चलते हैं कि फांसी लगाने वाले की ‘जय हो’ हो गयी, तो डॉक्टर बुलाना इतना ज़रूरी नहीं होता, वो आखिर में आता है वो भी पुलिस के बुलाए, फिर तुझे क्यों सूझा? तू अजय से मदद ले सकती थी मम्मी को उतारने के लिए”

“मुझे… मुझे ये समझ नहीं आया कि क्या करूँ? तो सोचा क्यों न..” उसने बात बीच में छोड़ दी।

“वाह! तुझे समझ नहीं आया तो सोचा डॉक्टर कम से कम समझाने के तो काम आएगा ही, फिर एक बात और”

“वो भी बोलो” शिल्पी खिसियाने लगी

“तू मुझे नीचे आती तो दिखाई नहीं दी, फिर तू आई कब?”

“मैंने कहाँ न तुम्हारी निगाह में खराबी होगी, मैं आई थी” वो ढीट बन गयी

“ठीक, मुझे चश्मे की ज़रुरत भी है, पर तेरी आँखे तो परफेक्ट है रे लड़की, तुझे मैं सीढ़ियों के दरमियान खड़ा दिखाई नहीं दिया? और तुझे तो सीढ़ियों पर ही अजय मिल गया था न? उसको भी मैं नहीं दिखा? मुझे तुम दोनों नहीं दिखे, अब कौन मिस्टर इंडिया की घड़ी पहने था? तुम दोनों या मैं?”

मेरी बातें सुनकर उसके पास कोई जवाब न था।

पर मेरे पास एक और सवाल था “तू अजय की दोस्त है? वाकई?” मैंने हैरानी से आँखें भी बड़ी कर ली

“हाँ हूँ तो?” मुझे मेरी टक्कर की बदतमीज़ी सा जवाब मिला “जब तुम और बहन जब दोस्त हो सकते हो तो हम क्यों नहीं?”

“मैं और उर्मी तकरीबन बराबर उम्र के हैं, जबकि अजय मुझसे दो साल बड़ा है और तू उर्मी से तीन साल छोटी तो...”

उसने बात बीच में ही काटी “दोस्ती में छोटी-बड़ी उम्र की परवाह छोटे लोग करते हैं”

“वो तो ठीक पर तुम दोनों को मैं क्यों नहीं दिखाई दिया सीढ़ी के पास खड़ा हुआ?” मैं वापस उसी सवाल पर आ अटका

“क्या दिक्कत है तुम्हें, क्या फर्क पड़ता है इन बातों से, मुझे नहीं पता क्यों नहीं दिखे बस”

मैं कुछ रूककर फिर बोला “कहीं ऐसा तो नहीं कि नीचे तो उतरे तुम सब पर सीढ़ियों से नहीं? खिड़की से?”

उसने मेरी बात अनसुनी कर दी “माँ को होश आ गया है, मैं अभी आती हूँ” वो अंदर कमरे में जाने को हुई तो मुझे मेरी ‘माँ’ आती दिखाई दी। यहाँ पंचायत बढ़ने वाली थी। मैंने शिल्पी को जबरदस्ती अपने पास खींचा और उसके कान में कहा “उर्मी जैसे ही फ्री हो उसको बोल शाम ‘मंचन’ में मिले”

वो ‘ठीक है’ कहती, बाकायदा धक्का देकर मुझसे अलग हुई।

माँ ऊपर आ चुकीं थी। मैं नीचे उतरने की फ़िराक में था।

“तू यहाँ क्या कर रहा है?” माँ ने आते ही रौब झाड़ा।

“फांसी लगानी सीख रहा था, जाने कब ज़रुरत पड़ जाये”

“बकवास न कर, जा घर जा तू” मां ने डपटे हुए कहा “जाने कबसे हिमानी ने कूड़ा नहीं फेंका है रसोई का”

“घर पर ही तो हूँ” मैं उतरने लगा।

“अपने घर जा.....अपने” माँ ने मेरा हाथ पकड़ा।

“अपना घर होता तो ज़रूर जाता माँ” मैंने हाथ झटके से छुड़ाया और भाग निकला। जब मैं गली के मुहाने पहुँचा तो रामू भैया भी उर्मी के घर में घुसते दिखे। मैंने एक बात नोट की ‘फांसी लगाना ख़ासा फेमस होने वाला कृत्य है; अगरचे आप मर न पाओ तो’

मैं मंचन में वक़्त से पहले पहुँच गया। सारा दिन लंका में सोते गुज़रा। पर हर करवट पर नींद खुल रही थी। उर्मी को इतना मिस कर रहा था जितना डेडपूल ने वेनेसा को न किया होगा।

जबकि उर्मी तो जिंदा भी थी।

मेरे कंधे पर किसी ने हाथ रखा। मैं मुड़ा तो देखा कपि है।

“कैसा है भाई?”

मैंने कोई जवाब नहीं दिया।

रामलीला का मंचन शुरू होने लगा। पर्दा उठा। हम दोनों ने नज़रें मंच पर जमा ली।

मंच पर द्रश्य बेहद ख़ूबसूरत था। फूलों और फलों से सुशोभित संसार की सबसे ख़ुशनुमा अशोक वाटिका, लेकिन वहां कुछ मुरझाया हुआ था तो वो था सिर्फ सीता का चेहरा।

सीता श्रीराम के वियोग में वाटिका के विशाल वृक्ष के नीचे बैठी है और चेहरे पर दुख और वियोग की लहरें मँडरा रही है। तभी अनेकों आभूषणों से सुसज्जित राक्षसराज रावण ने अपने चेहरे पर घमंड और रौब लिए वाटिका में प्रवेश किया।

मुझे अपनी हालत सीता मैया-सी लगी।

"हा हा हा हा" मंच से रौबदार आवाज़ गूँजी और पूरे रामलीला मैदान में शांति पसर गई।

सीता जो अपने पति के वियोग में पहले से उदास बैठी थी, उसने भयभीत होकर अपने आप को सिकोड़ लिया।

लंकापति रावण पास जाकर हँसता हुआ बोला “हे सीते! मुझे देख कर तू भयभीत ना हो। स्मरण रहे, तेरी इच्छा के बिना मैं कदापि तेरा स्पर्श नहीं करूँगा।"

सीता शांत रही।

दूसरी ओर मैं तो चाहता था कि उर्मी आए और मेरे मना करने के बावजूद मेरे बाल खींचे, मेरे कान उमेठे या मुझे बेवजह चूम ले!

"तू संसार की सर्वश्रेष्ठ सुंदरियों में से एक है, अपने इस सौन्दर्य और यौवन को एक तुच्छ मनुष्य के पीछे नष्ट मत होने दे। राम का मोह छोड़ दे। मैं तुझे अपनी पटरानी बनाकर रखना चाहता हूं।"

मद में अँधा रावण एक बार फिर बोला।

“हे लंकेश! तुम्हारे जैसे विद्वान के लिये ये ही उचित होगा कि तुम अपनी मर्यादाओं का उल्लंघन न करो। मुझसे अपना मन हटा कर अपनी रानियों से प्रेम करो"

"तू मेरे ऐश्वर्य, सुख़ सम्रद्धि को देख और सोच उस कंगाल वनवासी ने तुझ जैसी सुंदरता की मूरत को क्या दिया है। अब राम के पास न राज्य है, न धन है और सेना के नाम पर वानरों की टोली.... हा हा हा"

‘राम ने वानर सेना तो बाद में बनाई थी, अपहरण के टाइम तो उन्हें खुद नहीं पता था कि कैसे छुड़ाया जाए,
फिर रावण को वानर सेना के बारे में....?’ मुझे रामलीला के स्क्रिप्ट राइटर के ‘संजय लीला भंसाली’ होने पर शक हुआ।

“हे लंकेश! यदि तुम मान लो कि तुमने अज्ञानतावश मेरा अपहरण कर अपराध किया है और अपराधबोध के कारण मुझे श्रीराम को लौटा दो तो मैं तुम्हें उनसे क्षमा करा दूँगी... पर यदि तुम अब भी अपनी हठ पर अड़े रहे तो तुम्हारा और समस्त कुल का विनाश निश्चित है।" सीता ने कड़े शब्दों में जवाब दिया।

"विनाश तो उस तुच्छ मनुष्य राम का और उसकी वानर सेना का तय है, तीनो लोकों के देवता तक हमारे नाम से कांपते है और राम तो सिर्फ एक साधारण मनुष्य है।" रावण क्रोध से गुर्राया।

दूसरी बार वानर सेना का ज़िक्र, शायद मैं ही रामलीला में अपडेट नहीं हूँ, राम जी सेना लेकर श्रीलंका पहुँच चुके होंगे। या उन्होंने चलने से पहले whatsapp स्टेटस लगा दिया होगा।

“रावण! तेरी वीरता और पराक्रम का पता तो मुझे उसी दिन चल गया था, जब तेरे पास इतनी विशाल सेना, बल और तेज होते हुये भी तू मुझे चोरों की भाँति मेरे पति की अनुपस्थिति में चुरा लाया था।"

सीता ने कटाक्ष किया।

सीता के मुख से ऐसे अपमानजनक वचन सुनकर रावण का सम्पूर्ण शरीर क्रोध से थर-थर काँपने लगा।

ऐसे तो मैं कांपता हूँ जब रामू भैया और अजय मुझे कलपाते हैं।

“जिस प्रकार भी हो, सीता को मेरे वश में होने के लिये विवश करो। यदि वह प्रेम से न

माने तो इसे मनचाहा दण्ड दो।” रावण ने राक्षसियों को सम्बोधित करते हुए कहा और वाटिका से प्रस्थान किया।

पर्दा गिरता है।

मैं कुछ देर सब कुछ भुलाकर रामलीला में डूब चुका था, पर उर्मी का अभी तक कुछ अता-पता नहीं था।

“तेरे पास मोबाइल है?” मैंने कपि से पूछा

“हाँ है”

“उर्मी का नंबर मिला”

उसने मिलाया। किसी ने नहीं उठाया। फिर मिलाया। फिर मिलाया। जवाब नदारद। फिर मिलाया तो स्विच ऑफ आने लगा।

“उसके पास तेरा नंबर है क्या?” मैंने पूछा

“होना तो नहीं चाहिए, पर क्यों?”

“अगर होगा तो वो नहीं उठाएगी” फिर मैंने सोचा ‘कल भी वो कपि को देखकर गायब हो गयी थी। शायद आज भी यहीं होगी लेकिन छुपी बैठी है। पर कल तो घर पता न लग जाए इस बात का डर था, आज क्या डर?

“सुन, तूने उर्मी का घर देखा है न?” मैंने फिर सवाल दागा

“हां क्यों?”

“जा उसके घर, उसकी छोटी बहन मिलेगी शिल्पी, उससे पूछकर आ और उसकी मम्मी की तबियत भी जान लियो।”

“उसकी मम्मी को क्या हुआ?”

“टाइम न वेस्ट कर डायलॉगबाजी में, उनकी मम्मी का गला लम्बा हो गया है, फिर क्या पता हिमानी भी मिल जाये, सामने ही रहती है”

हिमानी का नाम सुनते ही वो सरपट भागा।

मैंने सारा तम्बू-बम्बू छान मारा। कहीं न मिली।

मैं वहीँ आकर बैठ गया। रामलीला खत्म होने को हुई पर कपि वापस न लौटा। मैं रावण के पास गया तो उसने मुरझाए चेहरे के लिए सवालिया निगाह उठाई?

मैंने कंधे उचकाकर जवाब दे दिया। फिर मैंने स्कूटर की तरफ देखा, वो समझ गया कि मुझे आज भी उसी के घर जाना है। वो बिना कुछ बोले अंदर गया और कपड़े बदलकर आया और स्कूटर किक करने लगा। हम लेट हो गये थे। खाना मिलना मुश्किल था। जैसे-जैसे रामलीला बढ़ रही थी, वैसे-वैसे रावण का रोल बढ़ता जा रहा था। मैंने तय किया कि कल के दिन मैं मंचन में आऊंगा ही नहीं, लंका में बैठकर ही कुछ सोचता रहूँगा, उर्मी को आना होगा तो रावण उसे बता ही देगा, बाकी वो अब क्यों आएगी? उसके पास घर

है। घर, कितनी अच्छी चीज़ होती है ये, जब मैं घर से बाहर हुआ तो मेरे पल्ले पड़ी।

मैं और रावण लंका में घुसे, जैसा सोचा था, वैसा ही हुआ। ढाबों पर खाना खत्म हो चुका था।

पर आज का रावण बड़ा जुगाड़ू निकला, बीस मिनट के अंदर-अंदर खिचड़ी और पुलाव के बीच का कुछ खच्चर सा बना कर डाइनिंग टेबल पर सजा दिया। फिर तकरीबन प्यार भरे ऑर्डर से बोला "खाओ"

बस ये एक शब्द, इसके अलावा खाना खाते वक़्त हमारी कोई बात नहीं हुई।

मेरी झूठी प्लेट भी उसी ने सिंक में रखी।

वो बर्तन धोकर आया और फिर उसी टोन में बोला "चलो सो जा के"

मैं उस कमरे में पहुँचा जहाँ अभी कल ही तो मैं और उर्मी साथ-साथ लेटे थे। मैं उसके बालों से खेल रहा था। उसने प्यार में मुझे एक करारा हाथ मारा था जो इत्तेफाकन बहुत जोर से लगा था।

'तुम बिन जीवन, कैसा जीवन' मेरे मन से आवाज़ आई। इतनी कमी तो मैंने कभी रुपये-पैसों की महसूस न की। जबकि मेरा मानना था कि उससे ऊपर कुछ होता ही नहीं ज़िन्दगी में।

मेरा मन हुआ कि मैं अभी घर भाग जाऊं और छत पर बैठकर उसके आने का इंतज़ार करूँ। एक बजने को थे, कंगन सी खनकती हँसी मेरा इंतज़ार करती होगी। क्या वाकई? सच में वो मेरा इंतज़ार करती होगी? मुझे अपनी करतूत पर अफ़सोस हुआ, बेकार ही अजय को इतना मारा, कोई और तरीका इस्तेमाल करना था उसे बर्बाद करने का, मार-धाड़ से अपना ही नुक्सान किया।

मैं पलंग पर बैठा हुआ था, अमूमन लोग इस शै पर लेटा करते हैं पर मैं बैठा था। मेरा मन तो उसपर उंगली रखने का भी नहीं था। उस कमरे की खिड़की से बाहर देखने पर कुछ ख़ास दिखाई नहीं देता था। आंगन में नीम अँधेरा था, स्ट्रीट लाइट की हल्की सी पीली रौशनी आंगन को बस 'बाथरूम' जाने लायक रौशनी प्रदान कर रही थी।

मुझे तभी किसी साये का आभास हुआ। लगा कोई जल्दी से गया हो वहां से।

कौन?

मैं अलर्ट हो गया, मुझे लगा कि कोई चोर है, जैसे मैं बाउंड्री फांद कर आया था वैसे ही चोर भी आ गया।

मैं पलंग के नीचे अपनी चप्पल ढूँढने के लिए झुका, कमरे का दरवाज़ा हल्का सा खुला था। चप्पल एक मिली, एक शायद पलंग की गुफा में घुस गयी थी, मैं तब भी नहीं समझ पाता था, अब भी नहीं समझ पाता हूँ कि दोनों चप्पलें एक साथ उतारो तो कैसे ये मिया-बीवी सा झगड़ा करके अलग-अलग कॉन्टिनेंट में चली जाती हैं।

आख़िरकार दूसरी चप्पल मिली

"सोए नहीं अभी तक तुम"

मेरा दिल रुक गया! रूह कांप गयी!

पीछे मुड़कर देखा तो कमरे के दरवाज़े पर एक साया था, आवाज़ की गर्जन बता रही थी कि रावण का साया था।

पूरे तीस सेकंड लगे मुझे अपनी बंद धड़कन का जेनेरेटर चालू करने और उखड़ी साँसों को काबू करने में!

“आपको शर्म नहीं आती सर” मैं जैसे-तैसे दिलपर हाथ रखकर बोला “बच्चे को डराते हुए”

“हाहाहा” रावण स्पेशल हंसी गूंजी, उसने कमरे की बत्ती जला दी “मुझे क्या पता था तुम इतने कमज़ोर दिल के हो” कुछ रुककर वो फिर हंसा।

“आराम से, मोहल्ला जाग जायेगा आपकी हँसी से” अब मैं भी मुस्कुराया। मैंने पहली बार स्टेज के अलावा उसकी जेन्युइन हंसी सुनी और देखी, जो वाकई अपने आप में अनोखा अनुभव था।

“क्या हुआ सो क्यों नहीं रहे?” वो बेड पर बैठने के बाद एक तकिया खींचते हुए बोला

“नींद नहीं आ रही” मैंने रटा हुआ जवाब दिया।

“नींद नहीं आ रही या उर्मी की याद आ रही है?” उसने सच उगलवाया

“उर्मी की याद आ रही है इसलिए नींद नहीं आ रही” मैंने उगल दिया। मैं नज़र नीची करे ऐसे बोल रहा था मानो कोई आंसर मशीन होऊं।

“कल जाकर मिल लेना, अब इतना भी क्या याद करना, सो जाओ” उसने फिर धमकी लगने जैसी प्यार भरी बोली में कहा।

“आप नहीं समझोगे....” इतना कहते ही मैंने अपने होंठ काटे। ये क्या बोल गया मैं। मैंने उसकी तरफ देखा। उसने नज़रे दीवार की तरफ कर लीं।

“हाँ भई, मेरा समझ पाना मुश्किल है, क्योंकि मैं तो कल मिल भी नहीं सकता। इतने सालों से याद ही तो कर रहा हूँ अपनी बेटियों को”

“बेटियों को?” मेरी भवें उचकी

“अरे बेटी की माँ तो बल्कि मेरी बेटी से भी छोटी बेटी थी, बात-बात पर ज़िद करती थी, बात-बात पर झगड़ती थी। रूठ जाये तो बहुत मुश्किल से मानती थी” वो कुछ रुककर बोला, शायद आँखों में नमी थी “देखो अब ऐसा रूठी की मनाने का मौका भी छिन गया”

मैं फिर लाजवाब हो गया। ये दिन ही मेरे लिए जवाब खाने का दिन था।

मैंने बात बदलनी चाही “एक बात कहूँ, आज एक अहसास हुआ मुझे कि घर कितना ज़रूरी होता है”

“घर या अपना घर?” उसने फिर सच उगलवाना चाहा।

“अपना घर” मैं हार मानता बोला “पता है सर, मेरे जो दोस्त दिल्ली के बाहर से आकर होस्टल वगैरह में बसे होते थे न, तो मैं उनका बहुत मज़ाक बनाता था, बहुत रश्क भी करता था उनकी लाइफ से कि इनके तो मजे हैं यार, अपनी मर्ज़ी से रहते हैं, अपनी मर्ज़ी का खाते हैं, किसी की सुननी नहीं पड़ती, किसी को जवाबदेही नहीं है पर....”

“पर अब तुम्हें समझ आया कि जब जवाबदेही हो तब ज़िम्मेदारी नहीं लेनी पड़ती। खुद फ़ैसले नहीं लेने पड़ते, सुकून रहता है जब अपनी छत होती है क्यों?”

मैंने हाँ में गर्दन हिलाई।

“अपने घर की छत कभी टपकती नहीं जीतू, और टपके भी तो सुकून होता है कि अपने माता-पिता उस छत की मरम्मत कराने के लिए हैं न, और मरम्मत नहीं भी करा सके तो खुद छत बनकर कम से कम हमें तो भीगने नहीं देंगे”

मुझे उसकी हर एक बात ठीक लगने लगी।

“तुम दोनों शादी क्यों नहीं कर लेते?” उसने आउट ऑफ़ सिलेबस सवाल दागा।

“कौन दोनों?” मैं हड़बड़ाया।

उसने घूर के देखा।

मैंने नज़रें झुका लीं। फिर धीरे से जवाब दिया “मैं किसी करम का नहीं जो मुझसे वो शादी करे”

“ये तुमसे किसने कहाँ?”

मैं घर के एक-एक सदस्य का नाम लेना चाहता था, पर उसके बाद सबका बायो भी बताना पड़ता। मैंने फिर उसी धीमी आवाज़ में जवाब दिया “सबने, जितने भी मुझे जानते हैं, वो निकम्मे के हैशटैग के साथ साथ जानते हैं। मैं पढ़ाई में अच्छा नहीं था, नौकरी में अच्छा नहीं हूँ और घर वालों को उम्मीद है कि पापा के बिजनेस में भी अच्छा नहीं रहूँगा” मैंने भूत, वर्तमान और भविष्य एक साथ बक दिए।

वो फिर मुझे घूरता रहा। कई सवाल थे उसकी आँखों में, जिनमें से एक भी उसने नहीं पूछा।

“मैं सो जाऊं अब?” मैं उसकी आँखों से बचना चाह रहा था। ऐसे कोई एक टक घूरे तो कौन सहज महसूस कर सकता है?

मेरे सवाल को वो नज़रंदाज़ करता हुआ वो बोला “तुम तो जानते हो कि तुम्हें क्या करना है? फिर करते क्यों नहीं?”

“जी? मैं समझा नहीं”

“तुम इसलिए पढ़ाई में अच्छे नहीं थे क्योंकि तुम पढ़ना नहीं चाहते थे, तुम इसलिए नौकरी नहीं कर पाए क्योंकि तुम करना नहीं चाहते हो और इसीलिए तुम अपने पिताजी का बिजनेस नहीं संभाल सकते क्योंकि तुम उसे करना नहीं चाहते। तुम क्या नहीं करना चाहते, ये कांसेप्ट तो क्लियर है पर क्या करना चाहते हो ये कौन डीसाइड करेगा? ज़ाहिर है तुम ही, जितना मैं अब तक तुम्हें समझा हूँ; तुम फ़ैसला कर चुके हो

कि तुम्हें क्या करना है। क्या करना है तुम्हें बताओ?”

मैं फिर लाजवाब हो गया। जो बात मैंने खुद को भी नहीं बताई वो रावण साहब को पता चल गयी। तजुर्बा महंगी चीज़ होता है, कई कीमती घड़ियाँ चुकाने पर ही मिलता है।

“मैं..... मैं लिखना चाहता हूँ”

“क्या लिखना चाहते हो?”

“कुछ भी, अख़बार के इश्तेहार या अख़बार के कॉलम, न्यूज़ एंकर की रिपोर्ट्स, उलझी-सुलझी सी कविताएं या फ़िज़ूल मुँह उठाकर ज़हन में घुसी कहानियाँ, कुछ भी”

“तो लिखते क्यों नहीं? कौन रोकता है?”

“कोई भी नहीं, किसी को परवाह हो तो रोके-टोके न”

“तुम भी अपनी नाकामयाबी का इल्ज़ाम किसी दूसरे पर देना चाहते हो?” वो मेरे करीब बैठकर बोला।

“मतलब?”

“मतलब इस दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं, एक वो जो अपनी कामयाबी का श्रेय किसी तीसरे को देते हैं और दूसरे जो अपनी नाकामयाबी का इल्ज़ाम किसी दूसरे को देते हैं? तुम कौन से वाले इंसान बनना चाहते हो?” उसने फिर मुझे एक टक घूरा।

मेरे पास कोई जवाब नहीं था। मैं उठा मैंने बत्ती बंद की और लेट गया। ये एक इशारा था कि अब बात ख़त्म हुई।

रावण ने अँधेरे में मेरे सिर को टटोला और मेरे बालों पर हाथ फेरा, फिर धीरे से बोला “बात ख़त्म करने और बात टालने में फर्क होता है बच्चे, उम्मीद करता हूँ जल्द ही समझोगे। टली बात कभी ख़त्म नहीं होती।

फिर वो उठा और दरवाज़ा मिलाकर चला गया। मैं पूरी रात करवटें बदलता रहा।

उर्मी, कागज़, परिवार, अजय, घर की सीलिंग पर लगे जाले, सब आँखों के सामने घूमने लगे। उस रात मैं खुद से कई वादे कर रहा था। दूसरों से किए वादों की कद्र तो शायद ही मैंने कभी की होगी पर खुद से किए वादों को निभाना चाहता था। वो पहली रात थी जब मैं सुबह होने का इंतज़ार कर रहा था।

****

अगला पूरा दिन मैंने इस इंतज़ार में गुज़ारा कि कब शाम हो और मैं उर्मी से मिलूं। इक इक पल ऐसा लगने लगा मानों तवे पर बैठकर गुज़रा हो।

शाम हुई, मंचन शुरू हुआ। मुझे कुछ समझ न आया कि कौन सा करैक्टर क्या कह रहा है, क्या कर रहा है, क्यों कर रहा है। मेरी निगाह बस एक टक मंचन के एंट्री पॉइंट पर लगी थी। उर्मी आएगी, वो ज़रूर आएगी।

रावण स्टेज से कुछ देर को उतरा तो मैंने उससे भी पूछ लिया कि उर्मी आई थी क्या?

क्या पता वो बैक स्टेज आई हो? क्या पता उसको मैं न दिखा होऊं? मगर रावण ने कंधे उचका दिये।

मैं फिर खामोश बैठ गया। मैं सोच ही रहा था कि खुद एक बार उसके घर चला जाता हूँ, क्या पता न निकल पा रही हो घर से, तब तक हांफता-दौड़ता हुआ कपि आ गया।

“क्या हुआ?” मैंने हैरानी से पूछा।

वो हांफता हुआ बोला “बताता हूँ..... उर्मी तो कल शाम को ही घर से निकल चुकी थी। मोबाइल उसी के पास था”

“फिर कहाँ गयी?” मैं घबरा गया।

“मुझे नहीं पता कहाँ गयी, मुझे हिमानी ने बताया कि उसे उर्मी ने बताया है कि वो शायद रावण के घर जायेगी, क्योंकि तेरे मिलने के सबसे ज्यादा चांसेज वहीं होने थे”

वो बिलकुल सही थी, मुल्ला आखिर कहाँ जाता? मस्जिद तक। मैंने फिर पूछा “तो गयी कहाँ मेरे भाई?”

“मुझे क्या पता? इतनी बच्ची तो वो नहीं होगी जो गुम जाये, वो गायब हुई है तो किसी के करे ही हुई है” कपि ने अपनी उखड़ी सांसो पर काबू पा लिया, वो मेरे साथ वाली कुर्सी पर बैठ गया।

“तेरा मतलब क्या है कि उर्मी का किडनैप हुआ है?”

“बिलकुल यही मतलब है मेरा! और मैं फिर कह रहा हूँ कि वो रावण के घर के लिए निकली थी”

“तो?”

“तो क्या पता इस ‘रावण’ ने गायब की हो!” इतना बोलते ही वो पानी पीने लगा।

“पागल है क्या? ये तो तब से मेरे सामने है। कल भी मैं हर वक़्त साथ ही था इसके घर पर”

“तुझे क्या पता इसका कैरेक्टर?” उसने गुस्से से थूका।

“अबे करैक्टर को छोड़, अवैलेबिलिटी तो पता है, जब हर वक़्त सामने दिख रहा है तो किडनैपर कैसे हुआ?”

“क्या पता इसके पास गुंडे हों, इसने अगवा करवा लिया हो?” उसने लम्बी छोड़ी।

“अरे चमनप्राश, अगवा क्यों करवाएगा जब हम आलरेडी उसके पास ही आ रहे हैं? फिर ये सचमुच का रावण नहीं है मेरे भाई, इसके पास कोई राक्षसों की सेना नहीं है” मैंने उसकी बंद अक्ल से बिनती की।

“कहीं इसने रेप करने के लिए तो नहीं उठा लिया उर्मी को? … क्या पता चलता है दोस्त, इसका करैक्टर ही कुछ ऐसा है।” वो फिर बकवास करने लगा

मैंने गहरी साँस ली और पिछली रातों की सारी कहानी कह सुनाई।

“ओह” उसने लम्बी ओह की और बोला “पर क्या पता इसकी परसों से ही उर्मी के प्रति नियत खराब हो गयी हो?”

“तू पागल है.., हिमानी की दी हुई कोई नॉवेल पढ़ने लगा है क्या?”

“तू पूछकर तो देख, बोल तुझे उसके घर ही रुकना है..., देख क्या कहता है?”

“तू कल उर्मी के घर गया था न?”

“हाँ”

“कितनी देर रुका था?”

“दस मिनट। क्यों?” वो सकपकाया

“क्राइम पट्रोल देख लिया था क्या?”

“नहीं यार.. मुझे ये आदमी ठीक नहीं लगता”

“ठीक का पता नहीं पर बेवक़ूफ़ नहीं लगता, अगर तेरी मानू की उसे उर्मी की इज्ज़त ही लूटनी थी तो परसों मैं उसका क्या बिगाड़ लेता? फिर आज ही उसका मूड बना ये भी मान लूँ तो वो उर्मी को घर पर बाँध कर यहाँ रामलीला खेलने क्यों आया?”

“डर गया होगा, तू ये बता कि तुझे पूछने में कोई हर्ज़ है?” उसने आख़िरकार एक वाजिब सवाल किया

सवाल उर्मी का था, मैंने ही हार मानी, ... “नहीं.., पूछने में तो कोई हर्ज़ नही”

रावण के वापस आते ही मैंने कपि वाला सवाल किया।

“अरे बेटे आज अपने ही घर रुको, और कितने दिन तक नाराज़ रहोगे?”

“देख ले, मैंने क्या कहा था” ‘कपि’ शेर हो गया।

“क्या कहा था इसने?” रावण ने पूछा

“उर्मिला गायब है, इसका कहना है कि आपके घर पर.... कैद है।” मैंने हिचकिचाते हुए कहा।

“वहां क्या करने आएगी जब तुम यहाँ हो?” रावण असमंजस में आया।

“हमें क्या पता हमें तो तलाशी लेनी है बस।” कपि भड़का।

“कैसा दोस्त है ये तुम्हारा, जिसे बोलने की भी तमीज नही”

“तमीज वो न ही सिखाए जिसने अपनी बीवी से बदतमीज़ी की हो” कपि ने सीधा दिल पर वार किया।

“अगर जीतू कहता तो मैं स्वागत करता उसका, पर अब तुम्हें तो मैं घर में घुसने नहीं दूंगा। जो करते बने कर लो।“

“ऐसे कैसे नहीं घुसने देगा?” कपि ने बाहें चढ़ा ली। रावण तैयार हो गया।

अध्याय 8 – तुड़ाई काण्ड

मैंने कपि का हाथ थामा, उसने हाथ समेत मुझे झटक दिया। कपि छः फिट से निकलते कद का हाथी-ब्रांड बालक था। साक्षात् दारा सिंह की औलाद लगता था।

“मैं यहाँ कोई ड्रामा नहीं चाहता जीतू, समझाओ अपने दोस्त को” रावण ने फ़रियाद की।

“कपिल मान जा, देख भाई वो हर वक़्त मेरे सामने था.., फिर कैसे...?” मुझे पूरी बात भी न करने दी कि वो रावण पर झपटा।

“कमीने तेरी फितरत ही यही है, तेरा नाम तो रावण है ही, तेरे मन में भी रावण है” कपि का घूंसा रावण के पेट पर लगा। रावण दो कदम लड़खड़ा गया।

“अब उर्मी पर नियत मैली कर ली...” दूसरा मुक्का उसकी कनपटी पर पड़ा। रावण गिर पड़ा।

“आह... तुम मुझे गलत समझ रहे...,” कपि के जूते की ठोकर रावण की पसलियों पर पड़ी। वो बिलबिला उठा।

“तेरी जात में ही गन्दगी है साले रावण...” कपि ने फिर ठोकर मारनी चाही पर रावण ने उसका पैर रोक लिया “मेरा नाम.... शम...शेर है” उसने पूरी ताकत से धक्का दिया। कपि तम्बू के बम्बू से टकराया।

“हाँ.., वो ही शमशेर जिसने अपनी बीवी को मार-मार के घर से बाहर निकाल दिया था। जिसके घर में उसकी अपनी बच्ची सेफ नहीं थी। जो अब दूसरों की लड़कियों को अपने चंगुल में....” कपि अब ज़हर उगलने लगा था, रावण ने कपि के मुँह से आगे कुछ न निकलने दिया। उसने उसे गिरेहबान से थामा और दूर फेंक दिया।

“बहुत बक चुका तू, बहुत सुन ली तेरी, एक मिनट में यहाँ से दफा हो जा वर्ना मैं तुझे सच में रावण बन के दिखाऊंगा।”

“तू क्या दिखाएगा.....” कपि दौड़ता हुआ आया और फिर अपना दायां हाथ चलाया। रावण ने हाथ रोका और दूसरे हाथ से प्रचंड घूंसा कपि के मुंह पर जड़ा।

अगला घूंसा कपि के पेट पर पड़ा। उसकी चीख निकली।

कपि ने रावण के हाथ पर काट लिया। रावण चिल्लाया। फिर उसने लात चलाई। कपि ने टांग पकड़ ली और धक्का दिया।

रावण तम्बू से टकराया और लड़खड़ाकर गिर पड़ा।

कपि उसके ऊपर लपका। दोनों गुत्थम घुत्था हो गये। बैक स्टेज पर पड़े अशोक वाटिका

के गत्ते के पेड़ धराशायी हो गये!

लोगों की भीड़ जमा होने लगी। कपि तो जोश में ही रहा पर भीड़ देख रावण रुक गया। इसी चक्कर में एक मुक्का उसकी आँख पर पड़ गया।

“ये क्या कर रहे हो शमशेर?” रामलीला कमेटी के एक सदस्य ने आग बबूला होते पूछा।

“कु... कुछ..., नहीं” रावण हकलाने लगा।

“तुम बच्चों से लड़ रहे हो? तुम्हें शर्म नहीं आती..” कोई दूसरा बोला।

मैंने कपि का हाथ पकड़ अपनी तरफ खींचा। कमेटी वाले लगातार उसे जलील करने लगे।

“यही वजह है शमशेर जो तुम्हारी बीवी न टिकी, तुम झगड़ते बहुत हो” कोई तीसरा बोला।

फिर आपस में कानाफूसी शुरू हो गयी “अरे ये तो सच में राक्षस है.. इसका कुछ नहीं पता कब पगला जाये”

“तुम बताओ बेटा क्यों लड़ रहे थे तुम दोनों” एक बूढ़े चतुर चाचा चौधरी ने कपि से पूछा।

“मैं बताता हूँ अंकल” कपि का मुंह भी नहीं खुलने दिया मैंने, उससे पहले ही एक फुस्स स्टोरी मेरे दिमाग में आई। “ये मेरा दोस्त कपिल, बचपन में रावण से डरता था, आज इसने इतने करीब से देखा तो गलती से मुंह से गाली निकल गयी, राव.., मेरा मतलब शमशेर अंकल को भी गुस्सा आ गया और...”

मैंने अफ़सोस जाहिर करती गर्दन हिलाई। “अरे पर शमशेर को तो कण्ट्रोल रखना चाहिए था...” मैं कपि को भीड़ से अलग खींच कर लाया।

“क्या चाहता है तू?” मैंने गुस्सा जाहिर किया।

“उर्मी की मौजूदगी चाहता हूँ। पर लगता है तू नहीं चाहता” वो अपने सूजे हुए हाथ को सहलाने लगा।

“कैसी बात करता है.. मैं क्यों न..”

“तो क्यों नहीं कहता उससे कि वो हमे अपने घर की तलाशी लेने दे?”

“यहाँ से निकलने दे, उसके साथ ही घर चलेंगे हम दोनों। निश्चिन्त रह। ये भी बता दूँ कि उसके घर पर उर्मी मिलेगी भी नहीं, तब भी निश्चिन्त रहियो, किसी ने पुलिस कंप्लेंट की उसके घर से?”

“मुझे पता नहीं, मैंने पूछा नहीं”

रावण निकला, अपनी लंका की यूनिफार्म की जगह अब पेंट शर्ट पहने निकला। उसकी चाल में लड़खड़ाहट आ गई थी और बाईं आँख भी मुझे सूजी हुई लगी।

कपि के चेहरे पर शर्मिंदी मुझे साफ़ दिखाई दी।

‘वो इंसान बुरा नहीं है’ बस पूर्वाग्रह से ग्रस्त है। मैंने मन ही मन सोचा।

उसके घर के दरवाज़े पर सिर्फ कुण्डी लगी हुई मिली।

“आज ताला नहीं लगाया?” मैंने पूछा।

“कल भी नहीं लगाया था, ताकि तुम दोनों आओ तो तुम्हें दीवारें न फांदनी पड़ें” उसने दरवाज़ा खोला।

हम अन्दर घुसे।

सारे घर की बत्तियां जलाई। “मैं आज तक कभी घर की सारी बत्तियां बंद कर के नहीं गया। घर में कोई आया है जीतू”

“बिलकुल सही....” मैं उस कमरे में पहुंचा जहाँ सुबह दरियां पड़ीं थीं।

उर्मी की शर्ट का फटा कपड़ा पड़ा मिला मुझे।

मैं उसे हाथ में लेकर रावण की तरफ घूमा।

“मुझे नहीं पता ये क्या है और कैसे यहाँ आया.. कसम...कसम खाकर कहता हूँ” रावण का चेहरा ज़र्द हो गया।

“जीतू देख” कपि चिल्लाया।

मैं फिर बाहर की तरफ गया। कपि जमीन पर किसी धब्बे को दर्शाने लगा।

“ये तो...ये तो...” मेरे हाथ कांप उठे।

“हाँ, ये तो खून है” कपि फिर चिल्लाया “रावण तेरी खैर नहीं”

“अरे बच्चों मेरा यकीन... यकीन करों मैंने उर्मी को आज देखा तक नहीं, वर्ना मुझे क्या ज़रुरत थी उसे यहाँ लाने की, क्यों लाता मैं उसे यहाँ? क्या मुझे नहीं पता यहाँ की तलाशी होगी?”

“इसीलिए तो यहाँ से हटा दिया तुमने?” कपि बोला।

“अरे तुम्हें अब भी मुझपर यकीन नहीं” वो हैरान हुआ।

“उर्मी कहाँ है?” कपि ने सीधा सवाल किया।

“मुझे नहीं पता” सीधा जवाब मिला। रावण ने हाथ जोड़ लिए।

“मैं यहीं रुकता हूँ जीतू, तू जा कर पुलिस को बुला ला” कपि मुझसे बोला। मैं घुग्गू बना बस उर्मी के शर्ट के कपड़े को पकड़े हुए शून्य में खोने लगा।

“ठीक है, बुला लो पुलिस को...” मुझे हिलता न देख कपि खुद दरवाज़े की तरफ बढ़ने ही लगा “लेकिन कोई फायदा नहीं, अपना ही नुकसान करोगे। मेरा भगवान जानता है कि मैं निर्दोष हूँ। तुम लोग भी अगर दिमाग से काम लो तो यही निष्कर्ष निकालोगे कि मैं निर्दोष हूँ। लेकिन पुलिस में मुझे देने से सिर्फ समय खराब करोगे और कुछ नहीं। ये न भूलों कि उर्मी किसी मुसीबत में होगी। यहाँ खून का धब्बा अपनी कहानी अपने आप कह रहा है। बाकी तुम और तुम्हारा दोस्त समझदार हैं। जो चाहें कर सकते है। न मैं

भागूँगा, न रोकूंगा तुम दोनों को।”

कपि भी प्रभावित दिखने लगा।

आखिर मेरी तन्द्रा टूटी, मैं बोला “एक काम तो कर सकते है न हम?”

“क्या?” दोनों ने एक साथ पूछा

“इस पूरे घर की तो तलाशी ले सकते है न? इतना बड़ा घर है क्या पता यही कहीं कुछ और मिल जाये”

मेरी बात दोनों को जंची। हमने घर भर की तलाशी लेनी शुरू कर दी।

“मुझे अजय पर शक है” मैं रावण से बोला।

“वो क्यों? अपने भाई पर शक क्यों?”

“क्योंकि उर्मी ने आपको सच नहीं बताया था कि वो क्यों घर से भागी थी”

“वो शायद इसलिए भागी थी कि उसने अपनी माँ को किसी गैर आदमी के साथ रंगे हाथों पकड़ लिया था।”

> “और वो गैर, मेरा अपना है... मेरा बदकिस्मती से मेरा भाई, अज्जू उर्फ़ अजय सिंह ठाकुर।”

“सच” रावण ने आश्चर्य से आँखे बड़ी कर लीं। वो दैत्य लगने लगा। “वो तुमसे कितना बड़ा होगा? बामुश्किल 25 का होगा?”

“इतने का ही है, उर्मी की माँ भी तो 32-33 से ज़्यादा नहीं हैं।” मैं फुसफुसा के बोला।

“अरे, ऐसे कैसे, उर्मी तो कम से कम....”

“उर्मी की सगी माँ नहीं हैं वो, उसके पापा ने.....”

तभी दरवाज़ा बेदर्दी से खड़का।

हम सब सहम गये।

‘इतनी रात को कौन लंका में आना चाहता है?’ मैं सोचने लगा

“दरवाज़ा खोलो” अबकी रौबदार आवाज़ भी आई।

दरवाज़ा टूटने को हुआ।

रावण दरवाज़ा खोलने को लपका।

अध्याय 9 – रेस्क्यू-काण्ड

“हटो सामने से” एक सिंगल स्टार पुलिसवाला अपने दो हवलदारों के साथ हाथ से रावण को बाजू करता अन्दर घुसा।

“जीतू कौन है यहाँ?” वो गरजा।

“मैं हूँ” मैं बाहर आया।

“तुझे हमारे साथ चलना है थाने, चल जल्दी।”

“पर हुआ क्या है?” मैं घबरा गया

“टाइम वेस्ट न कर... तुझसे पूछताछ करनी है”

“पर किस बिनाह पर?” अबकी रावण बोला

“ओहो, शमशेर बाबू अब आप भी बोलेंगे, मेजर साहब की लड़की लापता हो गयी है, उनकी बीवी ने हमे बताया कि कुछ दिन से वो जीतू नाम के लड़के के साथ है, इसलिए इससे पूछताछ होगी।”

आगे बिना कुछ पूछे मैं उनके साथ हो लिया।

कपि और रावण भी मेरे साथ आने लगे पर..

“इसे अकेले ही जाना है..; बरात लेकर नहीं। कोई दिक्कत होगी तो इसके घर वालों को बुलाया जायेगा।”

“आपको ये किसने कहा कि जीतू यहाँ होगा?” रावण फिर बोल पड़ा।

“क्यों भाई रावण... मेरा मतलब शमशेर, पुलिस को निरा काठ का समझा है क्या? वैसे तेरे खिलाफ़ कंप्लेंट होती तो मुझे ज्यादा ख़ुशी होती” उस बात पर किसी को हँसता न देख पुलिसिये ने बात पूरी की “इसी लड़के की बहन से पूछा तो मालूम हुआ कि ये यहाँ छुपा है” पुलिसिया कमीनगी की हद तक मुस्कुराया “पर कोई नहीं, अगर लड़की जीतू के बताये पर मिली तो अपहरणकर्ता की मदद करने वाला भी दोषी ही होता है। मिल लेंगे तब तुझसे भी!”

मैं थाने में बैठा अपना हाथ सहलाने लगा। आते ही मेरा स्वागत पैर पर एक डंडा मार कर किया गया, उसके बाद दो मारे कूल्हे पर और अभी हाल फिलहाल एक हाथ पर पड़ा था।

जबकि इनका कहना था कि मुझे सिर्फ ‘पूछताछ’ के लिए यहाँ लाया गया है।

पूछताछ के नाम पर सिर्फ एक ही सवाल “उर्मिला कहाँ है?”

मेरा एक ही जवाब “मैं खुद ढूंढना चाहता हूँ।”

मुझसे पिछले चार दिनों की डिटेल्स मांगी, मैंने सब कुछ बता दिया। फिर भी डंडा पड़ा।

सुबह के चार बज गये। डंडा परेड ख़त्म न हुई।

“बस एक आखिरी सवाल का जवाब दे दे।” थानेदार भी अलसाया सा बोला।

“अगर पहले वाला ही आखिरी है तो जवाब नया नहीं होगा।”

“अरे नहीं, “मैं मान लेता हूँ कि तुझे वाकई नहीं पता कि वो कहाँ गयी है। ठीक। लेकिन थी तो वो तेरी दोस्त...” वो जहरीली मुस्कान लिए बोला।

“है वो, है तो वो मेरी दोस्त ही.. आगे”

“हाँ हाँ… दोस्त है वो.., तो इतना तो कभी तुझे बताया ही होगा कि वो कभी घर से भागी, तो कहाँ किसके यहाँ जाएगी?”

मेरी बत्ती जली। ऐसा सच में एक रात उसने ज्यादा बियर पी लेने के बाद बताया था। उस दिन भी उसका मम्मी से झगड़ा हुआ था। एक नंबर भी नोट कराया था अपनी सहेली का। मुझसे कहा था कि अगर मैं कहीं न मिलूं तो इसके पास ज़रूर मिलूंगी।

किसके पास?

वो पता तो मुझे याद नहीं पर नंबर मेरे मोबाइल में ज़रूर फीड होगा। मोबाइल घर में पड़ा है। घर में मैं जा नहीं सकता।

“कहाँ खो गया?”

“कहीं नहीं... याद करने की कोशिश कर रहा हूँ”

“झूठ, तुझे याद आ गया है” उसने मुझे घूरा

क्या पारखी निगाह है “हाँ याद तो आया पर किसी काम का नहीं, वो कहती थी हिमालय की पहाड़ी पर जायेगी एक दिन।”

“ओह” उसने बड़ी सी ‘ओह’ छोड़ी।

“पर आपको क्यों लगा कि वो भागी होगी?”

“उसकी माँ के किसी से अफेयर के चर्चे सुने है मैंने, तेरा उसकी बेटी से अफेयर है.. सारा परिवार ही ऐसा है।” वो ताली पीटते हुए हंसा।

“अब मैं कब तक हूँ यहाँ?” मैंने बात बदली।

“जब तक बड़े साहब का कोई हुक्म नहीं आता या चौबीस घंटे नहीं हो जाते क्योंकि तब मुझे बाकायदा चार्ज लगा कर तुझे अन्दर करना पड़ेगा।”

“वो आप लगा नहीं सकते।” मैं मुस्कुराया

“क्यों नहीं लगा सकता, किडनैपिंग का लगाऊंगा न” वो मुझसे भी गंदा मुस्कुराया।

“हरामपंती में डिप्लोमा लिया है शायद।” मैं बुदबुदाया। उसने सुन लिया

“तुझे पता है तुझे रात से अब तक जो डंडे पड़े हैं, वो क्यों पड़े? तेरे झूठ बोलने की वजह से नहीं पड़े, तेरी इस कुत्ते-सी ज़ुबान की वजह से पड़े। देख तो किसके आगे क्या बोल रहा है।”

मैं चुप हो गया। मुझे एक बेंच पर बिठाया गया। मैं बैठे-बैठे ही सो गया।

किसी ने कंधा झिंझोड़कर उठाया। मुझे धूप की रोशनी दिखी।

“क्या.., हुआ...क्या हुआ क्या हुआ...” मैं घबरा गया।

“अरे गजब हो गया” कपि बोला।

“तू... तू यहाँ कैसे?”

“तुझसे मिलने जुलने के लिए मना ही नहीं किया किसी ने।”

“तो गजब क्या हुआ?”

“रावण ने तेरे घर पर धावा बोल दिया।”

“क्या? ठीक से बता?” कपि मुझे फ्लैशबैक बताने लगा।

“हाँ यार... तेरे गिरफ्तार होते ही वो मुझे साथ लेकर तेरे घर जा धमका।

पहले दरवाज़ा पीटा, दरवाज़ा हिमानी ने खोला।

फिर जाते ही दहाड़ा।

“अजय, कहाँ हो तुम!”

सारा घर दौड़ता हुआ नीचे आया।

“क्या बात है? क्यों शोर मचा रहे हो तुम?” तेरे पापा ने पूछा

“अजय कहाँ है? उससे कहो कि सामने आये।”

“क्या बात है लो आ गया सामने” रामू भैया अजय को साथ लिए नीचे आ गये।

“उर्मी को कहाँ छुपाया है?” रावण ने सीधा हमला कर दिया।

“क्या..., क्या बक रहे हो तुम? अपनी रामलीला की नौटंकी यहाँ मत फैलाओ” अजय भड़का।

“उर्मिला शाम से गायब है.., अजय तेरा अफेयर उसकी माँ से है... मैंने सुना उसकी माँ ने आत्महत्या की कोशिश की थी...”

“बहुत बक चुके तुम” पापा हत्थे से उखड़ गये “कुछ भी बोलोगे मेरे बेटे के बारे में? निकल जाओ यहाँ से वर्ना अभी पुलिस को फोन करता हूँ...”

“पापा” अजय चिल्लाया। “कोई ज़रुरत नहीं किसी को बुलाने की। अगर इसको शक है

मुझ पर तो इसका शक़ दूर करूँगा मैं बोलो रावण, क्या शक है तुम्हें? तुम्हें लगता है कि मैंने किसी को गायब कर दिया है? बिना घर से निकले?”

“कौन कहता है कि तू घर से नहीं निकला?” रावण फिर गरजा।

“एक तो तुम आराम से बोलो, हल्ला मत करो रात में, दूसरा कोई एक बता दो जिसने मुझे आज सुबह के बाद घर से बाहर देखा हो? मैं चैलेंज करता हूँ अगर कोई एक भी ये कह दे कि उसने मुझे घर के बाहर देखा है तो जो सजा ‘रावण’ की वो ही सजा मेरी”

रावण गड़बड़ा गया।

फिर गरजकर बोला “तू नहीं तो तेरा ये भाई तो बाहर निकला होगा, इसी ने गायब किया होगा उर्मिला को” पर इस बार आवाज़ में वजन नहीं था।

“मैं भी इत्तेफ़ाकन कल से कहीं नहीं गया” रामू भैया बोले “वैसे तो मैं तेरी किसी भी बात का जवाब देना ज़रूरी नहीं समझता, पर अजय ने कहा है तो मैं भी तुझे चैलेंज देता हूँ, न मैं घर से बाहर निकला, न मैंने उर्मी को आज के दिन देखा।”

“फिर सारा घर एक ही सुर में बोलने लगा, मुझे तो सब सच बोलते लगे।” कपि चुप हुआ।

“ये समस्या तो विकट हो गयी दोस्त, मुझे तो उसी पर शक था, खैर तू मेरा एक काम कर, मेरे कमरे में मेरा मोबाइल पड़ा है, वो मुझे ला के दे।”

“कैसे? हिमानी को बोलूं?” कपि ने पूछा।

“नहीं नहीं... उसके सवालों से नहीं बच पायेगा तू, फिर मैं नहीं चाहता कि वो मेरा मोबाइल देखे... तू उर्मी की छत पर जा, वहां से मेरी छत पर कूद, वहां से मुंडेर पकड़कर लटकते ही तो मेरी खिड़की के फ्रेम पर पैर पड़ेगा.. साथ ही छोटी-सी बालकनी भी है.. वहां पर उतर, खिड़की को जोर का धक्का मारेगा तो चिटकनी खुल जाएगी। अन्दर घुस, मेरी टेबल पर ही मोबाइल पड़ा मिलेगा। चार्जर समेत मेरे पास लेकर आ।”

वो ऐसे मेरा मुंह देखने लगा जैसे मैंने उससे किडनी मांग ली हो।

मैं कपि को पूरा प्लान समझा ही रहा था कि तभी... “चलो उठो, साहब ने तुम्हे छोड़ने के लिये बोल दिया है” सिंगल स्टार पुलिस वाले ने कहा।

मेरे चेहरे पर थोड़ी-सी ख़ुशी छलक उठी, लेकिन अगले ही पल गायब भी हो गई जब मैं बेंच से उठा। रात के डंडो ने अब अपना असर दिखाना शुरू कर दिया।

मैं उठते ही फिर से बेंच पर गिर गया, डंडो की मार से पैर पर कुछ सूजन आ गई थी।

कपि ने मुझे सहारा देकर उठाया और हम जैसे-तैसे उर्मी के घर पहुचें।

मैं जितना अपने घर का नक्शा जानता था, तकरीबन उतना ही उर्मी के घर का। दिन के वक़्त सीढ़ियों वाला दरवाज़ा खुला रहता था। हम दोनों निर्विघ्न पहली मंजिल पर पहुँचे। यहाँ से छत पर जाने के लिए अंदर वाला दरवाज़ा खुलवाना ज़रूरी था। मुझे शिल्पी पर पूरा यकीन था कि वो अपने कमरे में छुपी बैठी होगी। उसकी माँ पर मुझे

डाउट था कि वो भी अपने कमरे में ही होगी या अजय के साथ अपने कमरे में होगी।

तभी उसकी माँ चिल्लाईं “शिल्पी”

मैं और कपि हड़बड़ाट में भागने को हुए तो उसका हाथ मेरी पीठ से टकराया और मैं मुँह के बल गिर पड़ा।

शिल्पी तकरीबन भागती हुई बाहर आई।

“तुम?” वो चौंकी

मैंने मुँह पर ऊँगली रखकर चुप रहने का इशारा किया।

“कहाँ है मेरी बहन?” वो और तेज़ चिल्लाई

कपि ने हाथ जोड़ लिए।

“शिल्पी कौन आया है?” उसकी माँ फिर कमरे से चिल्लाईं

मैं और कपि उसकी तरफ फरियादी निगाहों से देखने लगे।

“कोई नहीं माँ, छत पे पतंग आई है शायद, गली के कुछ बच्चे आये थे” शिल्पी उसी वॉल्यूम में चिल्लाई

माँ का कोई रेस्पोंस नहीं मिला

फिर दस सेकंड बाद आवाज़ आई “पानी ले आ”

शिल्पी हमें ‘हिलना मत’ का इशारा देकर किचन में गयी और एक बोतल-ग्लास लिए वापस आई। फिर दौड़ती हुई माँ के कमरे में गयी। हम दोनों एक दूसरे की शक्लें देखते रहे। हम शिल्पी को देख सकते थे, वहाँ तक पहुँच नहीं सकते थे। बीच में जाली वाला दरवाज़ा था।

शिल्पी वापस आई। बिना दरवाज़ा खोले धीरे से बोली “तुम दोनों यहाँ क्या कर रहे हो?”

“दरवाज़ा खुलने का इंतज़ार कर रहे हैं” जवाब मैंने दिया

“उर्मी दी कहाँ हैं?” एक और सवाल हुआ

“हमें क्या...” कपि बोलने को हुआ कि मैंने टोक दिया “मैं वो ही बताने आया हूँ तुझे शिल्पी, दरवाज़ा तो खोल”

“दरवाज़े का बोलने से क्या लेना देना? जल्दी बताओ उर्मी कहाँ है वर्ना मैं मम्मी को बुलाती हूँ” उसकी आँखों में बदतमीज़ी साफ़ झलक रही थी।

“उर्मी तेरी छत पर है” मैं कुछ सोचकर बोला।

“क्या?” शिल्पी तो शिल्पी, कपि भी सेम वॉल्यूम में हैरान हुआ।

“हाँ” मैंने शांति से जवाब दिया “यकीन न हो तो चल के देख लो”

“जीतू! कोई ड्रामा तो नहीं फिर से?” शिल्पी भवें उठा के देखने लगी। शायद उसे पता

था कि उसकी-मेरी छत से कूद-फांद रेगुलर होती थी।

पांच ही मिनट्स बाद हम उर्मी की छत पर थे। शिल्पी भी साथ आई, आना ही था।

“कहाँ है उर्मी?” उसने छत पर पैर रखते ही पूछा।

“छत पर ही है, ढूंढनी पड़ेगी। तू एक काम कर जा अपनी माँ को संभाल, अगर वो भी पीछे-पीछे आ गयीं तो लेने के देने पड़ जायेंगे”

वो मुझे घूरने लगी “तुम्हें छत पर आना था न? इसीलिए उर्मी का बहाना बनाया?”

“अरे वो सच में छत पर ही है” मैं ढीट बन गया।

“तो हमें क्यों नहीं दिख रही?” कपि बोला

“क्योंकि वो मेरी छत पर है” मैं कपि को घूरते हुए बोला। मुझे उसकी भोली अक्ल पर तरस आया।

“शिल्पी..... कहाँ है तू?” उसकी माँ के कमरे से आवाज़ आई।

“अभी आई...” कहती वो तुरंत गायब हो गयी।

“अबे गधे, कभी तो आँख के इशारे समझाकर, उसको कुछ तो कहना था न? क्या कहता छत से नीचे कूद गयी?”

“सॉरी यार, तू भड़क मत, मैं समझा नहीं था” उसका मुँह लटक गया।

“अब मुँह मत लटका, जा मेरा मोबाइल लेकर आ। शायद उसकी सहेली से कुछ पता चले।”

“तू खुद क्यों नहीं जा रहा? तेरा घर है, तू आता-जाता रहता है, तू ही ले आ”

मैं तेज़ी से कोई बहाना सोचने लगा “देख, माँ ने मुझे दस दिन के लिए घर से बाहर रहने की सज़ा दी है। मैं अंदर नहीं जा सकता।”

“अबे तो यहाँ कौन सा माँ देख रही हैं?”

“अरे भोले, माँ और सीसीटीवी की नज़रों से कोई नहीं बच सकता। ऊपर वाला तो बस ओवररेटेड है।”

“फिर भी....”

“फिर भी ये कि अब तू टाइम ख़राब कर रहा है। जा जाकर मोबाइल लेकर आ” सच तो ये था कि रात को पड़े डंडो की वजह से मैं पैर ज़मीन पर नहीं रख पा रहा था, बाउंड्री पर क्या चढ़ता।

कपि उर्मी की छत से मेरी छत पर कूदा। फिर लटका। लेकिन उसका पैर खिड़की के फ्रेम पर पड़ने की जगह सीमेंट के निकले ठूंठ पर पड़ा, उसने हाथ छोड़ दिए और सीमेंट का ठूंठ टूट गया। वो मेरी बालकनी पर धड़ाम से गिरा। कांखते कराहते वो उठा। पैर के दर्द से वो फिर चींखा... उसे अहसास हुआ जैसे उसका पैर टूट गया हो – खिड़की से अन्दर हल्की-सी रोशनी हुई। उसने सर अन्दर डाला, फिर धड़, फिर पैर और खुद को लिए

कमरे के अन्दर गिर पड़ा। उसका वजन वाकई ज्यादा था, वो मेरा घर तोड़ रहा था। तभी उसके चिल्लाने की आवाज़ आयी। मैं घबराया।

अध्याय 10 – फाइनल कांड

प्लूटो जोर-जोर से भौंकने लगा। मैं संभला। मुझे पहले सोच लेना चाहिए था कि प्लूटो कपि की महक आने पर बौखला सकता है।

मुझे कपि का सिर दिखाई दिया। बेचारा कांखता कराहता ही वापस आने लगा। खिड़की चढ़ते ही फिर गिरा। लेकिन इस बार उसकी चींख नहीं निकली। हाँ प्लूटो की आवाज़ और तेज़ हुई। कपि ने हिम्मत न हारी, वो फिर खिड़की पर चढ़ा, इस बार वो एक पैर हवा में उठाए था। शायद सॉलिड लगी थी। वो उचककर छत पर वापस पहुँचा ही था कि प्लूटो भी छत पर आ गया। कपि की चींख निकली, वो एक टांग पर कूदता हुआ पहुँचा, प्लूटो उसके ठीक पीछे लपका, प्लूटो के पैने दांतों से कपि की टांग दो इंच की दूरी पर थी कि तभी कपिल बाउंड्री पर चढ़ा और मैंने उसे खींच लिया।

प्लूटो के दांत आपस में टकराए। ज़ाहिर था कि पांच फिट की बाउंड्री उसके लिए ख़ासी ऊंची थी। प्लूटो कई बार भौका, घर में मैं होता तो उसके इस तरह 'बेवजह' न भौंकने की आदत के कारण छत पर आकर देखता कि क्या हुआ है पर वहाँ कोई नहीं आया।

"क्या हुआ?" मैं उसे सीधा खड़ा करने लगा

"पैर....पैर शायद टूट गया।"

"पैर टूटा होता तो तू यूँ लंगड़ी खेल रहा होता?"

"पैर न टूटा होता तो लंगड़ा के क्यों चलता।"

"अरे मेरा मतलब बहुत दर्द होता है जब पैर टूटता है"

"बहुत दर्द हो रहा है भाई"

मैंने पैर को हाथ लगाया। वो फिर चीखा। "तुझे तो हॉस्पिटल ले जाना होगा।"

"मैं अब सीढ़ियाँ नहीं उतर सकता, जितनी ताकत थी वो सब निकाल दी। वो भी तेरे कुत्ते की वजह से।"

"अरे प्लूटो को मैं सच में भूल गया था...खैर मेरा फ़ोन लाया?" मैंने निर्लज होकर सवाल दागा।

"नहीं"

"क्यों? तू पागल है? इतनी मेहनत भी की और किसी...."

"उर्मी वहीँ है"

"क्या? शिल्पी नहीं है यहाँ, टेंशन क्यों लेता है" मेरा दिल हिला।

“अरे सच में तेरे कमरे में उर्मी है”

“क्या?” मैं फिर चौंका!

उर्मी तेरे कमरे में है” उसने दोहराया। वो खड़ा न रह सका। धम्म से बैठ गया।

“तो तू उसे साथ क्यों न लाया?”

“क्योंकि हाथ बंधे हुए थे उसके, मेरा पैर टूटा गया था…, सबसे अहम तेरा कुत्ता भौंक रहा था”

“तुझे यकीन है कि वो उर्मी ही थी?”

“मुझे यकीन है कि वो उर्मी ही है। थी नहीं, अब भी है”

क्या करूँ? खुद जाऊं और उसे लेकर आऊं?

मैंने बाउंड्री पर पैर रखना चाहा, पर सच में पैर उतना ऊंचा उठा ही नहीं.....।

मैं जैसे-तैसे अपने घर तक पहुँच भी गया उसे ला न पाऊं शायद।

कपि की और मेरी नज़रें मिलीं। पुलिस?

मैं जब मंचन में पहुँचा तब रावण स्टेज पर जाने की तैयारी में था। उसके चहरे पर निराशा की छाप थी। मानों सोच रहा हो ‘आज फिर मैं मार दिया जाऊंगा’

लाउड म्यूजिक सारे ग्राउंड में गूंजने लगा। रामलीला के फाइनल इवेंट के लिए जगह-जगह लाउड स्पीकर लगा दिए गये थे।

तभी उसकी नज़र मुझपर पड़ी।

“क्या हुआ? कुछ पता चला उर्मी का?” वो संतुलित स्वर में बोला।

“हाँ.., पता तो चला”

“अरे। कहाँ है वो?” पल भर के लिए उसके चेहरे पर ख़ुशी चमकी और गायब हुई।

“मेरे घर पर”

“तुम्हारे घर पर? मतलब?” उसकी भवें तनी।

“मेरे घर पर, मेरे कमरे में, बंधी पड़ी है वो, कपि की टांग टूट गयी है शायद... वो अभी तक उर्मी की छत पर ही पड़ा हुआ है।”

“हे भगवान!! किया क्या तुम लोगों ने ये बताओ”

मैंने सविस्तार उसे सब कह सुनाया।

मंच से अनाउंसमेंट हुई।

“कुछ ही देर में आप लोग राम और रावण का युद्ध देखेंगे” मैदान तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

रावण ने एक दफा मंच की तरफ देखा।

कोई उसे इशारे से बुला रहा था.... श्रीरामचंद्र जी बैक स्टेज पहुँच चुके थे।

“चलो” रावण बोला

“कहाँ?” मैं सकपकाया।

“तुम्हे यकीन है उर्मी वहीँ है?” उसने मेरी आँखों में आँखे डाली।

“हाँ है तो” मुझे कपि की बात पर शक होने लगा “इसलिए तो कहता हूँ आप पुलिस को बुलाओ, वो ही खुद जा कर चेक करेंगे”

“आओ फिर” वो मैंदान से बाहर की तरफ निकलने लगा।

“अरे पर स्टेज... रामलीला मंचन....”

उसने एक न सुनी।

“अरे रावण तो बाहर जा रहा है देखो-देखो” भीड़ की नज़रें हम पर पड़ी।

स्टेज से कोई चिल्लाया “अरे शमशेर कहाँ जा रहे हो?” रावण ने किसी की न सुनी।

मुझे अपने स्कूटर पे बैठने का इशारा किया।

दस मिनट से भी पहले हम ‘मेरे’ घर के बाहर खड़े थे।

“अरे पर पुलिस स्टेशन.....” मैंने टोका पर उसने मुझे घूर कर देखा।

आज दरवाज़ा खुला था।

“अजय ठाकुर” रावण घुसते ही दहाड़ा।

सारा घर गूँज उठा।

“तुम्हारा कमरा किस तरफ है?” उसने धीमी आवाज़ में मुझसे पूछा

“तीसरी मंजिल पर... आखिर में”

“और सीढ़ियाँ?”

“उस तरफ..” मैंने इशारा किया। घर में सन्नाटा पसरा था, शायद सब रामलीला मंचन पर थे।

“अरे ऐसे कैसे घर में घुसे जा रहे.....जीतू तू?” हिमानी अपने कमरे से बाहर आईं।

“तू फिर शोर मचाने आ गया? रुक तुझे सबक सिखाता हूँ।” अजय भड़का। ये भी रामलीला नहीं गया था।

“अरे पुलिस को बुलाओ मैं तो कहती हूँ... ये खुल्ला छोड़ने के लायक ही नहीं है।” हिमानी फिर चिल्लाई।

“बुलाओ पुलिस, फिर सबसे पहले उन्हें जीतू का कमरा दिखाना” रावण पहली सीढ़ी पर पहुंचा।

अजय की भवें टेढ़ी हुईं... उसी वक़्त रामू भैया कमरे से निकले, उनके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था। मैं चौंका। वो रावण की ओर लपके, रावण तीसरी सीढ़ी चढ़ा ही था कि रामू की टक्कर उसके पेट पर लगी।

वो वापस नीचे आ पहुंचा।

रावण ने रामू की गिरेहबान थामी और धक्का दिया। रामू जैसे तैसे संभले।

“मेरे भाई पर हाथ उठाया तूने?” अजय रावण पर झपटा।

रावण ने उसे भी धक्का दिया और पहली मंजिल पर तेज़ी से पहुंचा।

अजय उसके पीछे लपका “हिम्मी,.. जल्दी पुलिस को फ़ोन कर” अजय हांफता हुआ बोला।

“नहीं..... पुलिस को मत बुलाना.....” रामू भैया चिल्लाये।

हम सबकी नज़रे उनपर पड़ीं।

उधर रामलीला मैदान में लाउडस्पीकर बजने लगा “रावण मैं तुझे फिर एक मौका देता हूँ.. इस युद्ध से सिवाए निर्दोष-वध के और कुछ प्राप्त नहीं होगा” शायद आनन-फानन किसी और को रावण की जगह वो रोल दे दिया गया था।

सबका ध्यान स्पीकर से आने वाली आवाज़ पर चला गया, इधर शमशेर ने मौके का फायदा उठाकर एक ज़ोरदार टक्कर अजय की छाती पर मारी। वो बिलबिला उठा। रावण अपनी पोशाक में था। भयंकर मूछें और काला लिबास जिसपर सुनहरी कढ़ाई थी। वो दत्य लग रहा था।

“रावण दूसरी मंजिल की ओर चढ़ने लगा। हिमानी रास्ता रोककर खड़ी हो गयी। “ये क्या हो रहा है हमारे घर में?” वो चिल्लाई।

रावण असमंजस में हुआ।

उसी के पीछे से प्लूटो भी निकला। वो घुर्राने लगा।

“हिमानी तेरा दोस्त कपि उर्मी की छत पर पड़ा है... उसकी टांग टूट गयी है, जल्दी भाग के देख उसको वर्ना वहीँ दम तोड़ देगा” अब मैं चिल्लाया।

हिमानी ने एक बार रावण को घूर कर देखा फिर पलटी और छत की तरफ भागी।

उधर लाउडस्पीकर पर आवाज़ गूंजी “हाहाहा हाहाहा, मुझसे तो देवता भी डरते है.. तेरे जैसे तुच्छ मनुष्य से मैं कदापि समझौता नहीं करूँगा, आ युद्ध कर मनुष्य”

इस रावण की आवाज़ शमशेर के मुकाबले बहुत पतली थी।

तबले और हारमोनियम का संगम तेज़-तेज़ संगीत उत्पन्न कर रहा था, मानों युद्ध बिलकुल सामने हो रहा हो।

प्लूटो रावण के पैर पर चिपट गया। रावण चीखा।

“प्लूटो... नीचे आ...जल्दी” मैं भी चीखा।

रावण ने प्लूटो को सीढ़ियों से नीचे धकेल दिया और आगे बढ़ा। उसके पैर से खून निकलकर सीढ़ियों पर फुट-प्रिंट्स बनाने लगा।

मेरे सामने अजय खड़ा हो गया.... उसने मेरी गिरेहबान पकड़ी और पूरी ताकत से मेरे मुंह पर मारा। “फिर तमाशा कर दिया तूने इस घर में”

मेरा सिर हिल गया।

मैंने उसे पकड़ लिया “मार मुझे.. और मार..क्योंकि रावण देख मेरे कमरे तक पहुँचने ही वाला है”

“पहुँचने वाला है तो पहुँचे, उससे क्या हो जायेगा?”

तभी रामू भैया चिल्लाये, “अजय रोक इस कमीने को, जीतू के कमरे तक न पहुँचने पाए”

अजय अजीबोगरीब मुँह बनाने लगा। फिर उसने सारी ताकत खुद को छुड़ाने में लगा दी। आख़िर रामू का कहना कैसे टाल सकता था।

पीछे से रामू भैया ने मुझे खींचा।

अजय मेरी पकड़ से छूट गया।

“हाहाहा..... हाहाहा... तेरा कोई भी वार मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता राम”

लाउडस्पीकर पर आवाज़ आई।

मैं रामू भैया को धक्का देकर और ऊपर भागा।

रावण तीसरी मंजिल पर पहुँच गया

“किस तरफ है तुम्हारा कमरा?” वो चिल्लाया

“आखिरी....”

वो आखिर पर लपका....

मैंने दौड़कर अजय को पकड़ लिया।

रामू ने भी दौड़ लगाई।

रावण ने मेरा कमरा लॉक्ड पाया। उसने कई बार दरवाज़ा झंझोड़ दिया पर दरवाज़े पर कोई शिकन न आई।

रामू भैया मुस्कुराए। उन्होंने मेरे बाल पकड़ लिए। मैं चिल्लाया “रामू भैया आप इस नीच का साथ क्यों दे रहे हो? इस कमीने ने उर्मी को अंदर बंद किया हुआ है”

अजय चौंका।

“हाहाहा...हाहाहा” लाउडस्पीकर से आवाज़ आई।

मुझे छत से उतरती हिमानी दिखाई दी... लाऊडस्पीकर पर फिर डायलॉग गूंजा “प्रभु रावण की नाभी में अमृत कलश है। नाभी पर वार कीजिये”

ये आवाज़ यकीनन घर के भेदी विभीषण की थी।

“जीतू ले कैच कर” हिमानी ने मेरी तरफ कुछ फेंका।

रामू भैया मुझे धक्का देकर रावण पर झपट पड़े। उन्होंने रावण पर लात चलाई।

हिमानी का फेंका पार्सल मैंने कैच किया। वो घर की मास्टर चाबी थी। हिमानी घर की दादी अम्मा बनी घूमती थी इसलिए हमेशा अपने पास स्पेयर रखती थी।

चाबी पर अजय की भी नज़र पड़ी। उसने लात चलाई। मैं भागा।

रावण ने जैसे तैसे खुद को छुड़ाया और कमरे के दरवाजे पर खींच कर लात मारी। वो हिला पर टूटा नहीं।

अजय ने मुझे धक्का दिया। मैं गिर पड़ा। चाबी मेरे हाथ से छिटक गयी। मैंने अजय का पाँव थाम लिया। वो भी गिरा, फिर चाबी की तरफ लपका। मैं पाँव खींचने लगा। उसने दूसरी लात चलाई। जो मेरे सर पर पड़ी। फिर चलाई। अबकी मेरी नाक पर उसकी एड़ी लगी। मिनट से पहले खून बहने लगा।

मैंने पैर फिर भी नहीं छोड़ा।

रामू भैया ने पांच सात मुक्के रावण की पीठ पर मारे... पर रावण ने दरवाज़े पर लात मारनी जारी रखी।

“शमशेर.., ये देखो चाबी पड़ी है” मैं चिल्लाया।

रावण की नज़र पड़ी।

रामू की नज़र भी पड़ी।

दोनों चाबी पर झपटे।

रामू ने चाबी कब्जा ली। रावण ठहर गया। उसने नाप तोल कर पूरी ताकत से एक लात रामू भैया के जड़ी।

वो उछल कर दूर गिरे। रावण ने अपने खड़ाऊ की एक और ठोकर रामू की पसलियों पर जड़ी।

“आह.....नहींईईSSSSSS.....” लाउड स्पीकर से नये रावण की बच्चों जैसी आवाज़ आई। शायद तीर नाभि में लग चुका था!

रावण ने चाबी उसके हाथ छीनी।

दरवाज़ा खोला और अन्दर घुस गया।

सब जड़ हो गये।

“सिया पति रामचंद्र की जय” लाउडस्पीकर में आवाज गूंजी।

मैंने दांतों की फुल फ़ोर्स के साथ अजय के पैर पर काट लिया। वो ज़ोर से चीखा। मैं हिम्मत करके उठा और लंगड़ाता हुआ अपने कमरे तक पहुंचा।

उर्मी मुझे बंधी दिखी।

रावण उसकी रस्सी खोलने लगा।

मेरी आँखों से आंसू छलकने लगे। रस्सी खोलते ही रावण टिककर बैठ गया। उसने आँखे बंद कर लीं। उसकी आँख सूजी लग रही थी। उसके पैर से खून बह रहा था। उसकी पोशाक कई जगह से फट चुकी थी जहाँ से बदन पर खरोचों के निशाँ नुमायां हो रहे थे।

लेकिन मुझे इनमें से किसी चोट की परवाह नहीं थी। मैं उर्मी के पास पहुंचा।

“मुझे छूना नहीं... मुझे छूना..नहीं..” वो घबराने लगी।

“क्या हो गया तुझे।” मैंने उसे अपने अंक में भरना चाहा।

वो उजड़ी हुई थी। उसकी नाक पर चोट लगी थी, खून की पपड़ी जमी हुई थी। कपड़े जगह-जगह से फटे थे। मानों चीथड़े पहने हो। कई जगह खरोचों के निशान थे। आँखों में दहशत थी। “मैं., मैं.. गंदी हो ..गयी” कहती हुई वो रोने लगी।

मैं अपनी गोद में उठाकर उसे बाहर लाया।

अजय और रामू आकर मेरे सामने खड़े हो गये।

उन्हें देखते ही उर्मी की सिसकी निकली। वो मुझसे छिटककर सीढ़ियों की तरफ भागी। अजय उसके पीछे भागा। रामू भैया भी।

मैंने भागने की कोशिश की पर गिर पड़ा... हिमानी ने मुझे सहारा देकर उठाया। मैं उससे बहुत कुछ कहना चाहता था, वो भी शायद काफी कुछ समझना चाहती थी पर शायद ये समय ठीक नहीं था। इन सबके लिए वक़्त फिर निकल सकता था।

मैं ‘राम का नाम’ लेकर फिर दौड़ा, देखा वो तीनों छत पर पहुँच चुके थे। मैं भी वहीं पहुंचा।

ऊपर पहुँचते ही रामू भैया ने मेरे सिर पर बीयर की बोतल मारी।

मैं धराशाई हुआ।

“कमीने... देख ये वो ही बोतल है जिसे पीते तू पकड़ा गया था। याद आया?”

मेरा सिर घूम गया। उर्मी मुझे घुटनों के बल बैठी मिली, रामू भैया दूसरे हाथ से उसके बाल पकड़े हुए थे। अजय भौचक्का सा हम तीनों को देख रहा था।

“अजय छत का गेट बंद कर” रामू भैया का आर्डर सुनते ही अजय ने आज्ञा का पालन किया।

“तुझे कैसे पता चला कि उर्मी यहाँ पड़ी हुई है?” वो मेरे कान के पास अपना मुँह लाकर बोले।

मैं धीरे से उठने की कोशिश करने लगा। रामू भैया ने मेरे एक करारी लात जड़ी। मेरे मुँह से ‘आह’ निकली। “मैं तो समझा था कि अजय इसकी माँ के साथ....” मैं बहुत धीरे बोल पाया। पर रामू ने सुन लिया। उन्होंने मेरे एक लात और जड़ी “अरे ये बेचारा क्या

करता, इसे तो मैं शिल्पी से मिलवाने के बहाने साथ लेकर जाता था”

“पर ऐसा किया क्यों?” मैं दीवार का सहारा लेकर खड़ा हुआ।

“क्यों का क्या मतलब? मुझे इसकी माँ पहले दिन से पसंद थी। जिस दिन इसका बाप उसे अपने बच्चों पर थोपकर चला गया था, उसी दिन यहीं इसी छत पर....” रामू भैया इशारा करने लगे “मैं रात के वक़्त नीरू से बात कर रहा था”

“नीरू कौन है?” अजय के मुँह से निकला। अजय को मैंने पहली बार इतना भोला मुँह बनाए देखा था।

“मेरी माँ” उर्मी कराही, और रोने लगी।

मैं उठता हुआ बोला “फिर उर्मी पर ये अत्याचार करने का क्या तुक मेरे भाई? इसको क्यों अपने पचड़ों में घसीट लिया?”

“इसको तूने घसीटा जीतू, इसे बीच में तू लाया” वो एक मिनट रुके और फिर बोले “न ही तू इसे अपने साथ लेकर भागता, न नीरू को इसे बुलाने के लिए फांसी लगानी पड़ती....”

“झूठी फांसी” मैंने टोका।

“....और न ही मुझे इसका ये हाल करना पड़ता” रामू भैया ने मेरी बात अनसुनी कर दी। “पर मैं हैरान हूँ जीतू कि तू इतना नाकारा, बेवक़ूफ़ और बदसूरत है, फिर भी उर्मी अजय को छोड़कर तेरे से क्यों जा लगी?”

“क्योंकि मेरे पास तुम दोनों जैसे दो-दो चहरे नहीं है।” मैं धीरे से बोला

“हाहाहा” रामू भैया बद्तामीजों की तरह हँसे “ये बेचारा तो...” उन्होंने अजय की तरफ इशारा किया “कुछ जानता ही नहीं था, इसे क्यों कोस रहा है तू?”

अजय ने मुंडी हिलाई।

“फिर भी अंधभक्त की तरह तुम्हारा कहा सुन रहा है, तुम्हारे आर्डर फॉलो कर रहा है, धिक्कार है तुझपे अजय” मैंने ज़ोर से ज़मीन पर थूका। रामू ने एक और लात मेरे जड़ी। मैं गिर पड़ा। तभी स्पीकर पर बजता म्यूजिक शांत हुआ और अनाउंसमेंट हुई “आप सब लोग अपनी जगह बैठे रहिए, कुछ ही देर में ‘श्री-राम आरती’ होने वाली है, अपनी जगह बने रहें, भगदड़ न मचाएं।”

फिर सन्नाटा पसर गया। लोगों के हल्ले-गुल्ले की आवाज़े साफ़ सुनाई देने लगीं।

मैं फिर उठा, फिर मेरे मुँह से एक सवाल निकला “उर्मी को उसके घर से कैसे उठाया?”

“मुझे क्या ज़रुरत थी उठाने की? ये काम भी उर्मी ने खुद ही किया।” रामू मुस्कुराये।

“मतलब?” मेरी भवें सिकुड़ गयीं।

“मतलब ये कि जब उर्मी अपने घर अपनी माँ का हाल जानने आई थी, उस वक़्त मैं नीरू के साथ उसके कमरे में ही था और अजय को मैंने शिल्पी के साथ भेज दिया था” उन्होंने अजय की तरफ देखा “ये बेचारा समझ रहा था कि इसका भाई शिल्पी की माँ के

साथ बातों में लगा है ताकि इन दोनों को पूरा टाइम मिल सके। हम चारों अच्छी भली मस्ती कर रहे थे जब ये साली घर में घुस आई, दरवाज़ा खोलते ही इसने अपनी माँ को खरी-खोटी सुनानी शुरू कर दी। मैं समझाने के लिए आगे बढ़ा तो इसने मेरे मुँह पर" रामू ने उर्मी के गाल पर एक थप्पड़ रसीद किया "थप्पड़ मारा, साली ने मुझे थप्पड़ मारा। मुझे धमकी देने लगी कि जाकर सब मेरी माँ को बता देगी!"

उर्मी के हाथ पड़ते ही मेरे तन बदन में फिर आग लग गयी। बोनफायर फिर जल उठी, मैंने रामू का हाथ पकड़कर उमेठा ही था कि उन्होंने फिर मेरे पेट पर एक लात जमाई, मैं कराहता हुआ बोला "और... उस बीच... तुमने उर्मी की खोपड़ी पर कुछ मारकर उसे बेहोश कर दिया?"

रामू ने मुझे एक पल घूरा, फिर कमीनगी की हद पार करती हँसी हँसे और बोले "उस बीच नहीं किया, जब नीरू मेरे इशारे पर चुन्नी से अपना गला बाँधने लगी, और ये कुतिया उसे रोकने लगी, तब मैंने दिया खोपड़ी पर एक, पर तू इतना बड़ा गधा ये बात कैसे समझ गया?"

"मैंने जब उसका सिर अपनी गोद में लिया तो हलकी सूजन लगी मुझे" मैं फिर से उठते हुए बोला! मेरे मुंह से आवाज़ भी नहीं निकल रही थी, आँखों के आगे अँधेरा छा रहा था!

'जाने कितनी बार और गिराएगी कायनात मुझे, जाने और कितनी बार मुझे हौसला उठाएगा।'

"तुझे किसने कहा कि उसकी माँ ने फांसी दिखावे के लिए लगाई थी?" शायद उन्हें मेरा सवाल याद आ गया।

"अंधे को पता चल जाता, फांसी लगाने के बीस मिनट बाद तक भला कौन जिंदा रहता है! वो फांसी उर्मी को नहीं बल्कि मुझे दिखाने के लिए लगाईं गयी थी ताकि मैं गवाही दे सकूँ कि उर्मी तो माँ की हालत देख बेहोश हुई थी न कि सिर पर पड़े डंडा पड़ने से!"

"तुझे ही नहीं ये बात अजय और शिल्पी को दिखाने में भी काम आई थी, वो दोनों खुद क्यों बताते कि वो कमरे में साथ-साथ थे?" रामू का ध्यान भटक गया। उर्मी घुटने-घुटने सीढ़ियों तक जाने लगी। अजय अभी तक जड़ हुआ बाउंड्री के पास खड़ा सब देख रहा था।

मैंने आगे तुक्का जोड़ा "यही बात आग की तरह फैलती और लोगों की सिम्पैथी उर्मी की माँ के साथ हो जाती आखिर उसने अपने पापों का प्रायश्चित करने की सोची थी, इस काम में डॉक्टर तुम्हारा बाखूबी साथ देता, आखिर उसको मोटी फीस मिलनी थी। डॉक्टर को तो अजय बिना घर से निकले ही बुला लाया था"

"बिना घर से उतरे भला कैसे बुलाता वो?" इस बार उनकी भवों पर सिकुड़न आई।

"वैसे ही जैसे तुम इसकी माँ के कमरे से निकलते थे? वैसे ही जैसे पापा गेस्ट रूम से बाहर निकले थे उस दिन"

"खिड़की से" जवाब अजय ने दिया। मैंने बचपन से लेकर अबतक पहली बार उसे इतना

गुमसुम और मरा हुआ देखा था। यहाँ छत पर हो रही एक-एक बात पर जैसे उसका विश्वास ही नहीं बन रहा था।

“इन सब बातों का समाधान क्या होगा भाई? क्या मिलेगा अब इन सब से?” मैंने रामू भैया के पीछे निगाह फेरी, फिर धीरे-धीरे उनकी तरफ बढ़ने लगा।

“अरे छोटे, वही होगा जो सोचा था, उर्मी के साथ रेप तूने किया है ये साबित मेरी और अजय की गवाही करेगी। तेरे ही कमरे से इतने सबूत मिलेंगे कि तू सफाई देता-देता मर जायेगा”

“मेडिकल टेस्ट नामक भी कोई चीज़ होती है कि नहीं? आख़िर आप तो पढ़े लिखे थे” मैंने जानबूझकर ज़मीन पर थूका। उर्मी सीढ़ियों तक पहुँचने ही वाली थी। मेरे थूकने से रामू भैया का ईगो बड़ी ज़ोर से हर्ट हुआ।

“मुझे बेवक़ूफ़ समझने की बेवकूफी मत करियो जीतू” उन्होंने मेरा गला दबा दिया। उनकी आँखों में वहशत भर आई। खून उनके सिर पर सवार होने लगा। “तुम दोनों ने रावण के घर पर क्या रास-लीला मचाई है सब पता है मुझे, तेरी इस कुतिया को मार-मारकर मैंने पिछले एक हफ्ते की सारी गाथा उगलवाई है”

मैं गला छुड़ाने के लिए तड़पने लगा “पर....अहह.... हिमा.... हिमानी का क्या? उसने भी सब होते हुए... देखा है..”

“उसके और कपि के गले लगते हुए फ़ोटोज़ हैं मेरे पास, वो कुछ भी नहीं बोलेगी। फिर मैंने उर्मी को बदहाल ज़रूर किया है पर उसके साथ बदफेली नहीं की, मुझे उस जैसी कुतिया में कोई इंटरेस्ट नहीं। मुझे उसकी माँ से मतलब है बस” रामू की पकड़ और मजबूत हुई।

उर्मी गेट तक पहुँच गयी। उसने गेट खोला....

“शर...शर्म... शर्म करो, बड़े भाई होकर बहन को ब्लैकम...” मुझे अँधेरा-सा नज़र आने लगा।

“अरे! छोटी बहन होकर वो भी तो तेरा साथ दे रही है न, फिर मैंने थोड़ी उर्मी के साथ कुछ किया है, किया तो तूने है मेरे भाई”

“एक...एक गवाह भूल....रहे....” मेरी आँखें मुंदने लगीं।

“क्या” वो मेरे मुँह के पास अपना कान ले आए।

“एक गवा...ह.... भू...ल... रहे.... हो” मुझपर बिहोशी तारी हो गयी।

“कौन?” उन्होंने पकड़ थोड़ी ढीली की।

“कौन?” इस बार वो ज़ोर से चिल्लाए।

मैंने झटके से आँखें खोलीं और बोला “रावण”

मैंने रामू के पीछे निगाह फिराई।

रावण ठीक पीछे खड़ा था। उसके चेहरे पर खून-बिखरा हुआ था। उसकी आँखें सुर्ख थीं।

चारों तरफ पटाखों की रौशनी की वजह से पल-पल को उसका लहुलुहान चेहरा नुमायां हो रहा था।

लाउडस्पीकर पर फिर संगीत बजाने लगा। साथ ही नारे लगने लगे **“जय श्री-राम” “जय श्री-राम”**

रामू ने मुझे छोड़ा और रावण की तरफ हाथ उठाया। रावण ने वो हाथ बीच में ही रोका और एक भरपूर वार रामू के चेहरे पर किया। रामू की चींख निकली। रामू ने छत पर पड़ा लोहे का लम्बा पाइप नुमा टुकड़ा उठाया और रावण को मारने को हुआ ही कि मैंने वो हाथ पीछे से पकड़ लिया। रावण ने रामू को अपनी तरफ खींचा, मैंने धक्का दिया।

रामू ने मेरा हाथ झटका और लोहे का टुकड़ा रावण की छाती में घुसा दिया।

लाउडस्पीकर में एक बार फिर से आवाज गूंजी। **“जय श्री-राम”**

“राम” शमशेर के मुंह से निकला।

चारों ओर से पटाखे फूटने लगे। शायद रावण दहन शुरू हो चुका था। श्री-राम आरती शुरू हो चुकी थी। **“श्री-रामचन्द्र कृपालु भज मन, हरण भवभय दारुणम्.....”**

रामू ने सरिया बाहर निकाला और फिर रावण की पसलियों में घोंपा।

रावण चिल्लाया।

“अआहह्ह्ह्हह....” फिर रामू को धक्का देते-देते बाउंड्री तक ले गया और, मैंने अपने अंदर की बची-खुची ताकत जुटाई और रामू को ज़ोर से धक्का दिया। रामू और रावण दोनों बाउंड्री से नीचे लटक गये। मैंने रावण की तरफ हाथ बढ़ाया “मेरा हाथ पकड़ो” मेरा क्षीण स्वर निकला।

अजय के शरीर से अचानक लकवा डिसेबल हुआ, उसने लपककर रामू का हाथ पकड़ा।

“अजय खींच भैया को” मेरी मरी हुई आवाज़ निकली। मैं ताकत जुटाकर उसे ऊपर खींचने की नाकाम कोशिश करने लगा कि..... रावण के हाथ से मेरी पकड़ छूट गयी!

वो तीन मंज़िल नीचे जा गिरा।

मैं और अजय दोनों शिथिल हो गये!

“अजय मुझे खींच मेरे भाई, अच्छा हुआ सा....ला, गिर पड़ा” रामू की बेशर्म ज़ुबान ने हमें चेताया!

मैं बाउंड्री के पास ही लुढ़क गया।

अजय को पता नहीं क्या सूझी, उसने रामू भैया का हाथ छोड़ दिया!

रामू रावण के ठीक बगल में गिरे, तड़ाक की तेज़ आवाज़ हुई!

मैं हैरान हुए बिना नहीं रह सका, मेरी आँखें अजय की तरफ घूरती हुई पूछ रही थीं, क्यों?

अजय सिवाए शर्मिंदगी के कुछ ज़ाहिर नहीं कर पा रहा था। शायद वो ऐसे नीम अँधेरे

में था जहाँ उसे दिख भले ही कुछ नहीं रहा था पर आभास ज़रूर था। उसे अपने किए का पछतावा था।

पल दो पल में ही गली से लोगों के भिनभिनाने की आवाज़ें आने लगीं। मैं और अजय नीचे उतरने लगे। हिमानी ने उर्मी को शौल से ढक लिया और आँखों ही आँखों में मुझे आश्वस्त किया कि वो उसका ख्याल रख लेगी।

हमें अपने माँ-बाप और मासी का परिवार भी उन्हीं दोनों के पास मिला। रामू के कराहने की आवाज़े बहुत दूर तक जा रही थीं, पर शमशेर उर्फ़ रावण के शरीर में कोई हरकत नहीं थी।

भीड़ और बढ़ने लगी जबकि लीला समाप्त हो चुकी थी।

दूर मंच पर कुछ लोगों की धीमी-धीमी आवाज़ें आने लगीं "यार इस बार तो विजयदशमी जैसे-तैसे पूरी कर ही ली, अच्छा हुआ अंत समय में अग्रवाल साहब रावण बनने को राज़ी हो गये! उस निकम्मे लापरवाह इंसान 'शमशेर' को अगली बार से रावण नहीं बनायेंगे, साला इज्ज़त का कचरा कर गया! कल खबर लूँगा उसकी!"

शायद माइक चालू रह गया था।

उपसंहार

सन्नाटा पसर गया! कई मिनट तक कोई कुछ न बोला! मैंने ही फिर चुप्पी तोड़ी "अरे बालकों बताओ तो ये कहानी कैसी लगी?"

दोनों बच्चे मेरे पास आए और गले लग गये! उनकी आँखें नम थीं। "सर फिर आपके भाई का क्या हुआ?" क्षितिज यानी बड़े वाले ने पूछा।

मैं फिर फ़्लैशबैक में घुसता हुआ बोला "रामू भैया को पहले अस्पताल ले गये फिर जेल, उनकी कई हड्डियाँ टूटी थीं पर जांघ की हड्डी दो टुकड़े हो गयी थी जो आजीवन ठीक नहीं हो सकती थी। उन्हें हत्या और किडनैपिंग के केस में उम्र कैद हुई। अजय ने खुद और अपने प्रिय भाई को सज़ा देते हुए हर एक कुकर्म में खुद को रामू के साथ लिप्त होने की गवाही दी! उसको सात साल की सज़ा हुई पर उसके अच्छे आचरण के चलते हुए पांच साल बाद ही रिहा कर दिया गया। रिहाई के बावजूद वो घर नहीं आया, सीधा हिमांचल चला गया और वहीँ बस गया। शिल्पी मीरा जैसी हो गयी, न उसने अपना घर बसाया और न ही अजय के लौट आने की आस छोड़ी।"

"...और रावण अंकल का क्या हुआ?" अबकी रुस्तम ने सवाल किया।

"बेटा शमशेर अंकल थे वो, उन्हें रावण मत कहना कभी, उनकी चिता को मैंने, यानी आपके टीचर ने मुखाग्नि दी"

"और उनके घरवाले?"

"उनके घरवालों में से कोई नहीं आया बेटा, शमशेर अंकल की पत्नी तीन महीने बाद आई, कि शायद लंका अब भी उनके नाम हो सकती हो, फॉर्मर वाइफ रहने का बेनिफिट मिले, पर मेरे पास कोई नहीं आया"

"और कपि अंकल का क्या हुआ?"

"जिस वक़्त मैंने हिमानी को बोला कि जाए छत पर कपि को देखकर आए तब वो तकरीबन उल्टे पैर वापस आई थी क्योंकि कपि उसे छत पर नहीं मिला था।"

"फिर कपि अंकल कहाँ गायब हो गये थे?"

"गायब कहीं नहीं हुआ था, शिल्पी और उसकी माँ कपि को हॉस्पिटल ले गये थे। शिल्पी में तो ज़रा बहुत इंसानियत थी पर नीरू आंटी ने ऐसा किस सदके किया था ये आज भी मैं समझ नहीं पाता। बहरहाल, हिमानी ने छत पर कपि को न पाकर उसे फ़ोन किया तो उसे सारा मंज़र समझ आया, इसलिए उसने मुझे मास्टर चाबी दी।"

दोनों चुप हो गए, इतने में किचन से आवाज़ आई "अरे सारी रात कहानियां ही चलती रहेगीं या सोवोगे भी तुम लोग, जीतू तुझे तो कोई फ़िक्र नहीं अपनी पर इन बच्चों को तो कल कॉलेज जाना है, इन्हें तो अपने घर जाने दे"

माँ की बात टालने की हिम्मत भला मैं कैसे कर सकता था, लड़के 'नमस्ते सर' कहकर अगली बिल्डिंग में अपने फ्लैट की ओर निकल लिए, मैं अपने कमरे में पहुँचा, अर्धांगिनी

सो रही थी, मैंने धीरे से चादर खिंचनी चाही, उसने करवट ली और तपाक से बोली “सारी रात आँखें जलाए आज? कल दिन में सपनों से बुझा लेंगे?”

मैं अपलक उसे देखता रहा, फिर मेरी हंसी छूट गयी! वो भी हँसने लगी, फिर बोली “20-20 साल के लड़को को पढ़ाने की बजाए पारिवारिक धारावाहिक क्यों सुनाते रहते हो?”

“अच्छा लगता है, स्टूडेंट अगर टीचर का स्ट्रगल जान ले तो बौन्डिंग अच्छी हो जाती है।”

“उन्हें सबकुछ तो नहीं बता दिया?”

“अरे ऐसे-कैसे बता देता? सिर्फ उतना बताया कि वो मेरे कान न खाएं कि ये क्यों हुआ और वो क्या हुआ”

“अरे बाकी सब छोड़ो, शमशेर अंकल के घर में हमारी दरी वाली दोपहर की बात तो नहीं बताई?”

“न कतई नहीं” मैंने उँगलियाँ क्रॉस कर लीं “ये बात कोई बच्चों को बताने की थी”

“शुक्र है, और मम्मी वाली बात?”

“कौन सी मम्मी वाली बात, तेरी माँ ने ही तो कपि को हॉस्पिटल पहुँचाया था।”

“अरे उसके बाद, वो कहाँ गयी वगरह-वगरह?”

“वो तो मुझे खुद नहीं पता कहाँ गयीं मैं उन्हें क्या बताता, तेरे पूज्य-पिताजी ने उन्हें जबसे तलाक दिया है तबसे कोई खोज-ख़बर होती तो मैं उनको बताता भी....” मैं बोलते-बोलते चुप हो गया।

उर्मी ने मुझे घूर कर देखा, मैंने नज़रें चुरा लीं! फिर उसने मेरा हाथ खींचा और उसपर सिर रखकर आँखें बंद करते हुए बोली “तुम्हारा मुँह बांधकर रखने की ज़रुरत है”

मैंने तपाक से जवाब दिया “और मेरा हाथ भी, तेरे सिर से” मैंने एक आँख दबा ली।

उसने पलटकर देखा, मैं धीरे से बोला “सोचता हूँ अपने हाथ का नामकरण कर दूँ”

“अच्छा, वो क्या?”

“उर्मी का सिरहाना”

समाप्त

इस कहानी की कहानी

जो मैं अब आपको पढ़ाने वाला हूँ वो कायदे से मुझे पहले पेज पर लिखना चाहिए था, लेखक का परिचय और लेखकीय वगैरह पहले पेज पर ही जन्म-जन्मान्तर से लिखा जा रहा है पर इसको आखिरी पेज पर लेकर आने के पीछे तीन कारण थे!

पहला – मैं और मनीष नहीं चाहते थे कि कहानी शुरू करने से पहले आप किसी भी बाधा में फंसो। डायरेक्ट अटैक हो।

दूसरा – लेखक और कहानी के बारे में जानने के बाद पाठक कुछ हद तक लेखक को जज करने लगता है। इस पूर्वाभास से बचो।

कुछ नया कुछ अलग हटकर करने की चाह भी इसकी तीसरी और प्रमुख वजह है। साथ ही, मेरा मानना है कि शोर्ट स्टोरी अगर इंटरेस्टिंग हो तो उसके खत्म होने के बाद भी किताब बंद करने का मन नहीं करता। लगता है कुछ तो और पढ़ने को मिल जाए। इसलिए ख़ास आपके लिए हम लाये हैं

‘इस कहानी की एक कहानी’

बहुत पुरानी बात है, बहुत ही पुरानी। कोई 2016 का वक़्त रहा होगा। हम दोनों, यानी मैं और मनीष ताजे-ताजे दोस्त बने थे। मनीष की लिखी एक कहानी, ‘ट्रेन का सफ़र’ मुझे इतनी अच्छी लगी कि मैंने मनीष को बाकायदा फ़ोन करके बधाई दी थी। मनीष को मेरी बधाई बहुत अच्छी लगी थी। बात आई गयी हो गयी। मनीष राजिस्थान के भीलवाड़ा जिले में जन्में कहानी/किस्सों में दिलचस्पी लेने वाले शख्स हैं। वो कहते हैं कि कहानियों से उनका रिश्ता बचपन का है पर लेखन में कुछ ही समय से सक्रीय है। अपने आस-पास की ज़िन्दगी को पन्नों पर उकेरना पसंद करते हैं। लिखते कम ही है पर कोशिश रहती है कुछ नया लिखें। फ़िलहाल जयपुर में है, ताज़ी-ताज़ी गुलामी (शादी) की है! एक साथ दो नौकरी नहीं कर सकते थे इसलिए प्राइवेट कंपनी में बिज़नस हेड के पद से इस्तीफ़ा देकर घर बैठ गए हैं। आगे क्या करेंगे नहीं जानते पर कुछ नया और बेहतर करने की पूरी-पूरी गारंटी है।

यहाँ मेरा परिचय भी टिकाइए कि मैं सिद्धार्थ अरोड़ा ‘सहर’, दिल्ली में जन्मा, अमृतसर में पला, फिर दिल्ली में कमाता हुआ कुछ एक साल से लिखने लगा हूँ। ज्ञात हो कि लिखना कुछ एक साल से ही शुरू किया है पर कहानियां मैं 11 साल की उम्र से सुनाता आ रहा हूँ। मेरी लेखनी में धार देने के लिए दो दिन बहुत बड़े हैं, पहला वो दिन जब मैंने आदरणीय सुरेन्द्र मोहन पाठक साहब को पहली बार पढ़ा, उस दिन के बाद से मुझे ये समझ आया कि शब्दों को कागज़ पर उकेरा कैसे जाता है। कैसे लोग चार सौ पन्नों को हँसते-गुदगुदाते या कभी आँखों में आंसू भरे खत्म कर देते हैं। पाठक साहब जैसी कला विरलों में होती है इसलिए पाठक साहब मेरे लिए पहले उस्ताद की हैसियत

रखते हैं।

दूसरा बड़ा दिन मेरे लिए वो रहा जब मैंने गुलज़ार साहब का लिखा पहली बार समझा। फीलिंग्स को एक्सप्रेस कैसे करना है, पानी से सरल व स्वाद-रहित शब्दों की मीठी-खट्टी शिकंजी कैसे बनाई जाती है ये मैंने उनको पढ़-पढ़ के सीखा। खुशनसीबी ये भी है कि मुझे दोनों से मिलने का फक्र हासिल हुआ, पर वो ज़ायकेदार किस्सा फिर कभी।

बात मनीष की हो रही थी।

इन्हीं जनाब-ए-ख़ास से एक दिन उत्सुकतावश मैंने से पूछ लिया कि कुछ नया-ताज़ा, कुछ गर्मागर्म लिख रहे हो या सब बासी ही है?

तब मनीष ने ताव में आकर मेरी तरफ अपना बहुमूल्य आईडिया सरकाया कि यार क्यों न ऐसा हो? एक आदमी हो जिसके बीवी बच्चे उसे छोड़कर जा चुके हों, जिसकी इमेज रावण सी बन गयी हो और जिससे तकरीबन सब नफरत करते हों। आईडिया दिफेरेंट था, सुनकर मज़ा आया। इसके साथ ही ये भी ऐड था कि शमशेर नामक व्यक्ति कहीं पर बदफेली होती देखेगा और अपनी जान पर खेलकर उस लड़की को बचाएगा। ये क्लाइमेक्स मुझे बहुत सारी बॉलीवुड फिल्मों सा पुराना लगा। मैंने यूँही, बिना किसी प्लानिंग के, बिना कोई प्लाट सोचे बक दिया कि यार मनीष, इस कहानी को नवरात्रों में फेसबुक पर पोस्ट करते हैं, दस पार्ट में।

“दस पार्ट में? इतना कंटेंट कैसे भरेंगे भाई?” मनीष का सवाल वाजिब था।

“कर लेंगे यार, मैं शुरू करता हूँ, तुम कमियां बताते चलना” मेरा कांफिडेंस वाजिब था।

ज्ञात हो कि तब हम दोनों ही नौकरीपेशा थे (अब मैं अकेला हूँ, मनीष बिजनेस की ओर अग्रसर है) जिन्हें हफ्ते में एक या बड़ी हद डेढ़ दिन सुस्ताने के लिए मिलते थे। उसमें भी दर्जनों काम होते थे, बहरहाल फिर उन नवरात्रों में मैं रोज़ एक पार्ट लिखता, मनीष मुस्तैदी से बिना कोताही किए उन्हें एडिट करता, हम हर रोज़ पोस्ट करते और तीसरे पार्ट के बाद से रोज़ वाहवाही बटोरते। यकीन करिए कई पाठक तो ऐसे थे कि सात बजे – जो कि पोस्टिंग टाइम होता था – से कहीं पहले हमें मैसेज करके याद दिलाते थे कि आप भूलना मत, आपको आज अगला पार्ट पोस्ट करना है। एक और इत्तेफाक़ जो हमारे भले के लिए हुआ था वो ये कि उसी बार एक एक्स्ट्रा नवरात्रा पड़ा, जबकि तकरीबन हर बार एक या दो कम ही पड़ते थे लेकिन उस इकलौती बार मैंने जाना कि ग्यारहवें दिन दशहरा हुआ था।

यहाँ उपरोक्त कथन के साथ हम ये साबित करना चाहते हैं कि हम भले ही सोशल मिडिया पर भला/बुरा लिखते हों पर हमारी एक नोन(known) राइटर के नाते कोई औकात नहीं है। या मैं लिखूं कि नहीं थी। क्योंकि रावायण के सदके अब इतना तो ज़रूर है कि कुछ लोग हमें ‘अच्छा! वो मनीष या सिद्धार्थ जो लिखता है?’ के नाते जानने लगे हैं।

बहरहाल, आप रावायण की समीक्षा ज़रूर करें। हमारी खूबियाँ हमें ज़रूर बताएं, ताकि

हम गदगद हो सकें, आगे के लिए हौसलामंद हो सकें पर साथ ही हमारी कमियां भी हमें ज़रूर-ज़रूर बताएं ताकि हम ज़मीन पर रह सकें और इंसान बने रहें। रावायण से जुड़ी किसी भी चर्चा या समीक्षा – इस ईमेल पर एड्रेस पर दर्ज करें। ravaayana@gmail।com अमेज़न पर रेटिंग देना न भूलें!

अब मैं आखिर में आपको एक अंग्रेज़ के बारे में बताता हूँ, ब्रायन ऐक्टन नामक एक सोफ्टवेयर इंजीनियर ने अपनी ज़िन्दगी के अहम साल एप्पल कंप्यूटर और फिर याहू डॉट कॉम में गुज़ारे, इसके बाद याहू की मार्किट दिन-ब-दिन गिरने लगी तो इस शख्स ने ट्विटर जैसी कंपनी को अप्रोच किया, जिन्होंने साफ़ – दुर फिटे मुंह – कहके बाहर का रास्ता दिखा दिया। फिर ये भाई पहुँचे फेसबुक के माई-बाप मार्क ज़करबर्ग के पास, उस भाई ने भी इन्हें चलता कर दिया। इन भाईसाहब ने अपने जैसे ही एक याहू से निकले शख्स 'जेन कौम' के साथ मिलकर स्टार्टअप शुरू किया। एक मेसेजिंग एप बनाई और वो दुनियाभर में इस कद्र छा गयी कि 2014 में ज़कर भैया को वो कंपनी 16 बिलियन डॉलर्स में खरीदनी पड़ी। इसके साथ ही 3 बिलियन के अपने शेयर भी देने पड़े और ये शर्ते भी माननी पड़ी कि वो कभी उस एप पर ऐड वगैरह नहीं दिखाएँगे। उस एप का नाम है whatsapp

नौकरियों से निकलने का अफ़सोस जताने से बेहतर आप उसे मौका समझकर भुना भी सकते हैं!

आपकी निष्पक्ष राय की प्रतीक्षा में –

सिद्धार्थ अरोड़ा 'सहर'

For Reviews or suggestions

Email us – ravaayana@gmail.com